समर्पण । ....

केशवीजातक-सटीक सोदारण भाषाटीका.

जिसमें

ग्रहलाघवकी रीतिसे ग्रहस्पष्ट करनेकी सारणी और चतुर्विंशद्बलोंकी सारणी तथा क्रांतिसारणी और आयुर्दाय सुगम रीतिसे करनेका प्रकार और विदशा उपदशा करनेकी रीति तथा विंशोत्तरी दशा, अंतर्दशा तथा प्रत्यंतर, योगिनीदशा, अष्टोत्तरीदशा, वर्गमूल निकालनेकी रीति, अष्टकवर्ग, सूर्यकालानलचक्र तथा चन्द्रकालानलचक्र, सर्वतोभद्रचक्र और सूर्यलग्नसे इष्टकाल बनानेकी रीति, दशमसारणी, लग्नसारणी तथा चरसारणी श्रीयुत सेठ खेमराजजीकी प्रार्थनासे श्रीजगदीश मथुरादत्त शंभुदयाल रामनाथ त्रिपाठी इन्होंने " केशवीजातक " का भाषा उदाहरण बनाया सो बहुत शोधके छापागया है ।

मिति श्रावण शुक्ला १५. रविवार
संवत् १९५३, शके १८१८,
ईसवी सन् १८९६, हिजरी सन् १३१३.

पं. जगदीशप्रसाद.

दोहा–श्रीगणपति मन्दाकिनी, शारद दश दिक ईश ।
हरिहर ब्रह्मा शेश गुरु, तिनको नावौं शीश ॥ १ ॥

सोरठा–श्रीराजेन्द्र नरेश, ताके सुंदर राजमें ।
नारनोल शुभ देश, इन्द्रप्रस्थमें परदिशा ॥ १ ॥
पंडित रामविलास, तिनके शिष्य जगदीशने ।
भाषा करि प्रकाश, केशवीजातक ग्रंथकी ॥ २ ॥
मोहिं दासानुजदास, जान आप किरपा करी ।
क्षमा करो द्विज तास, मैं मूरख मतिमंद हूं ॥ ३ ॥

चौपाई–मोरँ नाम है गा जगदीशा । गुरुचरणनमें नावौं शीशा ॥ १
रामविलास गुरुजी मेरा । उनके चरणनका हूं चेरा ॥ २
मथुरामें मेरी मित्राई । जिन या भाषा साथ बनाई ॥ ३
ग्रंथ देख मैं अति कठिनाई । संस्कृतमें निज भाषा गाई ॥४
देख चपलता द्विजसमुदाई । क्षमा करो निजपुत्रको नाई ॥५

श्लोक–शास्त्रकर्ता भवेद्व्यासो लेखको गणनायकः ।
तयोर्विचलिता बुद्धिर्मनुष्याणां तु का कथा ॥ १ ॥

प्रस्तावना।

"ज्योतिषं नयनं स्मृतम्।"

प्रिय पाठकगण। आप सब महाशयोंको विदितही होगा कि, चारों वर्णोंको शिक्षाप्रणाली बतलानेवाला दिव्यपुस्तक वेद है और उसके शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष यह छः अंग हैं और षडंग वेद पढना ब्राह्मणोंसे लेकर वैश्यों पर्यन्त तीनों वर्णोंका धर्म है। उसही हमारे शिरोधार्य वेदका एक अंग ज्योतिष है। उसके दो भाग हैं-एक व्यक्त कहिये प्रत्यक्ष दृष्टफल ग्रहण अस्तोदयादि, दूसरा अव्यक्त कहिये अदृष्टभविष्यफल जातक और वर्षफलादिक। अब यहां अपनेको जातकके विषे विचार कर्त्तव्य है कि, प्राणीके यावज्जन्ममें जो शुभ किंवा अशुभ फल होता है कहिये कौन २ समयमें किसको लाभ किंवा हानि जय किंवा पराजय किससे सुखोत्पत्ति किंवा पीडा और कौन समयमें रोगादिकोंसे मरणप्राय संकट और शरीरसुख, कुटुम्बसुख, भ्रातृसुख, मित्रसुख, पुत्रसुख, कलत्रसुख, पितृमातृसुख इत्यादि बातोंका ज्ञान जिस ग्रंथसे होता है कहिये ज्योतिषीलोग जिस ग्रंथके आधारसे जन्मपत्रिका लिखते हैं उसको जातक ऐसा कहते हैं। संस्कृतमें जातकपर बहुत ग्रंथ हैं परन्तु सबमें प्रसिद्ध और विद्वन्मान्य ऐसा ग्रंथ केशवाचार्यकृत जातकपद्धति जिसको केशवीजातक कहते हैं सो यह ग्रंथ संस्कृत भाषामें है, इसवास्ते उसका उपयोग मनुष्योंको बहुत होता नहीं। इसवास्ते उसका सान्वय भाषाटीका निर्माण किया, कारण इसकी सहायतासे केशवी जातकका यथार्थ ज्ञान होके पत्रिकाका गणित कैसे करना सो खुलासे मालुम होगा। इसमें केशवीजातकके मूल श्लोक लिखके वह सब श्लोकका अन्वय और खडी भाषामें अर्थ लिखा है तथा ग्रह और षड्बल इत्यादि गणित अल्पायाससे करनेमें आवे इसवास्ते सारणीको योजना करके उस सार-

ीका कैसा उपयोग करना यह स्पष्ट रीतिसे लिखके उनके पृथक् पृथक् दाहरण लिखे हैं और जन्मपत्रिकाका गणित कैसे करना यह समझनेके ास्ते उत्तम उदाहरण लिखा है। इसमें वर्गमूल निकालनेकी रीति और चवल तीन प्रकारसे करनेकी रीति लिखी है और ग्रहोपरि तथा भावोपरि ष्टि करनेको तीन प्रकारसे लिखा है और अष्टोत्तरीदशा और विंशोत्तरी-शा और योगिनी यह तीनों दशाओंकी नक्षत्रोंसे उत्पत्ति और उनके पति और वर्षादि दशा अन्तर्दशा कोष्ठक प्रत्यंतरदशा लिखके जन्मपत्रिका लेखनेका क्रम बताया है।

यह ग्रंथ लोकमें उपयुक्त होनेके वास्ते जो परिश्रम किया है सो देखनेसे मालूम होगा। अब आशा है कि गुणग्राहक सज्जन पुरुष इसको अवलोकन कर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे। आशा है कि सज्जन पुरुष मत्सरताको छोडकर मुझसे मनुष्यधर्मानुसार जो भूल हुई है उसको क्षमा करें और मुझको सूचना दें कि जिससे वह भूल पुनरावृत्तिमें दुरुस्त की जायकी।

श्लोक–विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जनपरिश्रमम् ॥
न हि वंध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम् ॥ १ ॥
करोमि केशवीग्रन्थोदाहृतिं लोककाम्यया ॥
बालानां सुखबोधाय न तु पाण्डित्यगर्वितः ॥ २ ॥ इत्यलम् ॥

पं० जगदीशप्रसादः।

श्रीः ।

अथ केशवीजातकस्थ-विषयानुक्रमणिका ।

ाका कैसा उपयोग करना यह स्पष्ट रीतिसे लिखके उनके पृथक् पृथक्
ाहरण लिखे हैं और जन्मपत्रिकाका गणित कैसे करना यह समझनेके
स्ते उत्तम उदाहरण लिखा है। इसमें वर्गमूल निकालनेकी रीति और
वचल तीन प्रकारसे करनेकी रीति लिखी है और ग्रहोपरि तथा भावोपरि
ष्टि करनेको तीन प्रकारसे लिखा है और अष्टोत्तरीदशा और विंशोत्तरी-
शा और योगिनी यह तीनों दशाओंकी नक्षत्रोंसे उत्पत्ति और उनके पति
ौर वर्षादि दशा अन्तर्दशा कोष्ठक प्रत्यंतरदशा लिखके जन्मपत्रिका
लखनेका क्रम बनाया है।

यह ग्रंथ लोकमें उपयुक्त होनेके वास्ते जो परिश्रम किया है सो देखनेसे
ालूम होगा। अब आशा है कि गुणग्राहक सज्जन पुरुष इसको अवलोकन
र मेरे परिश्रमको सफल करेंगे। आशा है कि सज्जन पुरुष मत्सरताको
ोडकर मुझसे मनुष्यधर्मानुसार जो भूल हुई है उसको क्षमा करें और
ुझको सूचना दें कि जिससे यह भूल पुनरावृत्तिमें दुरुस्त की जायगी।

श्लोक–विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जनपरिश्रमम् ॥
न हि वंध्या विजानाति गुर्वी प्रसववेदनाम् ॥ १ ॥
करोमि केशवीग्रन्थोदाहृतिं लोककाम्यया ॥
बालानां सुखबोधाय न तु पाण्डित्यगर्वितः ॥ २ ॥ इत्यलम् ॥

पं० जगदीशप्रसादः।

श्रीः ।

अथ केशवीजातकस्थ-विषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका।

॥ श्रीः ॥

केशवीजातकम् ।

भाषोदाहरणसहितम् ।

स्पष्टाध्याय १.

अथ मङ्गलाचरणम् ।

नत्वा विघ्नपशारदाच्युतशिवब्रह्मार्कमुख्यग्रहान्
कुर्वे जातकपद्धतिं स्फुटतरां ज्योतिर्विदां प्रीतये ॥
यंत्रैः स्पष्टतरोऽत्र जन्मसमयो वेद्योऽत्र खेटाः स्फुटा
यत्पक्षे हि घटन्त उद्गम इहास्तर्क्षे सपङ्कः स च ॥ १ ॥

हेरम्बोम्बाथ वेधोहरिपशुपतयो भास्कराद्या ग्रहा ये
पंचैते लोकपाला अथ दश गदिता दिक्पपा ये महान्तः ॥
मेषाद्या राशयश्चाश्विमुखभमुखवरा याश्च नक्षत्रतारा
योगा विष्कम्भकाद्याः सकलसुखवराः पांतु मामत्र कृत्ये ॥ १ ॥
मृगिरा केशवं नत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥
जगदीशः प्रकुरुते जगदीशानुकम्पया ॥ २ ॥

अन्वयः-अहं केशवाचार्यः जातकपद्धतिं कुर्वे करोमीत्यर्थः । किं कृत्वा विघ्नपशारदाच्युतशिवब्रह्मार्कमुख्यग्रहान्नत्वा। किंविशिष्टां जातकपद्धतिं, स्फुटतराम्, अतिशयेन स्फुटेति स्फुटतरा तां स्फुटतराम् । किमर्थम् ? ज्योतिर्विदां प्रीतये ज्योतिषं विदन्ति जानन्ति ये ते ज्योतिर्विदस्तेषां प्रीतये । अत्र ज्योतिःशब्देन त्रिस्कन्धो ज्ञेयः, गणितसंहिताजातकरूपमित्यर्थः। होराविदामित्यर्थे ये ज्योतिर्विदस्ते एतद्धोराशास्त्रविदो भवंत्येवेति शम् । स्रग्धरावृत्तम् ॥ १ ॥

भाषा-गणपति, सरस्वती, विष्णु, शिव, ब्रह्मा और सूर्यादि नवग्रह इनको नमस्कार करके ज्योतिर्विद्के संतोषार्थ यह स्पष्ट जातकपद्धति नामक ग्रंथ करते हैं। इसमें जन्मकालघटी, शंकु, चक्र, फलक इत्यादि यंत्रोंसे सूक्ष्म रीतिसे जानना और स्पष्टग्रह जिस पक्षके प्रत्यक्ष होय उस पक्षके ग्रहलाघवरीत्या लेना । जन्मकालीन लग्न स्वदेशीय उदयसे बनाना अनन्तर जो लग्न आवे उसमें ६ राशि जोड देना तो सप्तमभाव होता है

उदाहरण–संवत् १९४३ शालिवाहनशक १८०८ इस वर्षमें वैशाख कृष्ण ७ रविवारको ४० । १५ उत्तराषाढा नक्षत्र ५३ । ३३ साध्य नाम योग ५२ । ४८ इस दिन सूर्योदयके अनंतर ३२ घटी १ पलपर पंडितजी श्रीबालीरामजीके पौत्र तत्पुत्र पंडितजी श्री चि० गंगाविष्णुजीके पुत्र उत्पन्न भया उस वक्त दिनमान ३२।४२ रात्रिमान २७।१८ अक्षभा ७ । १० अयनांश २२। ४४।३ चरखण्ड ७०।५६ ।२३ चर८१ऋण।

तात्कालिक मध्यमग्रहसाधनके वास्ते अहर्गणादिसाधन ।

" द्व्यब्धीन्द्रो १४४२ नितशक ईशहृत्फलं स्या-
चक्राख्यं रवि १२ हतशेषकं तु युक्तम् ॥
चैत्राद्यैः पृथगमुतः सदग्नचक्रा-
दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ "

भाषा–१४४२ वर्त्तमानशकमें कम करना जो शेष रहे उसको ११ से भाग देना जो लब्धि आवे वह चक्र जानना और शेष जो रहा उसको १२ से गुण देना उसमें चैत्रादि मास इष्टमासतक युक्त करना वह मध्यम मासगण भया उसको दो स्थानमें रखना एकमें चक्र दूना और दश १० मिलाकर ३३ का भाग देना जो लब्धि आवे सो अधिमास जानना। उसको दूसरेमें युक्त करना तो मासगण होता है ।

" खत्रिघ्नं गततिथियुङ्निरग्नचक्रा-
गांशाढ्यं पृथगमुतोऽङ्घिपद्मलब्धैः ॥
ऊनाहर्विर्युतमहर्गणो भवेद्वे
वारः स्याच्छरहृतचक्रयुग्गणोऽब्जात् ॥ "

भाषा–जो मासगण आवे उसको ३० से गुण देना और शुद्ध प्रतिपदादिमें [illegible]तिथिक जोड़के चक्रका जो षष्ठांश सो युक्त करके दो स्थानमें रखना। ६४ से भाग देके जो लब्धि आवे सो ऊनाह जानना । उसको दूसरेमें [illegible] घटा जो अंक आवे सो अहर्गण जानना जो अहर्गण आया

[illegible] दृष्टि कभी न हल्के । कल्मषुनो हीनो वा नीको वापि निरेक्षतः ॥

सो शुद्ध किंवा अशुद्ध जाननेके वास्ते चक्रको ५ से गुणके अहर्गणमें युक्त करना और ७ से भाग देना जो शेष रहे सो इष्ट वार जानना ।

उदाहरण—शके १८०८ में १४४२ कम किया तो शेष ३६६ इसको ११से भाग दिया तो लब्धि३३यह चक्र शेष३रहा, इसको १२ से गुणा तो ३६ हुआ इसमें गतमास०शून्य युक्त किया तो ३६भया । यह मध्यम मासगण भया,इसको दो स्थानोंमें स्थापित किया एक जगह चक्र ३३इसको दूना किया तो६६भया इसमें १० युक्त किया तो७६ भया। इसको दूसरे अंकमें युक्त किया तो ११२इसको ३३से भागदिया तो लब्धि ३ अधिमास आया सो इसको दूसरेमें युक्त किया तो३९हुआ इसको३०से गुणा किया११७०हुआ इसमें गततिथि२१युक्त किया तो११९१ हुआ । इसमें चक्र ३३का पष्ठांश ५ युक्त किया तो हुआ११९६ इसको दो जगह रखके एकमें ६४ का भाग दिया लब्धि १८ ऊनाह है इसको दूसरी जगह११९६ में हीन किया तो ११७८यह अहर्गण भया । जन्मका वार जाननेके लिये इसमें चक्र३३ को५से गुणा तो १६५भया । सो अहर्गणमें युक्त किया तो१३४३भया.इसको ७ से भाग दिया तो शेष६रहा. इसलिये रविवार आया तब यह११७८ अहर्गण शुद्ध भया.इष्टको वार अहर्गणसे न मिले तो१कम करना अथवा युक्त करना.

वारक्रमचक्रम् ।							
०	१	२	३	४	५	६	शेष
चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.	सू.	वार.

विशेष—जिस वर्षमें अधिक मास आता है इस वर्षमें अधिमासके पूर्व वा परमें अहर्गण बनाना हो तो जो महीना अधिक हो उस महीनेके पूर्व अहर्गण करना हो तो पूर्व वर्षकी अपेक्षा अधिमास अधिक आवे तो नहीं लेना अर्थात् अधिमासमें एक घटा देना जो अधिमासके आगे अहर्गण साधन करना हो तो पूर्व वर्षकी अपेक्षा अधिक मास आवे तो नहीं लेना अर्थात् एक युक्त करके अधिमासमें अहर्गण साधन करना ।

मध्यमग्रहसारणीप्रवेश.

अहर्गणको ६० से भाग देना तो लब्धि और शेष ऐसे२अंक आते हैं सो आगे मध्यम ग्रहसारणीमें सूर्यादि ग्रहोंका १से६७ तक शेषलब्धिकोष्ठक है, उसके नीचे वह कोष्ठकके राश्यादिक अंक लिखे हैं वह शेषकोष्ठकही लब्धिकोष्ठक है परंतु उसका फल लेनेकी रीति जुदी है । वह प्रकार ऐसा है-जो लब्धिका अंक हो सो शेषकोष्ठकमें देखना। अनंतर वह कोष्ठकके नीचे राशिसहित जो अंक है तिसमें राशिका त्याग करके अंक लेना । अनंतर पहिला अंक जो हो उसको६से भाग देके जो शेष रहे तिसको दूना करना तो लब्धिकोष्ठकका राशि अंक होता है । अनंतर उसके नीचेका अंक अंशस्थानमें आता है इसवास्ते ३०से अधिक हो तो ३०से भाग देके जो अंक आवे उसको राशिस्थानमें जोड देना तो लब्धिकोष्ठक फल तैयार होता है ।

सारणीका अभीष्ट शेषकोष्ठकके नीचेका अंक हो सो और अभीष्टलब्धिकोष्ठकका जो अंक हो सो दोनोंका योग करना । अनंतर उस अंकको चक्रनिघ्नयुतेनक्षेपक तैयारसारणीमें ऊपरके बाजूके नीचे अंक है सो अभीष्टचक्रके नीचेके अंकमें युक्त करना तो प्रातःकालका मध्यम ग्रह होता है इष्टकालका मध्य करना हो तो सूर्योदयके अनंतर जो इष्ट घटी और पल हो उसका कोष्ठक ग्रहसारणीके पीछे राश्यादि लिखा है उसमेंसे अपना जो इष्ट घटी,पल हो उसके नीचेके अंकको प्रातःकालका जो ग्रह उसमें युक्त करना तो इष्टकालका मध्यम ग्रह होता है ।

मध्यमराहु बनानेकी रीति कुछ भिन्न है. सो ऐसी है कि शेषलब्धिकोष्ठकके योगको१२में कम करके जो बचे उसको चक्रनिघ्नयुतेनक्षेपक मिलाना तो प्रातःकालका राहु होता है. इष्टकालका राहु बनाना हो तो उसमें इष्टघटीकोष्ठकके और पलकोष्ठकके नीचेके अंकको लब्धिशेषकोष्ठकके योगमें युक्त करके जो अंक आवे उसको १२ में कम करना अनंतर चक्रनिघ्नयुतेनक्षेपक मिलाना तो इष्ट कालका राहु होता है । इस प्रकार [illegible] ग्रह बनाना ।

चन्द्रशेषलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९
०	१३	२६	९	२२	५	१९	२	१५	२८	११	२४	८	२१	४	१७	०	१३	२७	१०	२३	६	१९
०	१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४०	५६	६	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५२
०	२४	९	४४	१९	५४	२९	४	३८	१३	४८	२३	५८	३३	८	४३	१७	५२	२७	२	३७	१२	४७
०	५१	४३	३५	२७	१९	११	३	५५	४७	३९	३१	२३	१५	७	५९	५०	४२	३४	२६	१८	१०	२
०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	१०	११	११	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७
३	१६	२९	१२	२५	८	२२	५	१८	१	१४	२७	११	२४	७	२०	३	१७	०	१३	२६	९	२२
३	१३	२४	३४	४५	५६	६	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३४	४५	५६
२१	५६	३१	६	४१	१६	५१	२५	०	३५	१०	४५	२०	५५	३०	४	३९	१४	४९	२४	५९	३४	८
५४	४६	३८	३०	२२	१४	६	५८	४९	४१	३३	२५	१७	९	१	५३	४५	३७	२९	२१	१३	५	५७
२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०

६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४८	०
४३	१८	५३	२८	३	३८	१३	४७	२२	५७	३२	७	४२	१७	५१	२६	१	३६	११	४६	२१	५५	०
४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४७	३९	३१	२३	१५	७	५९	०
५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	०

चन्द्रघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४
१३	२६	३९	५२	५	१९	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	४	१७	३०	४३	५७	१०	२३	३६
१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५५	६	१६	२७	३७	४८	५८	९	२०	३०	४१

२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९

०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०	०	०
२६	३९	५२	६	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०	०	०	०
२४	४५	५५	६	१६	२७	१७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५१	२	१२	२२	३५	०	०	०

चन्द्रपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४
१३	२६	३९	५२	५	१९	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	४	१७	३०	४३	५६	१०	२३	३६
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९
४९	२	१६	२९	४२	५५	८	२२	३५	४८	१	१४	२८	४१	५४	७	२०	३३	४७	०	१३
४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	०	०	०
२६	३९	५२	६	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०	०	०	०

चन्द्रोच्चचक्रनिघ्नध्रुवोनक्षेपक.

१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
०	३	६	९	०	३	६	९	०	३	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	१	४
२५	२२	१९	७	१४	११	८	६	३	०	२७	२५	२२	१९	१६	१४	११	८	५	३	०	२७	[illegible]
१८	३३	४८	३	१४	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रोच्चशेपलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६
०	४०	२१	२	४३	२४	५	४६	२६	७	४८	२९	१०	५१	३२	१२	५३	३४	१५	५६	३७	१८	५८
०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१
०	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२६	५१	१७	४२	८	३४	०	२६	५१	१७	४२	८	३४	०	२६
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५

चन्द्रोपलब्धिकोष्ठक ।

४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	०	०	०

राहुचक्रनिम्नध्रुवोनशेषक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३	७	०	७	१०	३	८	१	६	११	४	८	१	६	११	४	९	२	७	०	५	१०
०	२८	२५	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	२९	२६	२४	२१	१८	१५	१२	९	७	४	१
५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदोःफलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
०	३	६	९	१२	१५	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३	६	९
०	१०	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४६	[illegible]
०	४८	३६	२५	१३	२	५०	३८	२७	१५	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	०
२६	२९	३२	३५	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०	१३	१७	२०	२३	२६	२९	३३	०
१७	२७	३८	४९	०	११	२१	३२	४३	५४	५	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५२	४	०
७	५५	४४	३३	२१	९	५७	४	३४	२२	११	०	४८	३६	२५	१३	२	५०	३८	२७	१५	४	०
२२	४७	१२	३८	३	२८	५४	१९	४४	१०	३५	०	२५	५१	१६	४१	६	३२	५७	२२	४७	१३	०

बुधकेन्द्रशीघ्रफलब्धिकोष्ठक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
१४	१७	२०	२३	२६	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२
४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	०	०
२६	२९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२७	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२५	२८	०	०
०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४	३०	३६	४३	४९	५६	२	८	०	०
५४	१८	४२	६	३०	५५	१९	४३	७	३१	५५	१९	४३	८	३२	५६	२०	४४	८	३२	५७	०	०
२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	०	०
३९	४६	५४	१	८	१५	२२	२९	२६	४३	५१	५८	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	०	०

बुधकेन्द्रघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	२
६	१२	१९	२५	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१७	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	०	३	६
२२	२९	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२७	३३	३९	४६	५१	५८	५	११	१७	२४

बुधकेन्द्रघटीकोष्ठक ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	३९	२

बुधकेन्द्रघटीकोष्ठक.

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
२	८	११	१४	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४
४१	**४२**	**४३**	**४४**	**४५**	**४६**	**४७**	**४८**	**४९**	**५०**	**५१**	**५२**	**५३**	**५४**	**५५**	**५६**	**५७**	**५८**	**५९**	**६०**
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३	६

गुरुचक्रनिम्नध्रुवोनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१	०	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	३	२	१	०	११	१०	९	८	८	७
१६	१९	२३	२७	१	४	८	१२	१५	११	२३	२६	०	४	८	११	१५	१९	२२	२६	०	३
१६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	५८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदोपलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९
०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४२	४१
०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८
०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४
०	१७	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२३	**२४**	**२५**	**२६**	**२७**	**२८**	**२९**	**३०**	**३१**	**३२**	**३३**	**३४**	**३५**	**३६**	**३७**	**३८**	**३९**	**४०**	**४१**	**४२**	**४३**	**४४**	**४५**
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३
५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४
४०	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२४	२३	२२	२१
१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५
८	४३	१७	५१	२६	०	३४	८	४३	१७	५१	२५	०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४	८	४३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८	०	०

गुरुफलकोष्ठक.

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५

शुक्रकेन्द्रचक्रानिम्नध्रुवोनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
२	०	११	९	८	६	५	४	२	१	११	१०	८	७	५	४	२	१	११	१०	८	७
९	२५	११	२७	१३	२९	१५	१	१७	३	१९	५	२९	७	२३	८	२४	१०	२६	१२	२८	१०
२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	३	१	५९	५७	५५	५३	५१	४९	४७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रकेन्द्रदोफलब्धिकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१४
३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०	३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०
५९	५९	५९	५८	१८	५८	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५५	५५	५५	५४	५४	५४	५३	५३	५३	५२	५२
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४२	२२	२	४२	२२
६	१३	२०	२१	३३	४०	४५	५३	०	६	१३	१९	२६	३३	३९	४६	५३	५९	६	१३	१९	२६	३३
३८																						

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२०	२८
४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२०	५७	३४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१
५२	५१	५१	५१	५०	५०	५०	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४७	४७	४७	४६	४६	४६	४५	४५	४५	४४
२	४२	२२	२	४३	२३	३	४३	२३	३	४३	२३	३३	४४	२४	४	४४	२४	४	४४	२४	४	४५
३९	४६	५२	५९	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२५	३२	३८	४६	५२	५८	५

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	०
०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
२८	२९	०	०	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	१०	१०	११	०	०
५८	३५	१२	४९	२६	३	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	०	०
४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२	४२	४१	४१	४१	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३७	०	०
२९	५	४५	२५	५	४५	२५	५	४६	२६	६	४६	२६	६	४६	२६	६	४०	२०	०	४०	०	०
११	१८	२५	३२	३८	४५	५१	५८	५	११	१८	२५	३१	३८	४५	५१	५८	४	११	१८	३४	०	०

शनिचक्रनिग्रहध्रुवोनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३५	४०	४१
३	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१
१	१५	२९	१४	२८	११	२७	११	२५	१०	२४	८	२२	७	२१	५	२०	४	१८	३	१७	१
२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिशेषलब्धिकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६
०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	४	५०	१३	३६	५९	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०
४	९	१४	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५०	५९	४	९	१४	१८	२२	२८	३२	३७	४१	४६
३७																					१	

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१८
१३	३६	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१
५१	५६	०	५	९	१४	१८	२३	२८	३१	३७	४१	४६	५१	५६	०	५	९	१४	१८	२३	२८	३२

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०	०
३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	०	०
१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	०	०
४	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	०	०
३७	४१	४६	५१	५५	०	५	९	१४	१८	२३	२८	३२	३७	४१	४६	५१	५५	०	५	९	०	०

शनिघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०

शनिघटीकोष्टक.

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०

शनिपलकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	१
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२

मध्य रवि साधनका उदारहण.

यहां अहर्गण ११७८ आया है. इसको ६० से भाग देनेसे लब्धि १९ शेष ३८ रहा, अब शेष कोष्ठकमें अठतीसके नीचेके अंक१।७।२७।१०। ३० को लब्धि अंक १९ के नीचे राश्यंक छोडके यह १८।४३।३५। १५।२५ अंक है. इसके ऊपरका अंक १८ में ६ से भाग दिया तो शेष० शून्य रहा दूना किया तो० शून्य रहा यह राश्यंक भया. अब भागस्थानेंमें ४३ आया, ये ३० से अधिक हैं इसवास्ते इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धि १ यह राशिमें युक्त किया तो १।१३।३५।१५।२५ यह अंक भया, इसमें शेष ३८ कोष्ठकका फल युक्त किया तो २।२१।२।२५।५५ यह अंक भया इसको चक्रसारणीमें ३३ के नीचेका अंक९।१९।३७।५७ युक्त किया तो ०।१०।४०।२२ यह प्रातःकालका मध्यम सूर्य,

बुध, शुक्र भया. अब इसको इष्टकालका मध्यम करना है. इसवास्ते इष्टघटी ३२ है इसके नीचे घटी सारणीमेंका फल ०।०।३१।३३ और पल ०१ है, इसका फल पलसारणीका ०।०।०।०।१ यह है दोनों फल प्रातःकालके मध्यम ग्रहमें युक्त किया तो ०।११।११।५६ यह सूर्य इष्टकालका मध्यम ग्रह भया। इसी रीतिसे प्रातःकालका इष्टकालका मध्यम सब ग्रह करना.

प्रातःकालिकसूर्यादिमध्यमग्रहाः।

सू.	च.	च. उ.	रा.	मं.	बु. के.	बृ.	शुक्र.	श.
०	०	९	४	५	१४	५	७	२
१०	२६	१७	२१	२१	५	१२	१३	१६
४०	२६	५८	४१	५०	२३	१५	१९	३८
२२	२९	१०	५०	३८	५१	११	२९	३३

तात्कालिकमध्यमग्रहाः।

सू.	च.	च.उ.	रा.	मं.	बु. के.	बृ.	शुक्र.	श.
०	९	९	४	५	७	६	७	२
११	३	२८	२१	२२	७	१२	१३	१६
११	२८	१	४०	७	३	१७	४२	३९
५६	२१	४४	८	२४	१९	५१	१३	३७
९८	७९०	६६	३	३१	१८६	५	३७	२
१०८	३५	४१	११	२६	२४	०	०	०

श्लोकः—जगदीशेन रचिते केशवग्रन्थटिप्पणे।
मध्याधिकारः पूर्णोऽयं तद्भाषार्थप्रकाशकः॥

स्पष्टाधिकारः।

"मन्दोच्चं ग्रहवर्जितं निगदितं केन्द्रं तदाख्यं बुधैः।
केन्द्रे स्यात्स्वमृणं फलं क्रियतुलाद्ये" इति॥

"दोस्त्रिभोनं त्रिभोर्द्ध विशेष्यं रसैश्चक्रतोऽङ्काधिकः स्याद्भुजोनं त्रिभं कोटिरेकैकं त्रित्रिभैः स्यात्पदं सूर्यमन्दोच्चमष्टाद्र्यंशा भवेत्॥"

टीका—मन्दोच्चमें ग्रह कम करनेसे मन्दकेन्द्र होता है वह केन्द्र मेष राशिमें ६ राशितक होय तो फल धन और तुलादि ६ राशि होय तो फल ऋण जानना. केन्द्र अथवा ग्रह ३ राशिसे कम होय तो वही भुज जानना और तीन ३ से अधिक होय तो ६ राशिमें कम करना तो भुज होय. ६ से अधिक होय तो ६ राशि घटाय दे तो भुज होय. ९ से अधिक होय तो १२ मे कम करना तो भुज होय इस प्रकारसे केन्द्रका वा ग्रहका भुज करना.

स्पष्टसारणीप्रवेश.

२ राशि १८ अंश, ० कला, ० विकला यह सूर्यका मन्दोच्च है. इसमें मध्यम सूर्य कम करना तो सूर्यका मन्द केन्द्र होता है. उस केन्द्रका भुज करके अंश करना अनंतर जो अंश आवे उस अंश कोष्ठकके नीचे स्पष्ट ग्रहसारणीमें लिखा है सो देखके भागादि फल लेना. अनंतर भुजभागके नीचे जो कला विकला होय उसको इष्टभुजांशकोष्ठकके नीचे गुण लिखा है. उससे गुणके वही कोष्ठकके नीचे जो हर लिखा है, उससे भाग देके जो फल आवे सो भुजभागफलके विकलामें जोड देना तो सूर्यका मंद फल होता है. यह फल धन होय तो मध्यम सूर्यमें युक्त करना. और ऋण होय तो मध्यम सूर्यमें कम करना तो सूर्य मंदस्पष्ट होता है.

अयनांशाः ।

श्लोकः—" वेदाब्ध्यब्ध्यूनः खरसहृतः शकोऽयनांशाः ॥ "

टीका—इष्ट शालिवाहन शकमेंसे ४४४ कम करना जो बाकी रहे उसको ६० का भाग देना जो भागाकार लब्धि आवे वह अयनांश होता है. उदाहरण—शके १८०८ मेंसे ४४४ यह कम किया तो १३६४ बचा सो कला जानना. इसको ६० से भाग दिया तो लब्धि अंश कला ४४ विकला ०० अब महीना प्रति ५ विकला युक्त करे तो अयनांश आया. २२।४४।०३।

चरखण्ड ।

" मेषादिगे सायनभागसूर्ये दिनार्द्धजाभा पलभा भवेत्सा ॥
हता स्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्चराणि गुणोद्धृतान्त्या ॥१॥"

टीका—मेषका सायनसूर्य शून्यराशि० अंश० कला० विकला इतना सूर्य जिस दिन होय उस दिन मध्याह्नमें समभूमिपर बारह अंगुलका शंकु रखके जो छाया आवे सो पलभा जानना, आगे जो पलभा आवे उसको ३ जगह रखके क्रमसे १०।८।१० अंकसे गुण दे जो गुणाकर आवे उसमें अन्तिम (तीसरा) अंकमें तीनसे भाग देना जो आवे सो क्रमसे पहला दूसरा तीसरा चरखण्ड होता है.

उदाहरण—पलभा ७ अंगुल इसको १० से गुणा तो ७० भया यह ही पहला चरखण्ड हुआ, पलभा ७ अंगुल इसको ८ से गुणा तो ५६ भया यह दूसरा चरखण्ड भया पलभा ७ अंगुल इसको १० से गुणा तो ७० भया ३ से भाग देनेसे २३ यह तीसरा चरखण्ड भया इस प्रकारसे क्रम करके चरखण्ड ७०।५६।२३ यह हुआ.

सूर्यमें चरसंस्कार।

मंदस्पष्टसूर्यमें अयनांश युक्त करनेसे सायनसूर्य होता है. उसका भुज करना अनन्तर भुजका जो ०।१।२इसमेंसे राश्यंक होय उसके समान चरखण्डका योग करना अनन्तर भुजराशिके नीचे अंशादिक जो होय उसको चरखण्डसे गुणके जो गुणाकर आवे उसके पदचादिकमें ६० का भाग दे अंशमें ३० का भाग देना जो लब्धि आवे उसको पहले किया हुआ जो चरखण्ड योग है तिसमें युक्त करना तो स्पष्टचर होता है. वह सायनसूर्य मेषादि ६ राशिमें होय तो फल ऋण और तुलादि ६ राशिमें होय तो फल धन जानना सायंकालका ग्रह करना होय तो चर विपरीत देना अर्थात् सायनसूर्यमें मेषादिषट्कमें होय तो धन तुलादि षट्कमें होय तो ऋण जानना वह आया जो चर उसको मन्दस्पष्टसूर्यके विकलामें धन होय तो युक्त करना, ऋण हो तो कम करना तो स्पष्ट सूर्य होता है।

सूर्यकी स्पष्टगति ।

केन्द्रभुजभागकोष्ठकके नीचे गतिफल लिखा है. वह केन्द्र कर्कादि ६ राशितक होय तो धन इसवास्ते रविकी जो मध्यमगति उसमें युक्त करना और केन्द्र मकरादिक ६ राशितक हो तो ऋण जानना इस वास्ते मध्यम-गतिमें कम करना तो सूर्यकी स्पष्टगति होती है.

दिनमान-रात्रिमान साधन ।

जब सायनग्रह मेषादि ६ राशिमें होय तब उत्तर गोलमें जानना और सायनग्रह तुलादि ६ राशिमें होय तब दक्षिण गोलमें जानना. जो चर आया होय उसको पल जानके उत्तर गोलमें होय तो १५ घडीमें युक्त करना और दक्षिण गोलमें कम करना तो दिनार्द्ध होता है. उस दिनार्द्धको ३० में कम करना तो रात्र्यर्द्ध होता है अनंतर दिनार्द्ध और रात्र्यर्द्धको दूना करना तो दिनमान और रात्रिमान होता है.

सूर्यस्पष्टसारणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	गु. भा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०	२२	२५	२७	२९	३१	३४	३६	३८	फ०
०	२०	३९	५९	१९	३६	५५	१२	२९	४६	३	१७	३२	४६	५९	१२	२४	३५	०
७	७	७	७	७	३३	३३	३४	३४	३४	९	९	११	११	११	११	१२	१३	गु०
३	३	३	३	३	१०	१०	१५	१५	१५	४	४	५	५	५	५	५	६	ह०
३	३	३	३	२	२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	ग.
१५	१५	१४	१३	१३	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	७	६	५	४	४	फ.
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	गु. भा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	
३६	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	१	३	५	७	९	११	१३	१५	फ.
१५	२०	३	११	१०	२३	२८	३२	३५	३६	३७	३६	३५	३२	२८	२२	१५	७	
१३	३२	३३	३१	३१	३१	३१	३३	४१	२	२	२	२	२	२	१५	२८	११	गु.
६	१५	१५	१०	१०	१५	१५	२०	१	१	१	१	१	१	१	१०	१५	९	ह.
३	३	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	ग.
३	३	३	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४८	४७	४६	४५	फ.

सूर्यस्पष्टसारणी।

३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	मु.भा.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	३०	३२	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४२	४४	
५८	४७	३५	२१	६	५२	३१	१०	५१	२८	३	२७	९	३९	८	३४	५९	२२	
११	९	९	७	७	५	५	५	८	८	८	३	३	३	७	७	७	७	गु.
६	५	५	४	४	३	३	३	५	५	५	२	२	२	५	५	५	५	ह.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	ग.
४३	४२	४१	३८	३७	३७	३५	३४	३३	३१	२८	२८	२६	२५	२१	२२	२०	१८	फ.
५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	मु.भा.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	
४५	४७	४८	४९	५०	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	२	३	फ०
[illegible]																		
[illegible]																		गु.
[illegible]																	४	फ.
[illegible]																	९	मु.भा.
																	२	२
४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१५	१०	१०	१०	१० फ.
१९	०	४०	१६	५०	२२	५२	२०	४५	८	२८	४६	१	१५	२०	३४	४०	४२	४५
२	२	३	७	८	१	१	५	५	१	३	१	१	१	१	१	१	१	०गु.
३	३	५	५	१५	२	२	१२	१२	३	१०	४	४	६	६	१०	१०	१०	१६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०ग.
४२	४०	३८	३५	३३	३१	२८	२६	२४	२२	१९	१७	१५	१२	१०	७	५	२	०फ०

स्पष्ट सूर्य साधनका उदाहरण।

यह सूर्यका मन्दोच्च २।१८।०।० इसमें मध्यम सूर्य ००।११।११। ५६ कम किया तो २।६।४८।४यह शेष रहा इसका नाम केन्द्र है। अब इसका भुज २।६।४८।४ तो यही रहा, अंश किया तो ६६।४८।४ यह भया इस वास्ते यहां सूर्यस्पष्टसारिणी कोष्ठक ६६ के नीचेका अंक १। ५९।२३ और इसका गुण ११ से ४८ को गुणा तो ५२८ फल ४ को गुणा तो ४४ इसमें ६० का भाग दिया तो० लब्धि हुई। अब गुणके नीचे

हर १२ से ५२८में भाग लिया तो ४४ लब्ध हुआ इसकी विकलामें युक किया तो २।००।७ यह सूर्यका मन्दफल भया । अब केन्द्र मेषादि६ राशिमें है इसवास्ते फल धन यह मध्यम सूर्यमें युक किया तो ०।४३।१२ यह मन्दस्पष्ट सूर्य भया इसमें अयनांश २२।४४।३ युक्त किया तो यह १।५।५६।०६ सायन सूर्य भया इसका भुज १।५।५६।६ यही रहा यह भुज राश्यंक १ है इसवास्ते चरखण्ड ७०। भाग्यखण्ड ५६ भुजभाग ५। ५६।६ इससे पूर्वरीतिकरिकै आया फल ११ यह युक्त करके ८१ यह चर भया ।अब सायनसूर्य मेषादिक है इसवास्ते मन्दस्पष्ट सूर्यके विकलामें कम किया तो यह ००।१३।१०।४२ स्पष्टसूर्य भया। यहां केन्द्र मकरादिक है, इसवास्ते भुजभाव कोष्ठक ६६ के नीचे गतिफल ०।५४ है सो ५९। ०८ मध्यगतिमें कम किया तो यह ५८।१४ स्पष्ट गति भई सायन सूर्य मेषादिक है इसवास्ते उत्तर गोल उपर आया जो पलात्मक चर ८१ यह १५ घटीसे युक्त किया तो १६।२१ यह दिनार्द्ध भया इसकी ३० घटीमें कम किया तो १३।३९ यह रात्रिरल भया. दिनमान ३२ । ४२ रात्रिमान २७ । १८ दोनोंका योग ६०।०० अहोरात्र भया ।

त्रिफल चन्द्र संस्कार ।

प्रथमफल अपने देशसे दक्षिणोत्तर रेखा कितने योजन है, यह देखके जो योजन होय उसको ६ से भाग देकरके जो भागाकार आवे वह कला होगी, सो अपना देश दक्षिणोत्तररेखाके पश्चिम होय तो फल धन और पूर्वमें होय तो फल ऋण जानना । दक्षिणोत्तररेखाके ऊपरके देश लंका, देवकन्या, कांची, सितपर्वत, वत्स, गुल्म, परली, उज्जैन, गर्गराट, कुरुक्षेत्र, मेरु है । द्वितीय फल पहिले जो चर किया है उसको २ से गुणके ९ से भाग देना सो भागाकार आवे सो कलादि जानना और चर जैसा धन ऋण होय वैसा वह फल धन ऋण जानना । तृतीय फल सूर्यका जो मंदफल आया है उसको २७ से भाग देना जो कला आवे सो अंशादि

जानना. सूर्यफल धन ऋण देखके जो फल आवे सो धन ऋण जानना. अब तीनों फलोंका एकीकरण जो धन किंवा ऋण आवेगा वह मध्यम चन्द्रमें धन होय तो युक्त करना, ऋण होय तो कम करना तो त्रिफलसंस्कृत चन्द्र होता है.

उदाहरण—इस उदाहरणमें मध्यरेखाका अन्तर ५ योजन है इसको ६ से भाग दिया तो० कला ५० विकला यह प्रथम फल धन कारण अंतर पश्चिम है । चर ८१ इसको २ से गुणा तो १६२ भया इसको ९ से भाग दिया तो १८।०० यह कलादि द्वितीय फलभाग, चरफल ऋण है इसवास्ते ऋण सूर्यका मन्दफल २ । ०० । ७ इसको ३७ से भाग, दिया तो०।४।२६ यह अंशादि तृतीय फल धन है इसवास्ते धन यह तीनों फलोंका एकीकरण ००।१२।४४ अंशादि ऋण यह मध्यम चन्द्र ९।३। २८।२१ इसमें कम किया तो ९।३।१५ ।३८ यह त्रिफलसंस्कृत चन्द्र भया अथवा देशांतरकला और चरफल और सूर्य मन्द फल इन तीनों फलोंको अलग अलग ऋण धन समझकर मध्यचंद्रमें ऋण धन करना तो पूर्व तुल्य चन्द्र त्रिकर्म संस्कृत होता है ।

स्पष्टचन्द्र ।

चंद्रोच्चमें त्रिफल संस्कृत चन्द्र कम करना तो चन्द्रका मन्दकेन्द्र होता है। अनंतर उस केन्द्रका भुज करना, भुजका अंश करना, अंश करके जो अंशांक आवे सो अंश कोष्ठकके आगे स्पष्ट सारणीमें देखना और उसके नीचेका भागादिक फल लेना अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला होय उसको इष्ट भुजांशकोष्ठकके नीचे जो गुण लिखा है उससे गुणकर उसी कोष्ठकके नीचे जो हर लिखा है उससे भाग देनेसे भागाकार आवेगा। सो भुज भागफलके विकलामें युक्त करना तो चन्द्र मन्द होता है यह फल धन होय तो त्रिफल चन्द्रमें युक्त करना और ऋण होय तो त्रिफल चन्द्रमें कम करना तो स्पष्टचन्द्र होता है.

चन्द्रस्पष्टसारणी.

६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	भु.भा.
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	
४१	४३	४५	४६	४८	४९	५१	५२	५३	५५	५५	५७	५७	५८	५९	०	०	०	१	१	१	१	०	फ०
२४	१९	१०	४३	२०	५०	५५	३६	५०	१	२	१	४९	४२	२४	०	३०	५५	१५	२९	३७	४०	०	
११	७	५	८	३	७	४	५	७	१	१	९	४	७	३	१	५	१	१	२	२१	०	०	गु.
६	४	३	५	२	५	३	४	६	१	१	१०	५	१०	५	२	१२	३	४	१५	१	०	०	ह.
२४	२३	२२	२१	२०	१९	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	९	८	७	६	५	३	२	१	१	०	ग.
३३	२०	१७	११	६	१	१५	४४	४	३२	२५	१५	५	५२	४	२८	२५	१	४६	३१	१७	०	०	फ.
६३	६३	६३	६६	६६	६७	६७	६७	६८	६९	७०	७०	७०	७२	७३	७३	७४	७५	७५	७६	७७	०	०	गु.

स्पष्टचन्द्र साधनेका उदाहरण ।

चन्द्रोच९।२८।१।४४ इसमें त्रिफलचंद्र९।३।१५।३८कम करके बाकी ०।२४।४६।०६यह केन्द्र इसका भुजभाग किया तो २४।५६।०६इस वास्ते यहां सारणीकोष्ठक२४इसके नीचे अंशादिफल २।२।५०इसको गुण हरफल २१९ विकला युक्त किया तो २।६।२९यह चंद्रफल भया, यह केन्द्र मेषका है इसवास्ते फल धन भया त्रिफलचन्द्र ९।३।१५ ।३८ में युक्त किया तो ९।५।२२।७ यह स्पष्टचंद्र भया अब यहां केन्द्रभुजभाग कोष्ठक २४ का गतिफलकलादि ५९।१६ है इसमें गतिफलके नीचेका गुण ३१ इससे भुजभागके नीचेकी कला ४६ । ०६ विकलाको गुणके यह १४२६।१८६ भया इसको६० से भाग दिया तो फल २४ यह विकलामें कम किया बाकी ५८ । ५२ यह केन्द्र मेषका है इसवास्ते मध्यमगति ७९०।३५ में कम किया तो ७३१।४३ यह स्पष्ट चन्द्रगति भई ।

मंगल बुध गुरु शुक्र शनि स्पष्टसारिणी प्रवेश ।

मध्यमसूर्यमें मध्यम ग्रह भौम, गुरु शनि कम करना तो भौम गुरु शनि इसका प्रथम शीघ्रकेन्द्र होता है मध्य बुध और शुक्र इन दोनोंका शीघ्रोच पूर्वमें मध्यम ग्रहके साथही बनाना लिखा है उसी शीघ्रोचमें घटा-नेसे शीघ्रकेन्द्र होता है । अब अभीष्ट ग्रहका केन्द्र ६ राशिसे अधिक होय तो १२ में कम करना, अनंतर ६ से अल्प जो केन्द्र उसका करणा,

अंश आवे सो आगे लिखा शीघ्र फलग्रहसारिणीका अंशकोष्ठक तैयार होता है. अनंतर अभीष्टकोष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेना, अनंतर अंश फलके नीचे ६० कला विकलाकोष्ठक लिखा है उसमेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका कलाका फल कलादि वैसा विकलासे विकलादि एकत्र करके धन किंवा ऋण सारिणीमें लिखा है उसके प्रमाण लिया जो अंशफल युक्त करना किंवा कम करना तो ग्रहोंका प्रथम शीघ्रफल होता है शीघ्रफलका अर्थ करके केन्द्रके प्रमाण मध्यमग्रहमें युक्त करना किंवा कम करना तो दलसंस्कृत ग्रह होताहै. भौमादिग्रहोंका राश्यादि मन्दोच्च भौमका ४ बुधका ७ गुरुका ६ शुक्रका ३ शनिका ८ अब अभीष्ट ग्रहका मन्दोच्च लेकरके दल संस्कृत ग्रहमें कम करना तो मन्दकेन्द्र होता है. वह केन्द्रका पूर्वोक्त रीति करके भुज करना. भुजका भाग करना जो अंश आवे सो आगे लिखा मंदफलसारिणीका अंशकोष्ठक तयार है अनंतर अभीष्ट कोष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेना, अनन्तर फलके नीचे ६० कला विकला कोष्ठक लिखे हैं उसमेंसे अंशके नीचे जो कलाविकला होय तत्प्रमित कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फलको एकत्र करिके उसको पूर्वफलमें युक्त करना तो उन ग्रहोंका मन्दफल होता है ऋण धन मन्दकेन्द्रपरसे जानिके उस फलको मध्यम ग्रहोंमें धन वा ऋण करना तो मन्दस्पष्ट ग्रह होगा और उसी मन्दफलको प्रथम शीघ्रफलकेन्द्रमें विलोम अर्थात् धन होय तो ऋण और ऋण होय तो धन करना तो द्वितीय शीघ्र केन्द्र होता है उस शीघ्रकेन्द्रपरसे प्रथमशीघ्र फलके रीतिसे फल आनिकर मन्दस्पष्टमें ऋण धन करना तो वह स्पष्ट होता है । यही रीति भौमादिकोंकी है ॥

मंगल शुक्रका विशेष ।

" शुक्रारयोश्चलभवोन्त्यगतो यदाङ्का ० इति ॥ "

टी०-जब भौम और शुक्रका अंतिम शीघ्रकेन्द्रको पद्भालकरिके

अंश करते हैं तो यह अंश यदि १६५ से १८० तक होय तो संस्कार करनेकी पृथक् पृथक् सारिणी लिखी है उसका नाम अन्त्यांकफलसारिणी है. उसमेंसे शीघ्र फलके सदृश फल ले आना और उस फलको केन्द्रके वश करिके ऋण धन करना तो स्पष्ट शुक्र और भौम ठीक होते हैं ॥

भौमादिग्रहोंकी गति स्पष्ट करनेका प्रकार ।

मन्दफलसारिणीमें दहनी तरफ गतिफल लिखा है पन्द्रह २ कोष्ठका, उसको कर्कादि मकरादि केन्द्र वश कर धन ऋण जानना और शीघ्र-सारिणीमें दहिनी तरफ १५ कोष्ठका गतिफल धन वा ऋण लिखा है उन दोनों गतिफलोंको एकत्र करना अर्थात् दोनों धन होय वा ऋण होय तो योग करना और एक धन एक ऋण होय तो अन्तर करना तो उस फलके सदृश ग्रहगति स्पष्ट होती है । जब योग वा अन्तर ऋण बचे तो वक्रगति जानना यह स्पष्टगतिको मध्यमगतिका कारण लगता नहीं ।

भौम बुध शुक्रकी गतिमें विशेष ।

भौम बुध शुक्रका पद्मात्य अंतिम शीघ्रकेन्द्रका अंश १६५ से १८० तक अंश आवे तो यह संस्कार करनेके वास्ते यह ग्रहोंका शीघ्रफलसार-णीके अंत्यमें पृथक् अंत्यांक गतिफलसारणी लिखी है अनन्तर इस सार-णीमें जो अभीष्ट अंश आवे तत्तारिमित कोष्ठकके नीचेका कलादि ऋग-फल लिखा है यह लेकरके अंशफलके नीचे ६० कोष्टक लिखा है उसमेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्तत्तारिमित कोष्टकके नीचेका कलाका वही कलादि फल विकलाका विकलादि फल एकत्र करके यह सर्वदाल ऋण है इसवास्ते लिखा जो अंशफल उसमें युक्त करना तो शीघ्रगति फल तैयार होता है, अनन्तर यह फलका पहिले प्रमाण मन्दस्पष्ट गति फलको संस्कार करना तो भौम बुध भृगु इनकी स्पष्टगति होती है.

प्रथमशीघ्रकेन्द्रम् ।　　अशुफलभौमादीनाम् ।

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.
६	७	६	७	९		२८	१७	६	४५	५	
१९	७	२८	१३	२४							
४	३	५४	४२	३२	फ.	८	२२	२२	५६	१	फ.
३२	१९	५	१३	१९		०	५३	४९	४०	७	

आशुफलार्द्धम् ।　　आशुफलार्द्धसंस्कृता भौमादयः ।

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	प्र.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	प्र.
१४	८	३	२२	२		५	०	५	११	२	
४	४१	११	२८	३०		८	२	९	१८	१४	
						३	३०	६	१३	९	
९	२६	२४	२०	३३		२४	३०	२७	३६	४	

मन्दकेन्द्रम् ।　　मन्दफलम् ।

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.
१०	६	०	३	५		७	१	१	१		
२१	२७	२०	११	१५		१२	५६	५४	३०	४७	
						१४	५८	३९	०	३२	
५६	२९	३३	४६	५०		५	३	०	०	०	
३६	३०	३३	२४	५६		३६	३६	२६	०	१५	

मन्दस्पष्टभौमादि ।　　द्वि०शीघ्रकेन्द्रम् ।　　द्वि०शीघ्रफलम् ।

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
५	०	५	०	२		६	७	६	७	९		३३	१७	५	४५	५
१४	९	१४	१२	१८		२६	९	२६	१२	२२		५०	५४	५९	४५	५
												५४	५	१३	५२	२४
५५	१४	२२	४१	२०		१६	०	५९	१२	४४		७	११	५	५४	४
१०	५८	३०	५६	९		२६	१७	२६	१३	४०		३८	८	०	३८	२४
												ध.	ध.		ध.	ध.

भौमशीघ्रफलसारिणी ।

अको०	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	ग.प.
फ०	३२ ३० ०	३३ ४६ ०	३३ २ ०	३३ १८ ०	३३ ३४ ०	३३ ५० ०	३४ ६ ०	३४ २२ ०	३४ ३८ ०	३४ ५४ ०	३५ १० ०	३५ २६ ०	३५ ४२ ०	३५ ५८ ०	३६ १४ ०	३६ २६ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	२ ५६	३ १२	३ २८	३ ४४	४ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
४ १६	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८
३३																
८ ४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४
५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]						

[illegible]	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	२ ४८
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
२ ५९	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५
३३																
६																

भौमशीघ्रकर्मसारिणी.

भा०	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.प.
फ०	३६ ४८ ०	३६ ० २५	३५ १२ ४८	३४ २६ १२	३३ ३३ ३६	३२ ४० ०	३२ २ २५	३१ १४ ४८	३० २७ १२	२९ ३९ ३६	२८ ५२ ०	२८ ४ २५	२७ १६ ४८	२६ २९ १२	२५ ४१ ३६	७ ३८
क०	०	१	२	३												
क्र०	० ०	० ४८	१ ३५	२ २३	१०	५८	४६	३३	२१	८	५६	४४	३१	१९	5	५४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
१२ ४२	१३ २९	१४ १७	१५ ४	१५ ५२	१६ ४०	१७ २७	१८ १५	१९ २	१९ ५०	२० ३८	२१ २५	२२ १३	२३ ०	२३ ४८	२४ ३५	२५ २३
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
२६ ११	२६ ५८	२७ ४६	२८ ३४	२९ २१	३० ९	३० ५६	३१ ४४	३२ ३२	३३ १९	३४ ७	३४ ५४	३५ ४२	३६ ३०	३७ १७	३८ ५	३८ ५२
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						
३९ ४०	४० २८	४१ १५	४२ ३	४२ ५०	४३ ३८	४४ २६	४५ १३	४६ १	४६ ४८	४७ ३६						०

अंको०	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग.प.
७ फ०	२४ ५४ ०	२३ १४ २४	२१ ३४ ४८	१९ ५५ १२	१८ १५ ३६	१६ ३६ ०	१४ ५६ २४	१३ १६ ४८	११ ३७ १२	९ ५७ ३६	८ १८ ०	६ ३८ २४	४ ५८ ४८	३ १९ १२	१ ३९ ३६	० ० ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ऋ०	० ०	१ ४०	३ १९	४ ५९	६ ३८	८ १८	९ ५८	११ ३७	१३ १७	१४ ५६	१६ ३६	१८ १६	१९ ५५	२१ ३५	२३ १४	२४ ५४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
२८ ३४	२६ १३	२९ ५३	३१ ३२	३३ १२	३४ ५२	३६ ३१	३८ ११	३९ ५०	४१ ३०	४३ १०	४४ ४९	४६ २९	४८ ८	४९ ४८	५१ २८	५३ ७
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
५४ ४७	५६ २६	५८ ६	५९ ४६	६१ २५	६३ ५	६४ ४४	६६ २४	६८ ४	६९ ४३	७६ २६	७३ २	७४ ४२	७६ २२	७८ १	७९ ४१	८१ २०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						०
८३ ०	८४ ४०	८६ १९	८७ ५९	८९ ३८	९१ १८	९२ ५४	९४ ३७	९६ १७	९७ ५६	९९ ६६						० ०

अंत्यांकफलसारिणी.

अ.पं.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
क.	० ० ०ध	० १२ ध.	० २४ ध	० ३६ ध	० ४८ ध.	१ ० ध	१ १२ ध	१ २४ ध	१ २४ ऋ.	१ १२ ऋ	१ ० ऋ	० ४८ ऋ	० ३६ ऋ	० २४ ऋ.	० १२ ऋ.	० ० ऋ.
४०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
फ०	० ०	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	३ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३ १२	३ २४	३ ३६	३ ४८	४ ०	४ १२	४ २४	४ ३६	४ ४८	५ ०	५ १२	५ २४	५ ३६	५ ४८	६ ०	६ १२	६ २४
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
६ ३६	६ ४८	७ ०	७ १२	७ २४	७ ३६	७ ४८	८ ०	८ १२	८ २४	८ ३६	८ ४८	९ ०	९ १२	९ २४	९ ३६	९ ४८
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						
१० ०	१० १२	१० २४	१० ३६	१० ४८	११ ०	११ १२	११ २४	११ ३६	११ ४८	१२ ०						

अन्त्यांकगतिफलसारिणी.

[illegible]																
[illegible]																
क्ष.	० १	० ३	० ४	० ६	० ७	० ९	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १७	० १९	० २०	० २१	० २३
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]
[illegible]																
४९	५०	५१	५३	५४	५५	५७	५८	०	१	३	५	६	७	९	१०	११
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०							
१ १३	१ १४	१ १६	१ १७	१ १९	१ २०	१ २२	१ २३	१ २४	१ २६							

भौममंदफलसारिणी.

अ.का.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.फ
फ०	० ० ०	० ११ ३६	० २३ १२	० ३४ ४८	० ४६ २४	० ५८ ०	१ ९ ३६	१ २१ १२	१ ३२ ४८	१ ४४ २४	१ ५६ ०	२ ७ ३६	२ १९ १२	२ ३० ४८	२ ४२ २४	५ ४८
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	० ०	० १२	० २३	० ३५	० ४६	० ५८	१ १०	१ २१	१ ३३	१ ४४	१ ५६	२ ८	२ १९	२ ३०	२ ४२	० ०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
२ ५४	३ ६	३ १७	३ २९	३ ४०	३ ५२	४ ४	४ १५	४ २७	४ ३८	४ ५०	५ २	५ १३	५ २५	५ ३६	० ०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	५ ४८	६ ०	६ ११	६ २३	६ ३४	६ ४६	६ ५८	७ ९	७ २१	७ ३२	७ ४४	७ ५८	८ ७	८ ११	८ ३०	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	८ ४२	८ ५४	९ ५	९ १७	९ २८	९ ४०	९ ५२	१० ३	१० १५	१० २६	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १३	११ २४	११ ५६

अ का	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग. फ.
फ०	२ २४ ०	३ ५ २३	३ १६ २४	३ २७ ३५	३ ३८ ४८	३ ५० ०	३ १ १२	४ १२ २४	४ २३ ३६	४ ३४ ४८	४ ४६ ०	४ ५७ १२	४ ८ २४	५ १९ ३६	५ ३० ४८	० ५ ३६
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	० ०	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	०
०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०

भौममंदफलसारिणी ।

अ.को.	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग०	फ०
फ०	१० ५४ ०	११ ० ०	११ ६ ०	११ १२ ०	११ १८ ०	११ २४ ०	११ ३० ०	११ ३६ ०	११ ४२ ०	११ ४८ ०	११ ५४ ०	१२ ० ०	१२ ६ ०	१२ १२ ०	१२ १८ ०	३ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	० ०	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	१ ०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	१ ३०	१ ३६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	२ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	८ ४८	२ ५४	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
३ ०	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ १८	४ २४	४ ३०	०
०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६०

फ०	० ०	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३१	० ३४	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
फ०	० ३६	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	१ १२
क०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
फ०	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	१ ४८	१ ५०
क०	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०
फ०	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १९	२ २२	२ २४	० ०	० ०

बुधशीघ्रफलसारिणी.

अंको.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग घ.
फ०	० ० ०	० १६ २४	० ३२ ४८	० ४९ १२	१ ५ ३६	१ २२ ०	१ ३८ २४	१ ५४ ४८	२ ११ १२	२ २७ ३६	२ ४४ ०	३ ० २४	३ १६ ४८	३ ३३ १२	३ ४९ ३६	१०८ २०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० १६	० ३३	० ४९	१ ६	१ २२	१ ३८	१ ५५	२ ११	२ २८	२ ४४	३ ०	३ १७	३ ३३	३ ५०	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
घ०	४ ६	४ २२	४ ३९	४ ५५	५ १२	५ २८	५ ४४	६ १	६ १७	६ ३४	६ ५०	७ ६	७ २३	७ ३९	७ ५६	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
घ०	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	०

	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	०

बुधशीघ्रफलसारिणी.

सं.फा.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.प.
	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	
घ०	० ०	० १४	० २९	० ४३	० ५८	१ १२	१ २६	१ ४१	१ ५५	२ १०	२ २४	२ ३८	२ ५३	३ ७	३ २२	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
घ०	३ ३६	३ ५०	४ ५	४ १९	४ ३४	४ ४८	५ २	५ १७	५ ३०	५ ४५	६ ०	६ १४	६ २९	६ ४३	६ ५८	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
घ०	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	०
घ०	४२ ०	५५ १२	८ २४	२१ ३६	३४ ४८	४८ ०	१ १२	१४ २४	२७ ३६	४० ४८	५४ ०	७ १२	२० २४	३३ ३६	४६ ४८	१८ ४४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० १३	० २६	० ४०	० ५३	१ ६	१ १९	१ ३२	१ ४६	१ ५९	२ १२	२ २५	२ २८	२ १२	३ ७	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	३ १८	३ ३१	३ ४४	३ ५८	४ ११	४ २५	४ ३७	४ ५	५ ३	५ १७	५ ३०	५ ४३	५ ५६	६ १०	६ २३	
क.																
क।																
घ०	५४	७	२०	३४	४७	०	१३	२६	४०	५३	६	१९	३२	४६	५८	१२

शाद्यग्रहस्पर्शाधिकल्पसारिणी.

अ.को.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	ग.ध.
फ०	१९ ५४ ०	१९ ५९ १२	२० ४ २४	२० ९ ३६	२० १४ ४८	२० २० ०	२० २५ १२	२० ३० २४	२० ३५ ३६	२० ४० ४८	२० ४६ ०	२० ५१ १२	२० ५६ २४	२१ १ ३६	२१ ६ ४८	७४ ४४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
घ०	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
घ०	२ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	[illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	०
प०	५४	५९	४	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५१	५६	२	७	६० ५ १२

अ.को.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	ग.ध.
फ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	७ ५९ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
घ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
घ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

बुधशीघ्रफलसारिणी.

१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग	अ.का.
२१ १२ ७	२१ ५ १२	२० ५८ २४	२० ५१ ३६	२० ४४ ४८	२० ३८ ०	२० ३१ ११	२० २४ १२	२० १७ ३६	२० १० ४८	२० ४ ०	१९ ५७ १२	१९ ५० २४	१९ ४३ ३६	१९ ३६ ४८	३८ ४४	फ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
अ०	० ०	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
अ०	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	०
	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१८	२५	३२	३९	४६	५२	५९	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अ०	५ ६	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	[illegible] ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३५	६ ४१	६ ४८

	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
अ०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	

बुधशीघ्रफलसारिणी.

अं.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.घ.
फ०	१५ ३० ०	१५ ३ ३६	१४ ३७ १२	१४ १० ४८	१३ ४४ २४	१३ १८ ०	१२ ५१ ३६	१२ २५ १२	११ ५८ ४८	११ ३२ २४	११ ६ ०	११ ३९ ३६	१० १३ १२	९ ४६ ८	९ २० २४	२० ४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० २६	० ५३	१ १९	१ ४६	२ १२	२ ३८	३ ५	३ ३१	३ ५८	४ २४	४ ५०	५ १७	५ ४३	६ ९	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ऋ०	६ ३६	७ २	७ २९	७ ५५	८ २२	८ ४८	९ १४	९ ४१	१० ७	१० ३४	११ ०	११ २६	११ ५३	१२ १९	१२ ४६	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ऋ०	१३ १२	१३ ३८	१४ १५	१४ ४१	१५ ८	१५ २४	१५ ५०	१६ १७	१६ ४३	१७ १०	१७ ३६	१८ २	१८ २९	१८ ५५	१९ २२	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ऋ०	१९ ४८	२० १४	२० ४१	२१ ७	२१ ३४	२२ ०	२२ २६	२२ ५३	२३ १९	२३ ४६	२४ १२	२४ ३८	२५ ५	२५ ३१	२५ ५८	२६ २४

अं.को	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग.घ.
फ०	८ ५४ ०	८ १८ २४	७ ४२ ४८	७ ७ १२	६ ३१ ३६	५ ५६ ०	५ २० २४	४ ४४ ४८	४ ९ १२	३ ३३ ३६	२ ५८ ०	२ २२ २४	१ ४६ ४८	१ २१ १२	० ३५ ३६	० ० ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	०	०	१	१	२	२	३	४	४	५	५	६	७	७	८	०

बुधमंदफलसारिणी।

अ.का.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ.
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	
प०	० ०	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २५	० २९	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ५४	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३३	१ ३७	१ ४१	१ ४४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ४२	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २५	३ २९	३ ३२	३ ३६
अं को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग. फ
फ०	२ ६ ०	२ ८ ४८	२ ११ ३६	२ १४ २४	२ १७ १२	२ २० ०	२ २२ ४८	२ २५ ३६	२ २८ २४	२ ३१ १२	२ ३४ ०	२ ३६ ४८	२ ३९ ३६	२ ४२ २४	२ ४५ १२	२ ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ४२	० ४६	० ४८	० ५०	० ५३	० ५६	० ५९	१ २	१ ४	१ ७	१ १०	१ १३	१ १६	१ १८	१ २१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ २४	१ २७	१ ३०	१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४१	१ ४४	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ६	२ ९	२ १२	२ १४	२ १७	२ २०	२ २३	२ २६	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४६	२ ४८

गुरुशीघ्रफलसारिणी.

स.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.घ.
फ०	२ ३०	२ ३८	२ ४७	२ ५३	३ ५	३ १४	३ २२	३ ३१	३ ४०	३ ४९	३ ५८	४ ६	४ १५	४ २४	४ ३३	१२
घ०	०	९	१८	२६	३५	४४	५३	२	११	१९	२८	३७	५६	५५	३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	०
[illegible]																
०	२४	३३	४२	५०	५९	८	१७	२४	३४	४२	५२	१	१०	१८	२७	
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६ ३६	६ ४५	६ ५४	७ २	७ ११	७ २०	७ २९	७ ३८	७ ४६	७ ५६	८ ४	८ १२	८ २२	८ ३०	८ ३९	८ ४८

अं.को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.घ.
फ०	४ ४२ ०	४ ५० २४	४ ५८ ४८	५ ७ १२	५ १५ ३६	५ २४ ०	५ ३२ २४	५ ४० ४८	५ ४९ १२	५ ५७ ३६	६ ६ ०	६ १४ २४	६ २२ ४८	६ ३१ १२	६ ३९ ३६	१२ ०
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ८	० १७	० २५	० ३५	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ४९	१ ५८	०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.
फ०	६ ४८ ०	६ ५४ ४८	७ १ ३६	७ ८ २४	७ १५ १२	७ २२ ०	७ २८ ४८	७ ३५ ३६	७ ४२ २४	७ ४९ १२	७ ५६ ०	८ २ ४८	८ ९ ३६	८ १६ २४	८ २३ १२	१० ४०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ ४३	१ ४९	१ ५६	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५४	३ ४	३ १०	३ १७	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	३ २४	३ ३१	३ ३८	३ ४४	३ ५१	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १८	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	४ ५२	४ ५९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	५ ६	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३४	६ ४०	६ ४८

अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग. फ
फ०	८ ३० ०	८ ३५ १२	८ ४० २४	८ ४५ ३६	८ ५० ४८	८ ५६ ०	९ १ १२	९ ६ २४	९ ११ ३६	९ १६ ४८	९ २२ ०	९ २७ १२	९ ३२ २४	९ ३७ ३६	९ ४२ ४८	११ २०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३७	० ४२	० ४७	० ५३	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२ ३६	२ ४१	२ ४७	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३ ५४	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	० ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२

रात्र्यधिफलसारिणी.

अ.घ.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.घ.
	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	
घ०	० ०	० ३	० ६	० १०	० १३	० १६	० १९	० २२	० २६	० २९	० ३२	० ३५	० ३८	० ४२	० ४५	० ०
•	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
•	० ४८	० ५१	० ५४	० ५८	१ १	१ ४	१ ७	१ १०	१ १४	१ १७	१ २०	१ २३	१ २७	१ ३०	१ ३३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ३६	१ ३९	१ ४२	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ २	२ ५	२ ८	२ ११	२ १४	२ १८	२ २२	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६
०	२ २४	२ २७	२ ३०	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४३	२ ४६	२ ५०	२ ५३	२ ५६	२ ५९	३ २	३ ६	३ ९	३ १२

अ घं.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	ग.घ.
फ०	१० ३६	१० ३६	१० ३७	१० ३८	१० ३९	१० ४०	१० ४०	१० ४१	१० ४२	१० ४३	१० ४४	१० ४४	१० ४५	१० ४६	१० ४७	५
घ०	० ०	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	०
•	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० १२	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	० २४	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३५	० ३५	० ०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	० ३६	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८

स्पष्टग्रहगुरुशीघ्रफलसारिणी.

अ.क्रो.	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.क्र.
फ०	८ ५४ ०	८ ४४ ४८	८ ३५ ३६	८ २६ २४	८ १७ १२	८ ८ ०	७ ५८ ४८	७ ४९ ३६	७ ४० २४	७ ३१ १२	७ २२ ०	७ १२ ४८	७ ३ ३६	६ ५४ २४	६ ४५ १२	२ ४०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० ९	० १८	० २८	० ३७	० ४६	० ५५	१ ४	१ १४	१ २३	१ ३२	१ ४१	१ ५०	१ ०	२ ९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ १८	२ २७	२ ३६	२ ४६	२ ५५	३ ४	३ १३	३ २२	३ ३२	३ ४१	३ ५०	३ ५९	४ ८	४ १८	४ २७	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४ ३६	४ ४५	४ ५४	५ ४	५ १३	५ २२	५ ३१	५ ४०	५ ५०	५ ५९	६ ८	६ १७	६ २६	६ ३६	६ ४५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६ ५४	७ ३	७ १२	७ २२	७ ३१	७ ४०	७ ४९	७ ५८	८ ८	८ १७	८ २६	८ ३५	८ ४४	८ ५४	९ ३	९ १२

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ऋ०	३ ०	३ १२	३ २४	३ ३६	३ ४८	४ ०	४ १२	४ २४	४ ३६	४ ४८	५ ०	५ १२	५ २४	५ ३६	५ ४८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०

[illegible]

गुरुशीघ्रफलसारिणीचक्रम्.

अं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग ऋ
फ०	३ ३६ ०	३ २१ ३६	३ १७ १२	२ ५२ ४८	२ ३८ २४	२ २४ ०	२ ९ ३६	१ ५५ १२	१ ४० ४८	१ २६ २४	१ १२ ०	० ५७ ३६	० ४३ १२	० २८ ४८	० १४ २४	७ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	०
ऋ०	३ ३६	३ ५०	४ ५	४ १९	४ ३४	४ ४८	५ २	५ १७	५ ३१	५ ४६	६ ०	६ १४	६ २९	६ ४३	६ ५८	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ऋ०	७ १२	७ ३६	७ ४१	७ ५५	८ १०	८ २३	८ ३७	८ ५२	९ ६	९ २१	९ ३९	९ ५०	१० ५	१० १९	१० ३४	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ऋ०	१० ४८	११ २	११ १७	११ ३१	११ ४६	१२ ०	१२ १४	१२ २९	१२ ४३	१२ ५८	१३ १२	१३ २६	१३ ४१	१३ ५५	१४ १०	१४ २४

गुरुमंदफलसारिणी.

अ.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.फ.
फ०	० ० ०	० ५ ३६	० ११ १२	० १६ ४८	० २२ २४	० २८ ०	० ३३ ३६	० ३९ १२	० ४४ ४८	० ५० २४	० ५६ ०	१ १ ३६	१ ७ १२	१ १२ ४८	१ १८ २४	० २८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
०	४८	५४	५९	५	१०	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५५	१	५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	४ ११	४ १७	४ २२	४ २९	४ ३४	४ ४०	४ ४५	४ ५१	४ ५७	५ २	५ ८	५ १४	५ १९	५ २५	५ ३०	५ ३६

स्पष्टग्रहगुरुमंदफलसारिणी.

अ.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ.
०	१ २४ ०	१ २९ १२	१ ३५ २४	१ ३९ ३६	१ ४४ ४८	१ ५० ०	१ ५५ १२	२ ० २४	२ ५ ३६	२ १० ४८	२ १६ ०	२ २१ १२	२ २६ २४	२ ३१ ३६	२ ३६ ४८	० ३६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	[illegible]
०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
०	५४	५९	४	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५१	५६	२	७	१२

गुरुमंदफलसारिणी.

अ.को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग. फ.
०	२ ४२ ०	२ ४६ ४८	२ ५१ ३६	२ ५६ २४	३ १ १२	३ ६ ०	३ १० ४८	३ १५ ३६	३ २० २४	३ १५ १२	३ ३० ०	३ ३४ ४८	३ ३९ ३६	३ ४४ २४	३ ४९ १२	० २४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २९	० ३४	० ३८	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	१ २	१ ७	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १२	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	५ २	२ १०	२ १४	२ १९	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२ २४	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४८	२ ५३	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ६	४ १०	४ १४	४ १९	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४३	४ ४८

गुरुमंदफलसारिणी।

अं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ति.
फ०	३ ५४ ०	३ ५७ ३६	४ १ १२	४ ४ ४८	४ ८ २४	४ १२ ०	४ १५ ३६	४ १९ १२	४ २२ ४८	४ २५ २४	४ ३० ०	४ ३३ ३६	४ ३७ १२	४ ४० ४८	४ ४४ २४	० १८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	[illegible]															
०	० ५४	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३४	१ ३७	१ ४१	१ ४४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
[illegible]																
०	२ ४२	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २६	३ २९	३ ३२	३ ३६

गुरुमंदफलसारिणी.

अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.
०	४ ४८ ०	४ ५० ४८	४ ५३ ३६	४ ५६ २४	४ ५९ १२	५ २ ०	५ ४ ४८	५ ७ ३६	५ १० २४	५ ३१ १२	५ १६ ०	५ १८ ४८	५ २१ ३६	५ २४ २४	५ २७ १२	० १४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ४२	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५६	० ५९	१ २	१ ४	१ ७	१ १०	१ १३	१ १६	१ १८	१ २१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ २४	१ २७	१ ३०	१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४०	१ ४४	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ६	२ ९	२ १२	२ १४	२ १७	२ २०	२ २३	२ २६	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४५	२ ४८

स्पष्टग्रहगुरुमंदफलसारिणी.

[illegible]																
५५	०	१	२	२	३	४	५	६	६	७	८	९	१०	१०	११	
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० १२	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	० ०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	० २४	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	० ३६	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८

स्पष्टशुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अ.प्रो.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.प.
फ०	० ० ०	० २५ १२	० ५० २४	१ १५ ३६	१ ४० ४८	२ ६ ०	२ ३१ १२	२ ५६ २४	३ २१ ३६	३ ४६ ४८	४ १२ ०	४ ३७ १२	५ २ २४	५ २७ ३६	५ ५२ ४८	 ७४ ५१
प्र०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
प०	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	४ [illegible]	४ [illegible]	५ [illegible]	५ [illegible]	५ [illegible]	० [illegible]
[illegible]																

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

																ग.घ.
घ०	०	[illegible]	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	[illegible]	[illegible]	०
	५४	१९	४४	१०	३५	०	२५	५०	१६	४१	६	३१	५५	२२	४७	१२

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अं.को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.घ.
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २४	० ४८	१ १२	१ १६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	६ ०	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१२ ०	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१८ ०	१८ २४	१८ ४८	१९ १२	१९ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६	२४ ०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	८
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	६ ०	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१२ ०	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१८ ०	१८ २४	१८ ४८	१९ १२	१९ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६	२४ ०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अ.क्रो.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.ध.
फ०	२४ ३६ ०	२४ ५८ २४	२५ २० ४८	२५ ४३ १२	२६ ५ ३६	२६ २८ ०	२६ ५० २४	२७ १२ ४८	२७ ३५ १२	२७ ५७ ३६	२८ २० ०	२८ ४२ २४	२९ ४ ४८	२९ २७ १२	२९ ४९ ३६	७३ ८
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २२	० ४५	१ ७	१ ३०	१ ५२	१ ५४	२ ३७	२ ५९	३ २२	३ ४४	४ ६	४ २९	४ ५१	५ १४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	५ ३६	५ ५८	६ २१	६ ४३	६ ७	७ २८	७ ५०	८ १३	८ ३५	८ ५८	९ २०	९ ४२	१० ५	१० २७	१० ५०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शुक्रशीघ्रफलसारिणी।

अं.को.	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	गु.ध.
४०	४६ ६	४५ ५८	४५ ५१	४५ ४४	४५ ३७	४५ ३०	४५ २२	४५ १५	४५ ८	४५ १	४४ ५४	४४ ४६	४४ ३९	४४ ३२	४४ २५	५४
क०																
भु०																
	१ ४८	१ ५५	२ २	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३१	२ ३८	२ ४६	२ ५३	३ ०	३ ७	३ १४	३ २२	३ २९	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	०
																६०
	५ २४	५ ३१	५ ३८	५ ४६	५ ५३	६ ०	६ ७	६ १४	६ २२	६ २९	६ ३६	६ ४३	६ ५०	६ ५८	७ ५	७ १२

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अं.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	गु.ध.
	४४ १८ ०	४३ ३१ १२	४२ ४४ २४	४१ ५७ ३६	४१ १० ४८	४० २४ ०	३९ ३७ १२	३८ ५० २४	३८ ३ ३६	३७ १६ ४८	३६ ३० ०	३५ ४३ १२	३४ ५६ २४	३४ ९ ३६	३३ २२ ४८	२१ ५३
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
भु०	० ०	० ४७	१ ३४	२ २०	३ ७	३ ५४	४ ४१	५ २८	६ १४	७ १	७ ४८	८ ३५	९ २२	१० ८	१० ५५	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	११ ४२	१२ २९	१३ १६	१४ २	१४ ४९	१५ ३६	१६ २३	१७ १०	१७ ५६	१८ ४३	१९ ३०	२० १७	२१ ४	२१ ५०	२२ ३७	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२३ २४	२४ ११	२४ ५८	२५ ४४	२६ ३१	२७ १८	२८ ५	२८ ५२	२९ ३८	३० २५	३१ १२	३१ ५९	३२ ४६	३३ ३२	३४ १९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३५ ६	३५ ५३	३६ ४०	३७ २६	३८ १३	३९ ०	३९ ४७	४० ३४	४१ २०	४२ ७	४२ ५४	४३ ४१	४४ २८	४५ १४	४६ १	४६ ४८

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

४८	२८	९	१९	३०	४०	२०	१	११	२२	३२	४२	२३	३	१४	२४

अंन्यांकफलसांरिणी.

अ.घो.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग. फ
फ०	० ० ध.	० २० ध.	० ४० ध.	१ ० ध.	१ २० ध.	१ ४० ध.	२ ० ध.	२ २० ध.	२ २० ऋ.	२ ० ऋ	१ ४० ऋ	१ २० ऋ.	१ ० ऋ.	१ ४० ऋ.	१ २० ऋ.	०
घ.०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	५ ०	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१० ०	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०	१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१५ ०	१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

शुक्रमंदफलसारिणी.

अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ.
फ०	० ३६ ०	० ३८ ०	० ४० ०	० ४२ ०	० ४४ ०	० ४६ ०	० ४८ ०	० ५० ०	० ५२ ०	० ५४ ०	० ५६ ०	० ५८ ०	१ ० ०	१ २	१ ४ ०	२ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २	० ४	० ६	० ८	० १०	० १२	० १४	० १६	० १८	० २०	० २२	० २४	० २६	० २८	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ३०	० ३२	० ३४	० ३६	० ३८	० ४०	० ४२	० ४४	० ४६	० ४८	० ५०	० ५२	० ५४	० ५६	० ५८	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१ ०	१ २	१ ४	१ ६	१ ८	१ १०	१ १२	१ १४	१ १६	१ १८	१ २०	१ २२	१ २४	१ २६	१ २८	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१ ३०	१ ३२	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४०	१ ४२	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५४	१ ५६	१ ५८	२ ०

शुक्रमंदफलसारिणी.

अ.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.फ.
फ०	१ ६ ०	१ ६ ४८	१ ७ ३६	१ ८ २४	१ ९ १२	१ १० ०	१ १० ४८	१ ११ ३६	१ १२ २४	१ १३ १२	१ १४ ०	१ १४ ४८	१ १५ ३६	१ १६ २४	१ १७ १२	० ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० १२	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० २४	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० ३६	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८

शुक्रमंदफलसारिणी.

अ.का	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.घ
०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	० ०
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अ.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.घ.
	० ४ ०	० ६ ०	० १२ ०	० १८ ०	० २४ ०	० ३० ०	० ३६ ०	० ४२ ०	० ४८ ०	० ५४ ०	१ ० ०	१ ६ ०	१ १२ ०	१ १८ ०	१ २४ ०	० ८ ०
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अ.घा.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.प.
फ०	३ ५४ ०	३ ५७ ३६	४ १ १२	४ ४ ४८	४ ८ २४	४ १२ ०	४ १५ ३६	४ १८ १२	४ २२ ४८	४ २६ २४	४ ३० ०	४ ३३ ३६	४ ३७ १२	४ ४० ४८	४ ४४ २४	५ ३६
घ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
प०	० ०	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २५	० २९	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	० ०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ५४	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३४	१ ३७	१ ४१	१ ४४	० ०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	८ ०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ४२	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २५	३ २९	३ ३२	३ ३६

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अ.घा.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.प.
फ०	४ ४८ ०	४ ५० २४	४ ५२ ४८	४ ५५ १२	४ ५७ ३६	५ ० ०	५ २ २४	५ ४ ४८	५ ७ १२	५ ९ ३६	५ १२ ०	५ १४ २४	५ १६ ४८	५ १९ १२	५ २१ ३६	४ २४
घ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
प०	० ०	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २८	० ३०	० ३४	० ०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ३६	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	० ०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	० ०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

फ०	२४ ०	२५ १२	२६ २६	२७ ३६	२८ ४८	३० ०	३१ १२	३२ २४	३३ ३६	३४ ४८	३६ ०	३७ १२	३८ २४	३९ ३६	४० ४८	३ १२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० १	० २	० ४	० ५	० ६	० ७	० ८	० १०	० ११	० १२	० १३	० १४	० १६	० १७	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० १८	० १९	० २०	० २२	० २३	० २४	० २५	० २६	० २८	० २९	० ३०	० ३१	० ३२	० ३४	० ३५	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	[illegible]															६०
	० ५४	० ५५	० ५६	० ५८	० ५९	१ ०	१ १	१ २	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ८	१ १०	१ ११	१ १२

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अं।	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	ग.घ.
	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ३२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	२ ४२ ०	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	

शनिशीघ्रफलसारिणी ।

अं.को.	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.अं
फ०	४ ३० ०	४ २५ १२	४ २० २४	४ १५ ३६	४ १० ४८	४ ६ ०	४ १ १२	३ ५६ २४	३ ५१ ३६	३ ४६ ४८	३ ४२ ०	३ ३७ १२	३ ३२ २४	३ २७ ३६	३ २२ ४८	२ ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २९	० ३४	० ३८	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	१ २	१ ७	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ १२	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ ९	२ १४	२ १९	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२ २४	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४८	२ ५३	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १४	४ १९	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४३	४ ४८

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अं.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.अं
फ०	३ १८ ०	३ [illegible] ०	३ ६ ०	३ ० ०	२ ५४ ०	२ ४८ ०	२ ४२ ०	२ ३६ ०	२ ३० ०	२ २४ ०	२ १८ ०	२ १२ ०	२ ६ ०	२ ० ०	१ ५४ ०	४ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	१ ३०	१ ६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	१ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	३ ०
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ १८	४ २४	४ ३०	०
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ६	५ १२	५ १८	५ २४	५ ३०	५ ३६	५ ४२	५ ४८	५ ५४	६ ०	० ०

अर्ध किया तो १४ । ४। ०० अब केन्द्र तुलाका है, इस वास्ते ऋण यह मध्यम भौम ५ । २२ । ०७ । २४ इसमें अर्द्ध कम किया तो ५ । ८ । ३ । २४ यह दल संस्कृत भौम भया । इसी रीतिसे अन्य ग्रहभी करना केन्द्रादिसहित ३२ के पत्रमें लिखदिये हैं.

भौमादिमंदोच्चम् ।				
.	बु.	बृ.	शु.	श.
४	७	६	३	८
०	०	०	०	०
०	०	०	०	०
०	०	०	०	०

भौममन्दफल.

भौममन्दोच्च राशि ४।०।०।० इसमेंसे दलसंस्कृत भौम ५।८ । ३ । २४ कम किया तो बाकी १० । २१ । ५६ । ३६ यह भौमका मंदकेन्द्र भया । इसका भुज १ । ८ । ३ । २४ इसके अंश ३८ । ३ । २४ हे. इस वास्ते यहाँ भौममन्दफल सारिणी कोष्ठक ३८ के नीचेका अंक ७।११।३६ है। अब अंशके नीचे कला ३ है । इस वास्ते कलाविकला कोष्ठकके ३ के नीचेका फल कलादि ० । ३४ अब अंश कलाके नीचे विकला २४ है इसवास्ते २४ कलाविकला कोष्ठकके नीचेका फल विकलादि ४ । २९ एकत्र करके पूर्वफलमें युक्त किया तो यह ७ । १२ । १४ भौमका मन्दफल भया यह मंदकेन्द्र तुलादिक है इसवास्ते ऋण, यह मध्यम भौम ५ । २२।७।२४ में कम किया तो ५।१४।५५।१० यह मंदस्पष्ट भौम भया इसी रीतिसे बुधादिक ग्रह करना । + अब यही मंदफल७।१२।१४विपरीत कहिये धन इस वास्ते प्रथम शीघ्रकेन्द्र ६ । १९ । ४। ३२ में युक्त किया तो ६ । २६ । १६ । ४६ यह भौमका अंतिम शीघ्रकेन्द्र भया ।

अंतिमशीघ्रफल.

यह केन्द्र षड्धिक है इसवास्ते १२ में पतित किया ५।३।४३। १४

कोष्ठक १५३ का नीचेका अंशादि फल ३४।२५।१२ यह अब अं
नीचे कला ४३ है इसवास्ते ४३ कलाविकला कोष्ठकके नीचेका
कलादि ३४।७ यह अंश कलाके नीचे विकला १४ है इसवास्ते १४क
विकला कोष्ठकमेंका विकलादि फल ११।६ यह सब फल ऋणसारि
लिखा है इसवास्ते प्रथम जो फल ३४।२५।१२ इसमें कम किया तो ३
५०।५३।५४ यह अंतिम शीघ्रफल भया यह केन्द्र तुलाका है इसवा
ऋण, मंदस्पष्ट भौम ५।१४।५५।१० में कम किया तो ४।११।४।
यह स्पष्ट भौम भया । जब भौमशुक्रके अन्तिमशीघ्रकेन्द्रका अंश १६१
१८० तक आवे तो उसका शीघ्रफल लेनेके खातिर और उदाहरण करते हैं
मंगलका अंतिम शीघ्रकेन्द्रका अंश १७० ।२०।२२ कल्पना करके अ
मंगल शीघ्रकेन्द्रसारिणीमें अंत्यांक सारिणीमें १७० अंशके नीचे अंशादिफ
१।०।० यह अब अंशके नीचे कला २० इसका फल ४।०।० और कलाके
नीचे विकला २२ का ४।०।० फल एकत्र करके ४।४ भया इसको पूर्व
लाया जो फल है सो सारिणीमें धन लिखा है इसवास्ते कला विकला फल
युक्त करके १ । ४ । ४ यह फल केन्द्रके वशसे ऋण धन ग्रहमें करना।

गत्युदाहरणम्.

भौमका अन्तिम शीघ्रकेन्द्रका अंश १५३ आया है इस वास्ते १५३
कोष्ठकका गतिफल ७ । ३८ कलादि धन यह और मन्दफलसारिणी
कोष्ठक ३८ का गतिफल ५।३६ कलादि यह मन्दकेन्द्र मकरादिक है इस
वास्ते ऋण तो पूर्व गति फलमें घटाया तो बाकी २।२ यह धन फल आया।
यही मंगलकी स्पष्टगति भई। यह ऊपरके सारिणीपरसे स्पष्ट बुध, गुरु, शुक्र,
शनि इनकी स्पष्टगति बनाना, राहु जो मध्यम है वही सर्वदा स्पष्ट समझना,
उसमें ६ राशि युक्त करना, तो केतु होता है ।

भौमादिकोंका द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांशपरसे अस्तादि जाननेका प्रकार ।

" त्रिनृपैः शरजिष्णुभिः शरार्कैर्नगभूपैस्त्रिभवैः क्रमात्कुजाद्याः ।
चलकेन्द्रलवैः प्रयाति वक्रं भगणात्तैः पतितैर्व्रजन्ति मार्गम् ॥

"क्षितिजोऽप्ययमेरुदेति पूर्वे गुरुरिन्द्रै रविजस्तु सप्तचन्द्रैः ।
स्वस्वोदयभागसंविहीनैर्भगणांशैरपरत्र यांति चास्तम् ॥
खशरैश्च जिनैः परे ज्ञभृग्वोरुदयोस्तोऽक्षदिनैर्नगाद्रिभूमिः ।
उदयोक्षनखैहयहीन्दुभिः प्रागस्तो दिग्दहनैश्च पट्सुरैः स्यात् ॥"

टीका–अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे भौमका १६३, बुधका १४५, गुरुका १२५, शुक्रका १६७, शनिका ११३ इतने अंश होय तो क्रमसे वक्री ग्रह होते हैं और क्रमसे भौम १९७, बुध २१५, गुरु २३५, शुक्र १९३, शनि २४७ इतने अन्तिम शीघ्रकेन्द्रके अंश होंय तो क्रमसे वह ग्रह मार्गी होते हैं। अन्तिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे भौमका २८ गुरुका १४ और शनिका १७ होय तो क्रमसे इनका उदय पूर्वमें होता है, और अन्तिम शीघ्रकेन्द्रके अंश अनुक्रमसे ३३२।३४६।३४३ इतने होंय तो भौम गुरु शनि इनका अस्त पश्चिममें होता है और अन्तिम शीघ्रकेन्द्रके अंश बुधका ५०शुक्रका२४ यह होय तो बुधशुक्रका पश्चिममें उदय होता है और अन्तिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे १५५।१७७ यह होय तो बुध शुक्रका अस्त पश्चिममें होता है और अन्तिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे २०५।१८३यह होयतो बुध शुक्रका पूर्वमें उदय होता है+और अन्तिम शीघ्रकेंद्रके अंश क्रमसे ३१० । ३२६ यह होय तो बुध शुक्रका पूर्वमें अस्त होताहै.

"वक्रोदयादिगदितांशकतोऽधिकाल्पाः केन्द्रांशकाः क्षितिसुताद्विगुणास्त्रिभक्ताः ॥सांकांशका दशहतांगहृताः कुभक्ता वक्राद्यमासदिवसैः क्रमतो गतैष्यम् ॥"

टीका–महोंका वक्र, उदय, अस्त मार्ग इन्होंके जो अन्तिम शीघ्रकेन्द्रांशक है वह उक्त शीघ्रकेंद्रांश और अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रांश इनका अन्तर करके अन्तरांश क्रमसे भौमका दूना करना बुधको३ से भाग देना, गुरुको १० से गुणके ९ से भाग देना। शुक्रको२०मे गुणके ६ से भागदेना और शनिको १ से भाग देना तो भागाकार जो आवे सो वह दिन भया, अनन्तर उक्त शीघ्रकेन्द्र अभीष्टशीघ्रकेन्द्रांश अधिक होय तो वक्र उदय अस्त और

मार्ग यह होयके उतने दिन भये ऐसा जानना और जो उक्त शीघ्रकेन्द्रसे अभीष्ट केन्द्रांश कमती होय तो वक्र, उदय, अस्त और मार्ग यह होनेको इतने दिन आगे होगा ऐसा समझना.

खगाः स्पष्टाः सजवाः ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श	रा.	के.	लङ्कोदयपल.		
०	९	४	११	९	१०	२	४	१०	मे.	२७८	मी.
१३	९	११	२१	८	२६	१३	२१	२१	वृ.	२९९	कु.
१०	२२	४	२०	१२	९६	२१	४०	४०	मि.	३९३	म.
४२	३९	१६	९३	३७	४	४९	८	८	क.	३२३	ध.
२८	७३१	२	१४	९ व	९४	४	३	३	सिं.	२९९	वृ.
१६	४३	२	४४	२६	३८	२९	११	११	क.	२७८	तु.

लग्न बनानेके लिये लंकोदयसे स्वदेशोदय लानेकी रीति ।

लङ्कोदया नागतुरङ्गदस्रा २७८ गोङ्काश्विनो २९९ रामरदा ३२३ विनाड्यः ॥ क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखण्डकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थाश्च विहीनयुक्ताः ॥

लंकामें मेषराशिका उदय २७८ पल, वृषभराशिका उदय २९९ पल, मिथुनराशिका उदय ३२३ पल, कर्कराशिका उदय ३२३ पल, सिंहराशिका उदय २९९ पल, कन्याशिका उदय २७८ पल रहताहै और लंकामें तुलाराशिसे मीनराशितक उदयके पल कन्याराशिसे उलटा मेषराशितक लिखाहै सो जानना । जिस देशका उदय करना होय उस देशका चरखंड क्रमसे मेष वृष मिथुनका पलात्मक जो उदय उसमें कम करना और वहीं चरखंड उलटा कर्क सिंह कन्या इनका जो पलात्मक उदय उसमें युक्त करना तो स्वदेशका उदय मेषसे कन्यातक होता है और वहीं उलटा तुलासे मीनतक होता है ।

स्वदेशोदय बनानेका उदाहरण कहते हैं-

मेषका पलात्मक उदय २७८ इसमेंसे प्रथम चरखंड ७० पल कम किया

तो २०८ यह पलात्मक स्वदेशका मेषका उदय, वृषभका पलात्मक उदय
२९९ इसमें द्वितीय चरखण्ड ५६ यह कम किया तो २४३ यह स्वदे-
शका वृषका उदय, मिथुनका उदय ३२३ इसमें तृतीय चरखण्ड २३ यह
कम किया तो ३०० यह मिथुनका स्वदेशी उदय, कर्कका उदय ३२३
सिंहका उदय २९९ कन्याका उदय २७८ इन सबमें क्रमसे २३।५६।७०
यह युक्त किया तो क्रमसे कर्कका ३४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८
यह पलात्मक स्वदेशका लग्न भया अब यह उलटी रीतिसे तुलाका ३४८
वृश्चिकका ३५५ धनका ३४६ मकरका ३०० कुम्भका २४३ मीनका
२०८ यह पलात्मक स्वदेशका उदय भया ।

स्वदेशोदय		
मे.	२०८	मी
	२४३	कुं.
	३००	म.
	२४६	ध.
	२९९	वृ
	३४८	तु

लग्न वनानेका प्रकार ।

तात्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः
खत्र्युद्धृता भोग्यकालः ॥ एवं यातांशैर्भवे-
द्यातकलो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥
तदनुजहीहि ग्रहोदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् ।
हितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥
यतोल्पेष्टकालात्खरामाहतात्स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः ।
त्ततनुः निशि तु सषड्भार्कात्स्यात्तनूरिष्टकाले ॥ ”

कालका लग्न करना होय उस कालका स्पष्ट सूर्य करके उसमें अय-
करना जो अंक आवै उसमेंसे राशिका त्याग करके जो अंशा-
रहे सो भुक्त होता है और जो भुक्त है सो ३० अंशमें कम
ादि भोग्यफल होता है अनन्तर पूर्वमें जिस राशिका त्याग किया
युक्त करके तत्तारिमित राशिके उदयसे भुक्त और भोग्य

गुण देना । जो गुणाकार आवे उसको ३०से भाग देना । जो भा... सो क्रमसे भुक्तकाल और भोग्यकालका पल होता है। अब अभी... जो होय उसका पल करके उसमें भोग्यकालका पल कम करना। रहे उसमेंसे जिस उदयसे गुणन किया होय उसके आगेके जितने पला... उदय कम होय उतने कम करना और जो पलात्मक शेष रहे उसको ३... से गुणके जो गुणाकार आवे उसको जो उदय कम न भया हो उसके भाग देके फल अंशादि आवेगा उसमें मेष राशिसे जितना राशिका उ... कम भया होय उतनी राशि युक्त करना । जो फल आवे उसमें अयनांश कमती करना तो अभीष्टकालका राश्यादि लग्न होता है ।

भुक्तकालसे लग्न करना होय तो अभीष्टकाल रखते वक्त जो इष्ट घटी पल होय उसको ६० में घटायकर जो शेष रहे उसको अभीष्टका रखना। भुक्त घटायकर जब लग्न घटावे उस वक्त उलटा लग्न घटावे जैसे मेषके उदयसे गुणै तो मीन कुम्भादिक कमती करै और सब क्रिया भोग्यवत् करै ।

रात्रिका लग्न करना होय तो स्पष्ट सूर्यमें ६ राशि युक्त करना । अनन्तर पूर्व रीति प्रमाण लग्न बनावना परंतु अभीष्टकाल रखते वक्त जो इष्ट काल हो उसमें दिनमान कम करके जो शेष रहे सो अभीष्ट रखना ।

जन्मकाल सूर्योदयसे ३२ घटिका १ पल पर है उसी वक्तका लग्न साधन करते तात्कालिक स्पष्ट सूर्य ०० । १३ । १० । ४२ । इसमें अयनांश २२ ।४४। ०३ यह युक्त करके १ ।५।५४।४५ यह सायन सूर्य भया । इसकी राशि त्याग करके ५।५४।४५ यह भुक्त भया । यह ३० अंशमें कम करके अंशादि२४।०५।१५ यह भोग्य भया ।।यह वृषभराशिका भोग्य है जिसलिये पहिले राशिस्थानमें एक अंक था इसलिये वृषके उदय इस२४३ से गुणके अंशादिफल५८५३ कला १५ विकला४५ भया । इसको ३० से भाग देके १९५।३।१५।४५ यह पलात्मक भोग्यकाल भया । इसही प्रकार

भुक्त पल साधन करना। अब सूर्योदयसे अभीष्ट घटी ३२ पल०१ इसका पल किया तो १९२१ इसमें भोग्यकाल १९५।३।१५।४५ यह कम करके शेष १७२५।२६।४४।१५ यह इसमें मिथुनोदय ३००, कर्कोदय ३४६, सिंहोदय ३५५, कन्योदय ३४८, तुलोदय ३४८ यह कम करके शेष२८पल बचे। इसमें वृश्चिकोदय कम होता नहीं इसवास्ते शेष पल२८को ३० से गुणके नीचेका अंश२६युक्त करके८६६यह भया। इसको वृश्चिकोदय ३५५ से भाग देके अंश२लब्ध भया। शेष १५६ को६०से गुणा तो ९३६० भया। इसमें कला ४४ युक्त किया तो यह९४०४भया। इसमें ३५५ से भाग देनेसे कला२६भया। शेष१७४रहा। इसको ६० से गुणा तो १०४४० इसमें विकला १५ युक्त किया तो १०४५५ यह भया। इसको वृश्चिकोदय ३५५ से भाग देनेसे२९विकला प्राप्त भई। अब पूर्वमें प्राप्त भया अंशादि०२।२६।२९ यह है इसमें मेषादि शुद्ध पर्यंत राशि ७ युक्त किया तो ७।२।२६।२९ भया।इसमें अयनांश २२।४४।३कम किया तो राश्यादिक लग्नस्पष्ट भया.६।९।४२।२६ इसमें ६ राशि युक्त किया तो यह००।९।४२।२६ सप्तम भाव भया.

अभीष्टकालमें भोग्यकाल कमती न होय तो लग्न बनानेकी रीति।

पलात्मक अभीष्टकालको ३० से गुणके उसको सायन ग्रहकी जो राशि होय उस राशिके उदयसे भाग देके अंशादि फल जो आवेगा वह स्पष्टसूर्यमें युक्त करना तो इष्टकालका लग्न होता है।

लग्नसे अभीष्टकाल करनेकी रीति।

"अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥ यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशान्तरहत उदयः स्यात्खाग्निहृत्विष्टकालः। इनत उदय ऊनश्चेत्स शोध्यो द्युरात्रात् ॥"

टीका—लग्नमें अयनांश युक्त करके जो अंक आवै उससे भुक्त करना और स्पष्ट सूर्यसे भोग्यकाल करना अनंतर सायन लग्न और सूर्य इनके मध्यके जो उदय होय उनका अंक उसमें भुक्तकाल और कालका अंक युक्त करना तो पलात्मक अभीष्टकाल होता है ।

सायनलग्न और सायन सूर्य एक राशिमें होय तो लग्नसे ... साधनका उपाय यह है कि, सायनलग्न और सायन सूर्य इनका अंतर क उसको सायन सूर्यके उदयसे गुणके ३०से भाग देना जो भागाकार आवे पलात्मक अभीष्टका होता है. जो सायन सूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कम होय तो पूर्व प्रमाण साधन किया जो कला सो ६० मेंसे कम करना तो इ काल होता है. ऊपर कहा वैसा प्रमाण जन्मकालका लग्न ६।१।४२।२ यह इसमें ६ राशि युक्त किया तो यह सप्तम भाव हुआ ०।१।४२।२६।

जगदीशेन रचिते केशवीग्रन्थटिप्पणे ।
स्पष्टाधिकारः पूर्णोऽयं तद्भावार्थप्रकाशकः ॥ १ ॥

इति स्पष्टाध्यायः ॥ १ ॥

अथ भावाध्यायः २.

नतोन्नतपूर्वकदशमचतुर्थभावसाधन ।

रात्रेः शेषमितं युतं दिनदले नाह्नो गतं शेषकं
विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं चोन्नतम् ॥
यत्पूर्वोन्नतपङ्भयुक्तरवितः पश्चान्नतादित्यतो
यच्छ्रोदयकैश्च लग्नमिव तन्माध्यं सपङ्भं सुखम् ॥ २ ॥

अन्वयः—रात्रेः शेषं वा इतं (गतं) दिनार्द्धेन युतम् अह्नो दिनस्य गतं शेषकं दिनदलेन विश्लेष्यं खल्विति निश्चयेन क्रमेण पूर्वपश्चिमनतं स्यात् तत् त्रिंशच्च्युतं च पुनः उन्नतं स्यात् । पूर्वोन्नतषड्युक्तरवितः लंकोदयैर्लग्नवि

यद्दशमं तन्माध्यं दशमं स्यात् । एवं पश्चान्नतादित्यतः केवलाकोंद्धंकोदयैर्लग्नमिव यद्दशमं तद्दशमं स्यात् स च षड्भयुक्तः सुखं चतुर्थं स्यात् ।

भाषा—दिनमें पूर्व नत,दिनमें पश्चिम नत,रात्रिमें पूर्व नत, रात्रिमें पश्चिम नत ऐसा चार प्रकारका नत होता है. मध्यरात्रिके अनंतर जो शेष रात्रि होय उसमें दिनार्द्ध युक्त करना तो रात्रिका पूर्वनत होता है और मध्यरात्रिके पूर्वमें जो गत रात्रि हो उसमें दिनार्द्ध युक्त करना तो रात्रिका पश्चिम नत होता है और मध्याह्नके पूर्व जो दिनगत घटिका होय वह दिनार्धघडीमेंसे कम करना तो दिनका पूर्वनत होता है और मध्याह्नके अनन्तर जो दिनशेष होय वह दिनार्द्धमेंसे कम करना तो दिनमेंका पश्चिम नत होता है यह नत ३० में कम करनेसे उन्नत होता है यह पूर्वनत कम करै तो पूर्वोन्नत होता है और पश्चिम नत कम करै तो पश्चिमोन्नत होता है. पूर्वोन्नत आया होय तो उन्नतको इष्टकाल कल्पना करके तात्कालिक सूर्यमें ६ राशि युक्त करके लंकोदयसे पूर्वरीति प्रमाण लग्न साधनके ऐसा लग्न साधन करै और पश्चिमनत आया होय तो नतको इष्टकाल कल्पना करके तात्कालिक सूर्यसे लग्नके प्रमाण लंकोदयसे लग्न साधन करै तो दशम भाव होता है. दशम भावमें ६ राशि युक्त करे तो चतुर्थ भाव होता है ।

उदाहरण.

मध्याह्नके अनन्तर शेष ०।४१ दिन इसको दिनार्द्ध १६।२१ में कम करके १५।४०यह पश्चिम नत भया। इसको ३० में कम किया तो पश्चिमोन्नत १४।२० भया। अब नत १५।४० को इष्ट मानकर तात्कालिक सूर्य ००।१३।१०।४२ इसमें अयनांश २२।४४।०३ युक्तकरके ०१।५।५४।४५ यह भुक्तांश भया। इसको ३० में कम किया तो २४।५।१५ यह

१ बरोबर मध्याह्नमें जन्म होय तो तात्कालिक सूर्यही दशम भाव होता है अथवा बरोबर मध्यरात्रिमें जन्म होय तो तात्कालिक सूर्य चतुर्थ भाव होता है ।

भोग्यांश भया इसको लंकोदय वृषका मान२९९ से गुणा तो७२०२।१।
४५ इसको ३० से भाग दिया तो २४०।२।१।४५ यह भोग्यकाल पल-
त्मक भया ।इसको नत१५।४०इसकी पल९४० में कम किया तो६९१।
२७।५०।१५ इसमें मिथुनोदय ३२३, कर्कोदय ३२३, यह कम करते
शेष ५३।२७।५०।१५ इनमें सिंहोदय२९९कम नहीं होता इसवास्ते शे
५३ को ३० से गुणा तो १५९० इसमें नीचेका अंश २७ युक्त किया तो
१६१७ इसको सिंहोदय २९९ से भाग दिया तो अंशादि ५ ।५४।३
इसमें मेषादि शुद्ध पर्यंत राशि ४ युक्त किया तो ४।५।२४।३८इसमें अ
नांश २२।४४।३ हीन किया तो यह ३।१२।४०।३४ दशम भया ।इस
६ राशि युक्त किया तो ९।१२।४०।३४ यह चतुर्थ भाव भया ॥ २

भावसन्धिसाधनं क्षयचयफलसाधनं च ।

त्र्यंशो व्यस्तखभस्य भूयमहतो योऽन्यस्तनौ द्विच्युतौ
वंधो तेऽपि च सांगभास्तनुमुखाः संधिर्द्वियोगोर्द्धितः ॥
शून्यं सन्धिषु भावगेऽखिलफलं स्याद्भावसन्ध्यन्तरे-
णाप्तं सन्धिखगान्तरं क्षयचयं भावाधिकेऽल्पे खगे ॥ ३ ॥

अन्वयः—व्यस्तखभस्य त्र्यंशो भूयमहतस्तनौ योज्यस्तदा द्वितीयतृ
तीयभावौ भवतः विगतमस्तं यस्मात्खभात्तद्व्यस्तखभं तस्येत्यर्थः स
त्र्यंशो द्विच्युतो द्वाभ्यां च्युतो भूयमहतश्चतुर्थभावे योज्यस्तदा पंचमषष्ठभा
भवतः ।एकगुणितयुक्ते पंचमभावः, द्विगुणितयुक्ते षष्ठभावः स्यादित्यर्थ
तेऽनंतरानीताश्चत्वारो भावाः सांगभाः षड्राशिसहितास्तदाऽष्टमनवमैका
भावाः स्युः।अपिचशब्दावनुक्तबोधकौ।चत्वारो भावाः प्रथमं साधितास्त
भकमित्यर्थः । अय संधिः—संधिर्द्वियोगोऽर्द्धितः, द्वयोर्योगे द्वियोगोऽर्द्धि
द्यमानः सन् संधिः या प्रथमभावस्य विरामसंधिर्द्वितीयस्यारामसंधिर्भवती
संधिसमे ग्रहे शून्यं फलं स्यात् । भावगे भावांशादिसमे अखिलं संपूर्णं
फलमित्यर्थः । भावाधिके ग्रहे सति संधिखगयोरंतरं भावसंध्य

भक्तं क्षयाप्यं फलं स्यात्। भावाल्पे खगे सन्धिखगान्तरं भावसन्ध्यन्तरेणाप्तं भक्तं सत्क्षयचयाप्यं स्यात्, तयोः खरोहारोहसंज्ञा च स्यात्।

भाषा—दशम भावोंसे सप्तम भाव कम करके जो शेष रहे उसका तृतीयांश लग्नमें युक्त करना तो द्वितीय भाव होता है, वही तृतीयांश दूना करके लग्नमें युक्त करे तो तृतीय भाव होता है, और वही तृतीयांश २ राशिमें कम करके जो शेष रहे सो चतुर्थ भावमें युक्त करना तो पञ्चम भाव होता है, वही शेष दूना करके चतुर्थ भावमें युक्त करना तो षष्ठ भाव होता है। अब इन द्वितीय तृतीय पञ्चम षष्ठ भावोंमें छः ६ राशि युक्त करें तो क्रमसे अष्टम नवम एकादश द्वादश और पूर्वोक्त प्रथम सप्तम चतुर्थ दशम यह तन्वादि द्वादश भाव होते हैं। दो भावोंको युक्त करके उसका अर्द्ध करें तो संधि होती है सो ऐसी प्रथम द्वितीय भावका योग अर्द्ध करें तो प्रथम भावकी विराम संधि और द्वितीय भावकी आरंभसंधि होती है। इसी प्रमाण द्वादश भावकी संधि होती हैं।

विशेष।

यह सन्धि करनेके वक्त भावयोग १२ से अधिक आवे तो उसमेंसे १२ कम नहीं करना अथवा भाग ०० होय तो योग करनेके वक्त ० के बदलेमें १२ लेना नहीं। सन्धितुल्य ग्रह होय तो शून्य फल और भाव तुल्य ग्रह होय तो पूर्ण फल ग्रह भावसे कमती होय तो वह ग्रहमेंसे आरम्भसन्धि कम करना वा ग्रह भावसे अधिक होय तो उस ग्रहमेंसे विरामसन्धि कम करना अनन्तर जो अन्तर आवे उसको भावसंधिके अन्तरसे भाग देना तो

---

१ ग्रह आरम्भसन्धि कमती होय तो पीछेके भावका फल देता है और विराम सन्धिसे अधिक होय तो आगेके भावका फल देता है।

२ चतुर्थ भावमेंसे प्रथम भाव कम करके जो शेष रहे उसका षष्ठांश प्रथम भावमें युक्त करना तो प्रथमभावकी विरामसन्धि और द्वितीय भावकी आरम्भसन्धि होती है और यह सन्धिके यही षष्ठांश युक्त करे तो धनभाव होता है इसी प्रमाण षष्ठांश युक्त करनेसे सन्धि व ग्रह चतुर्थ

ग्रहभावफल होता है । वह ग्रह भावसे अधिक होय तो क्षय (अवरोह) फल, अथवा ग्रह भावसे कमती होय तो चय (आरोह) फल जानना।

उदाहरण—यह दशम भाव ३।१२।४०।३४ इसमेंसे सप्तम भाव ०।१। ४२।२६ कम करके ३।२।५८।८ यह भया । इसका तृतीयांश १।०।२१। २२।४० इसमें लग्न ६।१।४२।२६।० युक्त करके ७।१०।४१।४८।४० यह द्वितीय भाव भया।तृतीयांशको दूना २।१।५८।४५।२० में लग्न६।१। ४२।२६।० युक्त करके ८।११।४१।११।२०यह तृतीय भाव भया। यह तृतीयांश १।०।२९।२२।४० इसको२ राशिमें कम करके शेष०।२९। ०।३७।२० यह इसमें चतुर्थ भाव १।१२।४०।३४।० युक्त करके १।० ११।२३।११।२०यह पंचम भाव भया।यही शेष दूना१।२८।१।१४।४० को चतुर्थ भाव १।१२।४०।३४।० युक्त करके ११।१०।४१।४८।४० यह षष्ठभाव भया। अब द्वितीय, तृतीय, पंचम, षष्ठ यह भावोंमें ६ राशि करके युक्त करे तो अष्टम, नवम, एकादश, द्वादश यह स्पष्टभाव होते हैं।

लग्न६।१।४२।२६।० द्वितीय भाव ७।१०।४१।४८।४० इनका योग १३।१२।२४।१४।४० इसका अर्ध ६।२५।१२।०७।२० यह प्रथम भावकी विरामसंधि और द्वितीय भावकी आरंभसन्धि होती है। इसी प्रकार [illegible] करना अथवा चतुर्थभाव १।१२।४०।३४।० में लग्न ६।१।४२।२६।० कम किया तो ३।२।५८।८ यह भया । इसका षष्ठांश ०।१५।२९।४।१२।२० इसमें लग्न ६।१।४२।२६।० युक्त किया तो६।१७।११।०।२० यही [illegible] क्रमसे युक्त करना तो सन्धिसहित चार भाव होते हैं । पुनः षष्ठांशको १ में हीन करना चतुर्थ भावमें युक्त करना तो [illegible] सन्धिसहित होता है । आगे पूर्वोक्तवत् ।

[illegible]

१	०	१२	०	३	०	४	०	५	०	६	०	भा.
६ ९ ५२ २६ ०	६ २५ १२ ७ २०	७ १० ४१ ४८ ४०	७ २६ ११ ३० ०	८ ११ ४१ ११ २०	८ २७ १० ५२ ४०	९ १२ ४० ३४ ०	९ २७ १० ५२ ४०	१० ११ ४१ ११ २०	१० २६ ११ ३० ०	११ १० ४१ ४८ ४०	११ २५ १२ ७ २०	
७	**०**	**८**	**०**	**९**	**०**	**१०**	**०**	**११**	**०**	**१२**	**०**	**भा.**
० ९ ४२ २६ ०	० २५ १२ ७ २०	१ १० ४१ ४८ ४०	१ २६ ११ ३० ०	२ ११ ४१ ११ २०	२ २७ १० ५२ ४०	३ १२ ४० ३४ ०	३ १७ १८ ५२ ४०	४ ११ ४१ ११ २०	४ २६ ११ ३० ०	५ १० ४१ ४८ ४०	५ २५ १२ ७ २०	

क्षयचयोदाहरण-सूर्य०।१३।१०।४२यह निकट भाव सप्तम०।९।४२।२६ इससे अधिक है इसवास्ते सूर्य इस भावकी विरामसंधि ०।२५।१२।०७ में कम करके ०।१२।०१।२५ इसकी विकला ४३२ ८५ यह अंतर इसको सप्तम भाव ०।९।४२।२६ और विराम संधि० ।२५। १२०७इसका अंतर ०।१५।१८।४१इसकी विकला ५५७८१ इसे भाग देके ००।४६।३३ यह सूर्यका भाव फल भया यह फल सूर्य निकट भावसे अधिक है इस वास्ते क्षय जानना इसी प्रमाण सर्व ग्रहोंका भाव फल करना इति ॥ २ ॥

जन्मलग्नमिदम्।

भावोद्धारचक्रमिदम्।

ग्रहभावफलचक्रम्।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	
४६	३१	५७	१५	४९	३	५३	फ०
३३	४४	३७	५६	४२	४	३१	
क्षय	चय	चय	क्षय	चय	चय	क्षय	

जगदीशेन रचिते केदारीग्रंथटिप्पणे। भावाधिकारः पूर्णोऽयं तद्भाषार्थप्रकाशकः ॥२॥

इति भावाध्यायः ॥ २ ॥

स्थानमें लेना परंतु जिस वक्त गुरु द्रष्टा होय उस वक्त ऊपरका बाकी राश्यंक ८ किंवा ४ आवै तो और शनि द्रष्टा होय तो बाकी राश्यंक ९ किंवा २ और मंगल द्रष्टा होय तो बाकी राश्यंक ७ किंवा ३ होय तो उसी ठिकाने ऊपर लिखा जो दृष्टिफलांक सो न लेना, ४ दृष्टिफलांक लेना अनन्तर दृष्टिफलांकको दृष्टिफलांकके आगेके अंककी क्षय किंवा वृद्धि जो आवे उससे ऊपरका जो शेष राश्यंकके नीचे भागादिक है उसको गुणके जो गुणाकार आवै उनको ३० भाग देके जो फल आवै उससे संस्कार करना आगेका अंक कमती होय तो यह दृष्टिफलांकमेंसे कम करना अथवा आगेका अंक ज्यादा होय तो यह दृष्टिफलांकमेंसे युक्त करना । अनन्तर यह संस्कृत दृष्टिफलांकको ४ से भाग देना जो फल आवै यह ग्रहकी दृष्टि होती है। ऊपरके श्लोकसे ग्रह तथा भावदृष्टि करनेमें बहुत परिश्रम पडता है इसवास्ते नीचे लिखी जो सारणी उसपरसे बहुत जलदी दृष्टि फल आता है.

दृष्टिफलसारिणीप्रवेश ।

श्लोकमें कहा उस प्रमाणसे दृश्यमेंसे द्रष्टा कम करके जो राश्यादिक शेष रहे उस प्रमाण सारिणीमेंसे फल लेना सो ऐसा सारिणीके बाँये तरफ राशिकोष्ठक लिखा है और ऊपरकी तरफ अंशकोष्ठक लिखा है जो इष्टराशिका फल लेना होय तो राशिकोष्टकके सामने इष्टांशकोष्टकके नीचेका भागादि फल लेके इष्टांशके नीचे जो कला विकला होय उसको राशिकोष्टकके सामने सारणीके दहने तरफ जो गुण लिखा है उससे गुणके जो गुणाकार आवै उनको गुणके नीचे जो हर लिखा है उससे भाग देके जो विकलात्मक फल आवे सो लिया जो फल उसको गुण हरके पास धन ऋण लिखा है उस प्रमाण युक्त करना किंवा कम करना सो दृष्टि होती है। अथवा श्लोकरीति-ग्रहा दृश्यमें कम करके जो राश्यंक बाकी रहे उसको नीचेका अंक लेकर आगेकी राशि-

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशी
०	१५	४५	३	०	६०	४५	३०	१५	०	०	०	कला

श. म. बृ. मं. बृ. श.
६० ६० ६० ६० ६० ६०

का नीचेका अंक लेके अंतर करै जो अंतर आवै उससे नीचे जो भागादि
होय तो गुण देना फिर ३ से भाग देना आवे सो फलांकमें संस्कार करना
सो ऐसा कि आगेका अंक जादा होय तो युक्त करना पिछलेसे आगेका
कमती होय तो पिछलेमें घटा देना तो दृष्टि होती है. यह दूसरा प्रकार होता

द्रष्टा दृश्यमें कम करके जो १ राशि रहै तो अंशादिकको आधा करे तो
दृष्टि होय और २ राशि बचे तो अंशमें १५ युक्त करे तो दृष्टि होय और
तीन राशि रहे तो अंशादिक आधा करै और उन अंशोंको ४५ में घटाय
तो दृष्टि होय और चार राशि रहै तो अंशादिकको ३० में घटावै तो दृष्टि
होय और ५ राशि रहै तो अंशादिक दूना करै तो दृष्टि होय और ६।७
८।९ राशि बचैं तो राश्यादिक १० में शोधै अंश करै पीछे आधा करै तो
दृष्टि होय और १०।११।०० राशि बचै तो दृष्टि नहीं होय और मंगलकी
करै तो ३।७ राशि बचै तो अंशको ६० में घटाय दे तो दृष्टि हो और ः
राशि बचै तो अंशादिक आधा करै फिर उसीमें आधा जोडै और १५ जोडै
तो दृष्टि हो और ६ राशि ऊपर होय तो १०० दृष्टि होय और गुरु दृष्टि
करे जब तो राशि बचै तो अंशादिक आधा करै अंशमें ४५ जोड दे तो
दृष्टि होय और चार राशि ऊपर होय तो अंशादिक दूना करै पीछे ६० में
घटावै तो दृष्टि होय और ८ राशि ऊपर होय तो अंशादिक आधा कर
सहित करै । फिर ६० में घटाय दे तो दृष्टि होय शनैश्चरकी दृष्टि करे तो
१राशि ऊपर होय तो अंशादिक दूना करै दृष्टि होय राशि८होय तो अंशों
३० जोडै तो दृष्टि होय और २ राशि होय तो अंशादिक आधा करै ६०
में घटाय दे तो दृष्टि होय और ९ राशि ऊपर बचै तो अंशादिक दूना करै
६० में घटाय दे तो दृष्टि होय ॥ १ ॥ इति दृष्टि तीसरी रीति ।

रविचंद्रबुधशुक्रदृष्टिसारिणी.

राशि	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०
मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वृष	१	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मिथुन	२	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कर्क	३	४५	४४	४४	४३	४३	४२	४२	४१	४१	४०	४०	३९	३९	३८	३८
		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
सिंह	४	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क.	५	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
		१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
तुल	६	०	५९	५९	५८	५८	५७	५७	५६	५६	५५	५५	५४	५४	५३	५३
		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वृश्चि.	७	४५	४४	४४	४३	४३	४२	४२	४१	४१	४०	४०	३८	३९	३९	३८
		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
धन	८	३०	२९	२९	२८	२८	२७	२७	२६	२६	२५	२५	२४	२४	२३	२३
		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मकर	९	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	११	११	१०	१०	९	९	८	८
		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कुंभ	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मीन	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविचंद्रबुधशुक्रदाशसारिणी.

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	१गु.	ध
७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४		
३०	०	३०	०	३	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	२भा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१गु	ध.
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२भा'	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१गु.	ऋ
३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	.	३	०	३	०	३०	२भा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१गु.	ऋ
१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२भा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१गु.	ध.
३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२भा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१गु.	ऋ.
५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	२भा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१गु.	ऋ
३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	२भा	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१गु	ऋ.
२२	२२	२१	२१	२०	२०	१९	१९	१८	१८	१७	१७	१६	१६	१५		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	२भा	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१गु.	ऋ
७	७	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१	०		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	२भा.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सौम्यदृष्टिः ।

राशि	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
वृष	१	० ० ०	० ० ३०	० १ ०	० १ ३०	० २ ०	० २ ३०	० ३ ०	० ३ ३०	० ४ ०	० ४ ३०	० ५ ०	० ५ ३०	० ६ ०	० ६ ३०	० ७ ०
मि.	२	० १५ ०	० १६ ३०	० १८ ०	० १९ ३०	० २१ ०	० २२ ३०	० २४ ०	० २५ ३०	० २७ ०	० २८ ३०	० ३० ०	० ३१ ३०	० ३३ ०	० ३४ ३०	० ३६ ०
कर्क	३	० ० ०	० ५९ ०	० ५८ ०	० ५७ ०	० ५६ ०	० ५५ ०	० ५४ ०	० ५३ ०	० ५२ ०	० ५१ ०	० ५० ०	० ४९ ०	० ४८ ०	० ४७ ०	० ४६ ०
सिंह	४	० ३० ०	० २९ ०	० २८ ०	५ २७ ०	० २६ ०	० २५ ०	० २४ ०	० २३ ०	० २२ ०	० २१ ०	० २० ०	० १९ ०	० १८ ०	० १७ ०	० १६ ०
क.	५	० ० ०	० २ ०	० ४ ०	० ६ ०	० ८ ०	० १० ०	० १२ ०	० १४ ०	० १६ ०	० १८ ०	० २० ०	० २२ ०	० २४ ०	० २६ ०	० २८ ०
तुल	६	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०
वृश्चि	७	१ ० ०	० ५९ ०	० ५८ ०	० ५७ ०	० ५६ ०	० ५५ ०	० ५४ ०	० ५३ ०	० ५२ ०	० ५१ ०	० ५० ०	० ४९ ०	० ४८ ०	० ४७ ०	० ४६ ०
धन	८	० ३० ०	० २९ ३०	० २९ ०	० २८ ३०	० २८ ०	० २७ ३०	० २७ ०	० २६ ३०	० २६ ०	० २५ ३०	० २५ ०	० २४ ३०	० २४ ०	० २३ ३०	० २३ ०
मक.	९	० १५ ०	० १४ ३०	० १४ ०	० १३ ३०	० १३ ०	० १२ ३०	० १२ ०	० ११ ३०	० ११ ०	० १० ३०	० १० ०	० ९ ३०	० ९ ०	० ८ ३०	० ८ ०
कुंभ	१०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मीन	११	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

भौमहारिः ।

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु १	ध.
७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	मा.२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु.३	ध
३७	३९	४०	४२	४३	४५	४६	४८	४९	५१	५२	५४	५५	५७	५८		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	मा.२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु.१	ऋ.
४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु.१	ऋ.
१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा. १	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु.२	ध.
३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.१	
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु.१	ऋ.
४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु.१	ऋ.
२२	२२	२१	२१	२०	२०	१९	१९	१८	१८	१७	१७	१६	१५	१५		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	मा.२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. १	ऋ.
७	७	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१	०		
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	मा.२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिद्राष्टः ।

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	गुर	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५	गु१	ऋ
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	मा२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	गु१	ऋ.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	मा२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	१	गु२	ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	गु१	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५	गु१	ऋ.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	मा२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	गु१	ऋ.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	मा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	गु१	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	गु३	ऋ
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुहरिः ।

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९		
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
० ७ ३०	० ८ ०	० ८ ३०	० ९ ०	० ९ ३०	० १० ०	० १० ३०	० ११ ०	० ११ ३०	० १२ ०	० १२ ३०	० १३ ०	० १३ ३०	० १४ ०	० १४ ३०	गु १ मा २	ध.
० ३० ०	० ३१ ०	० ३२ ०	० ३३ ०	० ३४ ०	० ३५ ०	० ३६ ०	० ३७ ०	० ३८ ०	० ३९ ०	० ४० ०	० ४१ ०	० ४२ ०	० ४३ ०	० ४४ ०	गु. १ मा १	ध.
० ५२ ३०	० ५३ ०	० ५३ ३०	० ५४ ०	० ५४ ३०	० ५५ ०	० ५५ ३०	० ५६ ०	० ५६ ३०	० ५७ ०	० ५७ ३०	० ५८ ०	० ५८ ३०	० ५९ ०	० ५९ ३०	गु १ मा २	ध.
० ३० ०	० २८ ०	० २६ ०	० २४ ०	० २२ ०	० २० ०	० १८ ०	० १६ ०	० १४ ०	० १२ ०	० १० ०	० ८ ०	० ६ ०	० ४ ०	० २ ०	गु. २ भा १	ऋ.
० ३० ०	० ३२ ०	० ३४ ०	० ३६ ०	० ३८ ०	० ४० ०	० ४२ ०	० ४४ ०	० ४६ ०	० ४८ ०	० ५० ०	० ५२ ०	० ५४ ०	० ५६ ०	० ५८ ०	गु २ भा १	ध.
० ५२ ३०	० ५२ ०	० ५१ ३०	० ५१ ०	० ५० ३०	० ५० ०	० ४९ ३०	० ४९ ०	० ४८ ३०	० ४८ ०	० ४७ ३०	० ४७ ०	० ४६ ३०	० ४६ ०	० ४५ ३०	गु. १ भा २	ऋ.
० ५२ ३०	० ५३ ०	० ५३ ३०	० ५४ ०	० ५४ ३०	० ५५ ०	० ५५ ३०	० ५६ ०	० ५६ ३०	० ५७ ०	० ५७ ३०	० ५८ ०	० ५८ ३०	० ५९ ०	० ५९ ३०	गु १ भा २	ध.
० ३७ ३०	० ३६ ०	० ३४ ३०	० ३३ ०	० ३१ ३०	० ३० ०	० २८ ३०	० २७ ०	० २५ ३०	० २४ ०	० २२ ३०	० २१ ०	० १९ ३०	० १८ ०	० १६ ३०	गु. ३ भा	ऋ.
० ७ ३०	० ७ ०	० ६ ३०	० ६ ०	० ५ ३०	० ५ ०	० ४ ३०	० ४ ०	० ३ ३०	० ३ ०	० २ ३०	० २ ०	० १ ३०	० १ ०	० ० ३०	गु १ भा २	ऋ.
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

दृष्टि उदाहरण ।

द्रष्टा चन्द्र ९।५।२२।३५ यह दृश्य सूर्य००।१३।१०।४२ से क करके शेष ३।७।४८।७ यह है. इसवास्ते चन्द्रदृष्टिफलसारिणीमें ३ तृतीयराशि कोष्ठकके सामने ७ अंशके नीचेका फल ०।४१।३० इसको इष्ट अंशके नीचे कला ४८, विकला ७ है. इसको राशि-कोष्टक ३ के सामनका गुण १ से गुणके कला ४८ विकला ७ इसको गुणके नीचेका हर २ से भाग दक २४।०३ यह विकलादि फलसारिणीमें ऋण लिखा है इसवास्ते पूर्वमें लिया जो फल ०।४१।३० है इसमेंसे कम करके ०।४१।०६ यह चन्द्रकी सूर्यके ऊपर दृष्टि भई। इसी प्रमाण सब ग्रहोंकी दृष्टि ग्रहोंपर और भाव पर सारिणी परसे करना, द्रष्टा दृश्यमेंसे कम करके ३।७।४८।७ इसवास्ते ३ राशिके नीचेका अंक ४५ आगेकी राशि ४ इसके नीचेका अंक ३० इसका अन्तर १५ इससे भागादिको गुणके ११७।१।४५ इसको ३० से भागदिया तो ३।५४, अब अगली राशिका अंक कमती है. इसवास्ते ४५ में ३।५४ कम किया तो ४१।६ यह चन्द्रकी दृष्टि भई। ऊपर राशिके स्थानमें ०० धर देना। तीसरी विधि दृष्टिकी अंशादिक ७।४८।७ अर्द्ध किया तो ३।५४।३, इसको ४५ में कम किया तो ००।४१।०६ पूर्व तुल्य चन्द्र दृष्टि भई ॥ ४ ॥

दूसरी रीति दृष्टि उदाहरण.

मू	घ	भ	बु	वृ.	शु	श	ग्रहा
० ० ०	० १८ ५४	० ३१ ३	० ० ०	० ४ ५८	० ० ०	० १५ ११	सूर्यः
० ५१ ६	० ० ०	० ५२ ९	० ३० २८	० २८ ३५	० १० ४७	० १५ २८	चन्द्रः
० २८ ५७	० ५ ५२	० ० ०	० ४२ ४३	० ० ०	१ ० ०	० ० ०	मंगलः
० ० ०	० ७ ५९	० १० १७	० ० ०	० ३३ ४३	० ० ०	० ३७ १	बुधः
० ४३ २१	० ५८ ३५	० ० ०	० ५९ २६	० ० ०	० ३७ २७	० १२ २५	गुरु
० ८ ७	० ० ०	० २८ १६	० ० ०	० ५४ २२	० ० ०	० ३६ ४७	शुक्रः
० ० ५४	० ४८ ५९	० ५५ २५	० ४५ २	० ४७ ३४	० ४१ ३४	० ० ०	शनिः
१ ३६ ४२	१ ६ ३४	१ २० ४२	१ २४ २५	१ ५६ ४०	० ४८ १४	१ ४२ ११	शुभैक्य
० २१ २१	१ १३ ३६	१ २६ ०८	१ ३३ ४५	० ५२ ३२	१ ४३ ३४	० १५ ११	पापैक्यं

अथ बलसाधनाध्यायः ॥ ४ ॥

नीचोनो भगणाच्च्युतः षडधिकश्चेत्षड्हृदोच्चं बलं
स्वर्क्षेऽर्द्धं समभेऽष्टमस्त्रिचरणा मूलत्रिकोणे बलम् ॥
मित्रर्क्षेऽब्धिरधीष्टभे त्रय इभांशा वैरिभेष्ट्यंशको
दन्तांशोऽप्यरिभे गृहादिपवशात्खेटस्य सप्तैक्यजम् ॥ ९ ॥

सप्तवर्गबलमिदम्.

स्वक्षेत्र	अधिमित्र	मित्र	समः	शत्रु	अधिशत्रु	मूलत्रि	
०	०	०	०	०	० १	०	
३०	२२	१५	७	३	५२	४५	४७
०	३०	०	३०	४५	३०	०	

अन्वयः—नीचोनो ग्रहश्चेत्षडधिको द्वादशराशिभ्यः शुद्धः षड्हृत् औच्चं बलं स्यात् उच्चसम्बन्धी बलमित्यर्थः। अत्रेदं ध्येयम्-उच्चोनग्रहे शेषं षड्राशि-स्तदा षड्भागे रूपं बलं पूर्णबलमिति चेत्षड्भाल्पस्तदा रूपस्थाने शून्यं स्थाप्यम्, पुनः शेषं राश्यादिकं षष्ट्या संगुण्योपरि षड्भाक्तः संलब्धं कला-स्थाने स्थाप्यः। पुनः शेषं षष्ट्या संगुण्य षड्भिर्भागे विकलास्थाने स्थाप्यः एवमंशाद्यमुच्चबलं स्यात्। स्वर्क्षेऽर्द्धमित्यस्यार्थः। स्वर्क्षे स्वगृहे ग्रहे सति अर्द्धरूपार्धं बलं लेख्यम्, समराशिस्थेऽष्टमांशो बलम्, मूलत्रिकोणे त्रय-श्चरणाः, मित्रर्क्षे चतुर्थांशो बलम्, अधिमित्रर्क्षे त्रयोऽष्टमांशाः, शत्रुराशिस्थे षोडशांशबलम्, अधिशत्रुराशिस्थे द्वात्रिंशदंशो बलं स्यादिति सर्वत्र क्रिया-पदम्, सर्वत्र रूपस्थैर्यांशादिकं ग्राह्यम्। अत्र स्वर्क्षेमित्युपलक्षणं किंतु स्वरा-श्यादिस्थितेऽप्यर्द्धं बलं ग्राह्यम्, पुनः इत्यत्र आह-गृहादिपवशादिति। आदि-शब्दाद्धोराद्रेष्काणादयो ग्राह्याः। गृहादीन् पान्ति ये ते गृहादिपाः ग्रहादि-सप्तवर्गस्वामिनो ये सन्ति तद्वशात्स्वर्क्षेऽर्द्धमित्यादीनि खेटस्य सप्तवर्गबलानि ग्राह्याणि सप्तानामैक्याज्जायत इति सप्तैक्यजम् ॥

अर्थः—अब बलाध्याय लिखते हैं—तहाँ बल छः प्रकारके हैं, जैसा कि, स्थान १, दिक् २, काल ३, निसर्ग ४, चेष्टा ५ और दृष्टि ६ इन भेदों करके छः प्रकारके बल हैं, इसके बीचमें १ स्थानबल—उच्च, सप्तवर्ग, युग्मायुग्म, केन्द्रादि, द्रेष्काण इन भेदों करके ५ प्रकारके हैं। २ दिग्बल—एक प्रकारका है। ३ कालबल—नतोन्नत, पक्ष, दिनरात्रिभाग, वर्षमास द्यु होरेश इनभेदों करके ४ प्रकारके हैं। ४ निसर्गबल—एक प्रकारका है। ५ चेष्टाबल—अयन और चेष्टाकेन्द्रज इन भेदों करके २ प्रकारका है। ६ दृष्टिबल—एक प्रकारका है। जिस ग्रहका उच्चबल बनाना होय उस ग्रहमें उसी ग्रहका नीच घटाय देना शेषको ६ से भाग देना तो उच्चसम्बन्धी बल होता है. कदाचित् शेष ६ राशिसे अधिक होय तो १२ राशिमें घटायके शेषको ६ से भाग देना। यदि शेष ठीक ६ बचे तो ६ से भाग देना पूर्णबल अर्थात् रूप १ बल होगा। जब ६ राशिसे कम रहैगा तब राशिमें ६ से भाग देनेसे अंशस्थानमें शून्य फल आवैगा पुनः राशिको ६० से गुण देना अंश दूना करके युक्त करना फिर ६ से भाग देना, जो पावे सो कलास्थानमें रखना। शेषको ६० से गुण देना विकला दूना युक्त करना ६ से भाग देना लब्धि विकला होगी अथवा नीच ग्रहांतरका कला करना १८० से भाग देना तो कलादि सुगम रीतिसे उच्चबल होगा अथवा नीच ग्रहांतर जो होय उसकी राशिको १० से गुणना अंश कला विकलाको २० से गुणना तो उच्चबल होता है, जो ग्रह स्वगृहमें होय उसका अर्द्ध ०।३०।० बल, समकें गृहमें होय तो अष्टमांश ०।७।३०, मूलत्रिकोणका होय तो चतुर्थांश त्रिगुणित ०।४५।०, मित्रगृहका होय तो चतुर्थांश ०।१५।०, अधिमित्रका होय तो अष्टमांश त्रिगुणित ०।२२।३० शत्रुगृहमें होय तो षोडशांश ०।३।४५ अधिशत्रुका होय तो बत्तीसवां अंश ०।१।५२ यह बल गृह होरादि सप्तवर्गके स्वामीके अनुरोधसे कहिये स्वामी अपने गृहमें होय तो अर्द्धबल और स्वामी समगृहमें

होय तो अष्टमांश बल इत्यादि जानना। यह सप्तवर्गजबल एकत्र करनेसे ग्रहोंका सम योगजबल होता है॥

ग्रहोंका उच्चादिकोष्ठक.

ग्रहाः		सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्च	रा.	०	१	९	५	३	११	६
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	रा.	६	७	३	११	९	५	०
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
मूलत्रि-कोण	रा.	४	१ न.	०	५ न.	८	६	१०
	अं.	२०	३	२०	१५ ५	२०	२०	२०
स्वगृह		सिंह	कर्क.	मे. वृ.	मि. क.	ध. मी	वृ. तु	म. कु.
नैसर्गिक मित्र		र. म. गु.	र. बु	र. च. गु	र. शु.	र. च. म.	बु. श	बु. शु
नैसर्गिक सम		बु	म. गु. शु. श	शु. श.	म. गु. श.	श.	म. गु	गु
नैसर्गिक शत्रु		श. शु.	०	बु.	च.	बु. शु	र. च.	र. च. म
लिंग		पु.	स्त्री	पु.	नपु.	पु	स्त्री	नपु.

ग्रहोंकी तात्कालिकमैत्री।

जिस ग्रहकी तात्काल मैत्री देखना होय तो वह ग्रह जिस स्थानमें होय उस स्थानसे २-३-४-१०-११ और १२ इन स्थानोंमें जो ग्रह होय सो अभीष्ट ग्रहके तत्काल मित्र होते हैं और १-५-७-८ और ९ इन स्थानोंमें जो ग्रह होय सो अभीष्ट ग्रहके शत्रु होते हैं।

ग्रहोंकी पञ्चधा अधिमैत्री

ग्रहोंको नैसर्गिक मैत्र्यादि और तात्कालिक मैत्र्यादि इससे ग्रहोंकी पंचधा अधिमैत्री उत्पन्न होती है सो इस प्रकार अभीष्टग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक मित्र होय तो अभीष्टग्रहका अधिमित्र होता है। अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिकमें सम और तात्कालिक मित्र होय तो अभीष्ट ग्रहका मित्र होता है। अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और [illegible]

होय तो अभीष्ट ग्रहका सम होता है । अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक सम और तात्कालिक शत्रु होय तो अभीष्ट ग्रहका शत्रु होता है. और अभीष्ट ग्रहका नैसर्गिक शत्रु वा तात्कालिक शत्रु होय तो अभीष्टग्रहका अधिशत्रु जानना । अत्रेदं ध्येयम् । सम–मित्र=मित्र, मित्र=मित्र, अधिमित्र, मित्र–शत्रु=सम, सम–शत्रु-शत्रु, शत्रु-शत्रु-अधिशत्रु ॥ इति ।

टीप–मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन यह १२ राशि हैं इनमेंसे मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ यह विषम ६ राशि और वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन यह ६ राशि सम होती हैं । यहाँ सप्तवर्ग, १ ग्रह, २ होरा, ३ द्रेष्काण, ४ सप्तमांश, ५ नवमांश, ६ द्वादशांश और त्रिंशांश होते हैं । १ गृह–(राशि कहिये ३० अंश) इसके स्वामी पूर्वमें कहे हैं । २ होरा (कहिये राश्यर्द्ध १५ अंश) विषम राशिमें प्रथम होराका स्वामी सूर्य और द्वितीय होराका स्वामी चंद्र और समराशिमें प्रथम होराका स्वामी चंद्र द्वितीय होराका स्वामी सूर्य । ३ द्रेष्काण कहिये राशिका तृतीयांश १० अंश इसवास्ते यह तीन हैं । प्रथम द्रेष्काणका स्वामी गृहाधिप, द्वितीय द्रेष्काणका स्वामी गृहसे पञ्चम राश्यधिप, तृतीय द्रेष्काणका स्वगृहसे नवमराश्यधिप । ४ सप्तमांश कहिये राशिका सप्तमांश ४ अंश १७ कला विषमराशिमें अपणे गृहसे ७ राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांश पति होते हैं और समराशिमें अपने गृहके सप्तमराशिसे सात राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांशपति होते हैं । ५ नवमांश–कहिये राशिका नवमांश ३ अंश २० कला, मेष, सिंह, धन यह गृह होय तो मेषसे ९ राशिके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपति होते हैं । वृष, कन्या, मकर यह गृह होय तो मकर राशिसे ९ राशिका स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपति होते हैं । मिथुन तुला कुम्भ यह राशि होय तो तुलाराशिसे ९ राशिके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपति होते हैं । कर्क, वृश्चिक, मीन यह राशि होय तो कर्क राशिसे ९ राशिका स्वामी नवमाधिपति होते हैं । ६ द्वादशांश–कहिये राशिका

द्वादश भाग २ अंश ३० कला सब राशिमें स्वस्व गृहसे १२ राशिके स्वामी क्रमसे द्वादशांशपति होते हैं, ७ त्रिंशांश कहिये राशिका त्रिंशद्भाग १ अंश विषम राशिमें प्रथम ५ अंशका स्वामी भौम आगे ५ अंशका स्वामी शनि आगे ८ अंशका स्वामी गुरु आगे ७ अंशका स्वामी बुध आगे ५ अंशका स्वामी शुक्र सम राशिमें उलटी रीतिसे ५ का शुक्र ७ का बुध ८ गुरु आगे ५ का शनि आगे ५ का भौम इसी रीतिसे जानना ॥
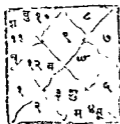
उच्चनीचे वराहः-अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादि तुङ्गाः । दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनवकविंशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः ॥

निसर्गमैत्री चक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
चं. मं. बृ.	सू. बु.	चं. बृ. सू.	शु. सू.	सू. चं. मं.	बु. श.	शु. बु.	मित्र
बु.	मं. बृ. शु श.	शु श	मं बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.	सम.
शु. श.	•	बु	चं.	बु. शु.	सू चं.	सू चं. मं	शत्रु

तात्कालमैत्रीचक्रम् ।

सू	चं	मं.	बु.	बृ	शु	श.	ग्रह
शु बु च श	सू बु शु	श बृ	सू च शु श	मं श	सू बु चं	मं सू बु बृ	मित्र
मं बृ	श मं बृ	शु चं बु सू	मं बृ	सू च शु बु	मं बृ श	शु च	शत्रु

जन्मलग्नम् ।

पंचधामैत्रीचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ	शु.	श.	ग्रहाः
बु.	शु	श	श.	श	०	बृ.	मित्रः
चं.	सू बु	बृ.	सू चं.	मं.	बु.	बु.	ऽधिमित्रः
श मं. बृ शु.	सू. बु.	सू चं.	चं.	सू. चं.	सू. च. श.	सू. शु म.	समः
•	बृ. म श	शु.	मं. बृ.	०	म बृ.	०	शत्रुः
•	०	बृ.	०	बु. शु.	०	च.	ऽधिशत्रुः

उच्चबलसारिणी प्रवेश ।

सूर्यादि ७ ग्रहोंका १२ राशिकोष्ठक लिखके प्रत्येक ग्रहके सामने राशि ।८. के नीचे रूप कलादि बल लिखा है उसमेंसे ग्रहका जो इष्ट राशिकोष्ठक ५ उसके नीचेका फल लेके राशिकोष्ठकके नीचे ३० अंशकोष्ठकके और

१० कलाकोष्टक लिखा है। उसमेंसे ग्रहोंके जो राश्यंश और कला होय उसके
अंशके अथवा कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके यह धन
किंवा ऋण राशिफलमें लिखा है। उसके प्रमाण लिया जो राशिफल उसमें
युक्त करना किंवा कम करना तो उचबल होता है परंतु जब ग्रहोंकी उच-
राशि आती है तब फल लेनेकी जुदी रीति है। सोऐसी कि,पृथक् २–

उच्चफलसारिणी राशिफल.

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	रा.
सू.	० ५६ ४० ध	० ५३ २० ऋ	० ४३ २० ऋ	० ३३ २० ऋ	० २३ २० ऋ	० १३ २० ऋ	० १०३ २० ऋ	० ६ ४० ध.	० १६ ४० ध	० २६ ४० ध	० ३६ ४० ध	० ४६ ४० ध	सू.
चं.	० ४९ ० ध.	० ५९ ० ध.	० ५१ ० ऋ	० ४१ ० ऋ	० ३१ ० ऋ	० २१ ० ऋ	० ११ ० ऋ.	० १ ० ऋ	० १ ० ध	० ११ ० ध.	० २१ ० ध	० ३१ ० ध	चं.
मं	० ३१ २० ऋ.	० २१ २० ऋ	० ११ २० ऋ	० १ २८ २० ऋ.	० ० ४० ध.	० १० ४० ध	० २० ४० ध	० ३० ४० ध	० ४० ४० ध	० ५८ ४० ध	० ५९ २० ऋ	० ४९ २० ऋ	मं
बु.	० ५ ० ध.	० १५ ० ध.	० २५ ० ध	० ३५ ० ध	० ४५ ० ध	० ५५ ० ध	० ५५ ० ऋ	० ४५ ० ऋ.	० ३५ ० ऋ	० २५ ० ऋ	० १५ ० ऋ	० ५ १५ ० ऋ	बु.
गु.	० २८ २० ध.	० ३८ २० ध	० ४८ २० ध	० ५८ २० ध.	० ५१ ४० ऋ	० ४१ ४० ऋ.	० ३१ ४० ऋ.	० २१ ४० ऋ	० ११ ४० ऋ	० १५ ४० ऋ	० ८ २० ध	० १८ २० ध	गु.
शु.	० ५१ ० ऋ.	० ४१ ० ऋ.	० ३१ ० ऋ.	० २१ ० ऋ.	० ११ ० ऋ.	० १ २७ ० ऋ.	० १ ० ध	० ११ ० ध.	० २१ ० ध.	० ३१ ० ध	० ४१ ० ध	० ५७ ० ध	शु.
श.	० ६ २० ४० ऋ.	० ३ २० ध.	० १३ २० ध.	० २३ २० ध.	० ३३ २० ध	० ४३ २० ध.	० ५३ २० ध.	० ५६ ४० ऋ	० ४६ ४० ऋ	० ३६ ४० ऋ.	० २६ ४० ऋ.	० १६ ४० ऋ	श.

अंशफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

शलाकाफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

—यहाँका उच्चराशिफलमें उक्तोच्चांश लिखे हैं। उतने अंशतकमात्र वह [illegible]
अंशादि धन आगे जो अंशादि अधिक आवे उतना अंशादिकोंका सारणि[illegible]
मेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके प्रमाण उक्तराशिफलमें युक्त करके [illegible]
(१) बलमें कम करना तो उच्चबल होता है, तैसेही नीचराशिफलमें [illegible]
नीचांश लिखे हैं उतने अंशतकमात्र वह फल ऋण आगे जो [illegible]
आये उतना अंशादिकोंका सारणींमेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके
नीचराशिफलमें कम न करके जो फल आवे वही उच्चबल जानना।

उदाहरण—यहां सूर्य ० । १३ । १० । ४२ है । इसवास्ते ०० रा[illegible]
कोष्ठकके नीचेका सूर्यका फल ० । ५६।४० यह लेके अनंतर १३ अं[illegible]
कोष्ठके नीचेका कलादि फल ४ । २० और कला १० कोष्ठकके [illegible]

फल ३ । १२० यह विकलामें युक्त करके यह राशिफलमें धन लिखा ।। इसवास्ते ०।५६।४०यह राशिफलमें युक्त करके ०३।०१।३। अब यहां वि उच्चराशिका है इसवास्ते ऊपर १ न युक्त करके ०१।३ यह इसको रूप । में कम करके ० । ५८ । ५७ यह सूर्यका उच्च बल भया । इसी प्रमाण द्रादि द्वितीयसारिणी प्रवेश जिस ग्रहका उच्चबल बनाना होय उस ग्रहमें सी ग्रहका नीचे कम करना जो ६ राशिसे ज्यादा होय तो १२ राशिमें म करके जो शेष राश्यंक होय उसके नीचेका अंशादिफल लेके उसके चे जो अंश कला होय उसका फल लेकर एकत्र करके युक्त करना तो होंका उच्चबल होता है. अंश कला विकलाका फल पूर्वोक्त सारिणीमेंसे लेना ।

उच्चराशिफल.

०	१	२	३	४	५	६	रा.
०	०	०	०	०	०	१	
	१०	२०	३०	४०	५०	०	फ.
	०	०	०	०	०	०	

उदाहरण—सूर्य ०।१३।१०।४२ यह इसमें इसका नीच ६।१०।०० म किया तो ६ । ३ । १० । ४२ यह ६ से अधिक है इसवास्ते १२ में म करके ५।२६।४९।१८ है. इसवास्ते ५ राशिकोष्ठकके नीचेका फल ।५०।० पहलेके अनंतर २६ अंश कोष्ठक पूर्वोक्तके नीचेका कलादि फल ।४० और कला ४८ के नीचे विकलादिफल १९।२० यह एकत्र करके ।५६ यह राशिफल ०।५०।० इसमें युक्त किया तो ०।५८।५६ यह र्यका उच्चबल भया. इसी रीतिसे चंद्रादिकोंका करना तो स्पष्ट बल होता । राशिफलमें अंश कला फल सदा युक्त करना ।

उच्चचक्रम्.

सू	चं.	मं	बु.	बृ.	शु	श	ग्रहाः
०	०	०	८	०	८	०	
५८	१०	४	२	३८	४१	१७	५७
५	४७	२१	७	५५	५८	४३	

अंशफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

कलाफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	५०	०	२०	४०
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

—यहांका उच्चराशिफलमें उच्चांश लिखे हैं। उतने अंशतकमात्र
अंशादि घन आगे जो अंशादि अधिक आवे उतना अंशादिकोंका सा
मेंका फल लेके यह ऊपर कहनेके प्रमाण उच्चराशिफलमें युक्त करे
(१) घटमें कम करना तो उच्चफल होता है, तैसेही नीचराशिफल
नीचांश लिखे हैं उतने अंशतकमात्र यह फल ऋण आगे जो अंशादि
आवे उतना अंशादिकोंका सारणीमेंका फल लेके यह ऊपर कहनेके
नीचराशिफलमें कम न करके जो फल आवे यही उच्चफल जानना।

उदाहरण—यहां सूर्य० । १३ । १० । ४२ है । इसवास्ते ००
कोष्ठकके नीचेका सूर्यका फल ० । ५६।४० यह लेके अनंतर ११
कोष्ठक नीचेका कलादि फल ४ । २० और कला १० कोष्ठक

३ । १२० यह विकलामें युक्त करके यह राशिफलमें धन लिखा इसवास्ते ०।५६।४०यह राशिफलमें युक्त करके ०।१।०।१।३। अब यहां उच्चराशिका है इसवास्ते ऊपर १ न युक्त करके ०।१।३ यह इसको रूप में कम करके ० । ५८ । ५७ यह सूर्यका उच्च बल भया । इसी प्रमाण ादि द्वितीयसारिणी प्रवेश जिस ग्रहका उच्चबल बनाना होय उस ग्रहमें ग्रहका नीचे कम करना जो ६ राशिसे ज्यादा होय तो १२ राशिमें करके जो शेष राश्यंक होय उसके नीचेका अंशादिफल लेके उसके वे जो अंश कला होय उसका फल लेकर एकत्र करके युक्त करना तो का उच्चबल होता है. अंश कला विकलाका फल पूर्वोक्त सारिणीमेंसे लेना ।

उच्चराशिफल.

०	१	२	३	४	५	६	रा.
०	० १० ०	० २० ०	० ३० ०	० ४० ०	० ५० ०	१ ० ०	फ.

उदाहरण—सूर्य ०।१३।१०।४२ यह इसमें इसका नीच ६।१०।०० म किया तो ६ । ३ । १० । ४२ यह ६ से अधिक है इसवास्ते १२ में न करके ५।२६।४९।१८ है. इसवास्ते ५ राशिकोष्ठकके नीचेका फल ।५०।० पहलेके अनंतर २६ अंश कोष्ठक पूर्वोक्तके नीचेका कलादि फल ।४० और कला ४८ के नीचे विकलादिफल १६।२० यह एकत्र करके ।५६ यह राशिफल ०।५०।० इसमें युक्त किया तो ०।५८।५६ यह र्यका उच्चबल भया. इसी रीतिसे चंद्रादिकोंका करना तो स्पष्ट बल होता । राशिफलमें अंश कला फल सदा युक्त करना ।

उच्चबलचक्रम्.

सू	च	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
० ५८ ५	० ३० ४७	० ४ २१	० २ ७	० ३८ ५५	० ४१ ५८	० १७ ४७	फल

अंशफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

कलाफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

—ग्रहोंका उच्चराशिफलमें उक्तोचांश लिखे हैं। उतने अंशतकमात्र अंशादि धन आगे जो अंशादि अधिक आवे उतना अंशादिकोंका स मेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके प्रमाण उक्तराशिफलमें युक्त करे (१) चलमें कम करना तो उच्चबल होता है, तैसेही नीचराशिफल नीचांश लिखे हैं उतने अंशतकमात्र वह फल ऋण आगे जो अंशादि आये उतना अंशादिकोंका सारणीमेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके नीचराशिफलमें कम न करके जो फल आवे वही उच्चबल जानना।

उदाहरण—यहां सूर्य० । १३ । १० । ४२ है । इसवास्ते ०० कोष्ठकके नीचेका सूर्यका फल ० । ५६।४० यह लेके अनंतर १ नीचेका कलादि फल ४ । २० और कला १० कोष्ठकके

३ । १२० यह विकलामें युक्त करके यह राशिफलमें धन लिखा इसवास्ते ०।५६।४०यह राशिफलमें युक्त करके ०१।०१।३। अब यहां वे उच्चराशिका है इसवास्ते ऊपर १ न युक्त करके ०१।३ यह इसको रूप में कम करके ०।५८।५७ यह सूर्यका उच्च बल भया । इसी प्रमाण रादि द्वितीयसारिणी प्रवेश जिस ग्रहका उच्चबल बनाना होय उस ग्रहमें गे ग्रहका नीचे कम करना जो ६ राशिसे ज्यादा होय तो १२ राशिमें न करके जो शेष राश्यंक होय उसके नीचेका अंशादिफल लेके उसके चे जो अंश कला होय उसका फल लेकर एकत्र करके युक्त करना तो हों का उच्चबल होता है.अंश कला विकलाका फल पूर्वोक्त सारिणीमेंसे लेना।

उच्चराशिफल.

०	१	२	३	४	५	६	रा
०	०	०	०	०	०	१	
	१०	२०	३०	४०	५०	०	फ.
	०	०	०	०	०	०	

उदाहरण—सूर्य ०।१३।१०।४२ यह इसमें इसका नीच ६।१०।०० म किया तो ६ । ३ । १० । ४२ यह ६ से अधिक है इसवास्ते १२ में म करके ५।२६।४९।१८ है. इसवास्ते ५ राशिकोष्ठकके नीचेका फल ।५०।० पहलेके अनंतर २६ अंश कोष्ठक पूर्वोक्तके नीचेका कलादि फल ।४० और कला ४८ के नीचे विकलादिफल १६।२० यह एकत्र करके ।५६ यह राशिफल ०।५०।० इसमें युक्त किया तो ०।५८।५६ यह र्यका उच्चबल भया. इसी रीतिसे चंद्रादिकोंका करना तो स्पष्ट बल होता । राशिफलमें अंश कला फल सदा युक्त करना ।

उच्चबलचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु	बृ	शु	श	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	
५८	२०	४	२	१८	४१	१७	फल
५	४७	२१	७	५५	५८	४३	

अं	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
गृह	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्काण	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
सप्तम	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१७ ८ ३४ चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	२१ २६ ४२ सू ५	बु ६	बु ६
नवम	सू ५	सू ५	सू ५	१६ ४० सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
द्वादश	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
त्रिंशा.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३

अं	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्काण	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
सप्तम	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	२५ ४२ ५१ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३० ० शु ७
नवम	शु ७	२३ २० शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२६ ५० मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ०
द्वादश	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
त्रिंशा.	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

विशेषः—नीचोनं तु ग्रहं भार्द्धाधिकं चक्राद्विशोधयेत् । भागीकृत्य त्रिभिर्भक्तं फलमुच्चबलं भवेत् ॥ १ ॥

वृषराशिसप्तवर्गादिचक्रम्

अंश	गृह	होरा	द्रेष्काण	सप्तम	नवम	द्वादश	त्रिंशा
१५ ३०	शु २	सू ५	बु ६	श ११	शु २	म ८	गु १२
१६ ०	शु २	सू ५	बु ६	श ११	शु २	मं ८	गु १२
१६ ३०	शु २	सू ५	बु ६	श ११	शु २	म ८	गु १२
१७ ०	शु २	सू ५	बु ६	श ११	१६ ४० शु २	मं ८	गु १२
१७ ३०	शु २	सू ५	बु ६	१७ ८ ३४ श ११	बु ३	म ८	गु १२
१८ ०	शु २	सू ५	बु ६	गु १२	बु ३	गु ९	गु १२
१८ ३०	शु २	सू ५	बु ६	गु १२	बु ३	गु ९	गु १२
१९ ०	शु २	सू ५	बु ६	गु १२	बु ३	गु ९	गु १२
१९ ३०	शु २	सू ५	बु ६	गु १२	बु ३	गु ९	गु १२
२० ०	शु २	सू ५	बु ६	गु १२	बु ३	गु ९	गु १२
२० ३०	शु २	सू ५	श १०	गु १२	च ४	श १०	श १०
२१ ०	शु २	सू ५	श १०	गु १२	च ४	श १०	श १०
२१ ३०	शु २	सू ५	श १०	२१ २५ ४३ गु १२	च ४	श १०	श १०
२२ ०	शु २	सू ५	श १०	मं १	च ४	श १०	श १०
२२ ३०	शु २	सू ५	श १०	मं १	च ४	श १०	श १०
२३ ०	शु २	सू ५	श १०	मं १	च ४	श ११	श १०
२३ ३०	शु २	सू ५	श १०	मं १	२३ २० च ४	श ११	श १०
२४ ०	शु २	सू ५	श १०	मं १	सू ५	श ११	श १०
२४ ३०	शु २	सू ५	श १०	मं १	सू ५	श ११	श १०
२५ ०	शु २	सू ५	श १०	मं १	सू ५	श ११	श १०
२५ ३०	शु २	सू ५	श १०	मं १	सू ५	श ११	श १०
२६ ०	शु २	सू ५	श १०	२५ ४२ ५१ मं १	सू ५	गु १२	श १०
२६ ३०	शु २	सू ५	श १०	शु २	सू ५	गु १२	मं ८
२७ ०	शु २	सू ५	श १०	शु २	२६ ४० सू ५	गु १२	मं ८
२७ ३०	शु २	सू ५	श १०	शु २	बु ६	गु १२	मं ८
२८ ०	शु २	सू ५	श १०	शु २	बु ६	गु १२	मं ८
२८ ३०	शु २	सू ५	श १०	शु २	बु ६	म १	मं ८
२९ ०	शु २	सू ५	श १०	शु २	बु ६	म १	मं ८
२९ ३०	शु २	सू ५	श १०	शु २	बु ६	म १	मं ८
३० ०	शु २	सू ५	श १०	३० [illegible]	[illegible] ६	म १	मं ८

मिथुनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	ग्रह	होरा	द्रेष्क.	सप्तम	नवम	द्वादश	त्रिंशा
० ३०	बु ३	सू ५	बु ३	बु ३	शु ७	बु ३	मं १
१ ०	बु ३	सू ५	बु ३	बु ३	शु ७	बु ३	मं १
१ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	बु ३	शु ७	बु ३	मं १
२ ०	बु ३	सू ५	बु ३	बु ३	शु ७	बु ३	मं १
२ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	बु ३	शु ७	बु ३	मं १
३ ०	बु ३	सू ५	बु ३	बु ३	शु ७	चं ४	मं १
३ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	बु ३	३ २० शु ७	चं ४	मं १
४ ०	बु ३	सू ५	बु ३	बु ३	मं ८	चं ४	मं १
४ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	४ १७ / बु ३	मं ८	चं ४	मं १
५ ०	बु ३	सू ५	बु ३	चं ४	मं ८	चं ४	मं १
५ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	चं ४	मं ८	सू ५	श ११
६ ०	बु ३	सू ५	बु ३	चं ४	मं ८	सू ५	श ११
६ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	चं ४	मं ८	सू ५	श ११
७ ०	बु ३	सू ५	बु ३	चं ४	६ ४० श ८	सू ५	श ११
७ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	चं ४	गु ९	सू ५	श ११
८ ०	बु ३	सू ५	बु ३	चं ४	गु ९	बु ६	श ११
८ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	चं ४	गु ९	बु ६	श ११
९ ०	बु ३	सू ५	बु ३	८ ३४ १७ चं ४	गु ९	बु ६	श ११
९ ३०	बु ३	सू ५	बु ३	सू ५	गु ९	बु ६	श ११
१० ०	बु ३	सू ५	बु ३	सू ५	गु ९	बु ६	श ११
१० ३०	बु ३	सू ५	शु ७	सू ५	श १०	शु ७	गु ९
११ ०	बु ३	सू ५	शु ७	सू ५	श १०	शु ७	गु ९
११ ३०	बु ३	सू ५	शु ७	सू ५	श १०	शु ७	गु ९
१२ ०	बु ३	सू ५	शु ७	सू ५	श १०	शु ७	गु ९
१२ ३०	बु ३	सू ५	शु ७	सू ५	श १०	शु ७	गु ९
१३ ०	बु ३	सू ५	शु ७	१२ ५१ २५ सू ५	श १०	मं ८	गु ९
१३ ३०	बु ३	सू ५	शु ७	बु ६	१३ २० श १०	मं ८	गु ९
१४ ०	बु ३	सू ५	शु ७	बु ६	श ११	मं ८	गु ९
१४ ३०	बु ३	सू ५	शु ७	बु ६	श ११	मं ८	गु ९
१५ ०	बु ३	सू ५	शु ७	बु ६	श ११	मं ८	गु ९

मिथुनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्.

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
सप्तम	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	१७ ८ ३४ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२१ २५ ४३ शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२५ ४२ ५१ मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
नवम	श ११	श ११	श ११	१६ ४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२३ २० मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
द्वादश	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
त्रिंश	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

मिथुनराशिमनवगंशातिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
राशि	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्क	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
सप्तम	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	४ १७ / बु ३	च ४	चं ४	च ४	च ४	च ४	चं ४
नवम	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३ २० शु ७	म ८	मं ८	म ८	मं ८	मं ८	मं ८	६ ४० श ८	गु ९
द्वादश	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	च ४	च ४	च ४	चं ४	च ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
त्रिंश	मं १	म १	म १	म १	म १	म १	म १	म १	म १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११

अंश	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
राशि	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्क	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
सप्तम	चं ४	चं ४	८ ३४ १७ चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	१२ ५१ २५ सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
नवम	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३ २० श १०	श ११	श ११	श ११
द्वादश	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
त्रिंश	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९

मिथुनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्.

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
सप्तम	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	१७ ८ ३४ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२१ २६ ५३ शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२६ ४२ ५१ मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
नवम	श ११	श ११	श ११	१६ ४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२३ २० मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
द्वादश	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
त्रिंश	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

कर्कराशिमनवमांनिकम ।

अंश	ग्रह	होरा	द्रेष्का.	सप्तम	नवम	द्वादश	त्रिंशा
१५ ३०	च ४	सू ५	म ८	म १	म ८	श १०	गु १२
१६ ०	च ४	सू ५	म ८	म १	म ८	श १०	गु १२
१६ ३०	च ४	सू ५	म ८	म १	म ८	श १०	गु १२
१७ ०	च ४	सू ५	म ८	म १	१६ ४० म ८	श १०	गु १२
१७ ३०	च ४	सू ५	म ८	१७ ८ १२ म १	गु ९	श १०	गु १२
१८ ०	च ४	सू ५	म ८	शु २	गु ९	श ११	गु १२
१८ ३०	च ४	सू ५	म ८	शु २	गु ९	श ११	गु १२
१९ ०	च ४	सू ५	म ८	शु २	गु ९	श ११	गु १२
१९ ३०	च ४	सू ५	म ८	शु २	गु ९	श ११	गु १२
२० ०	च ४	सू ५	म ८	शु २	गु ९	श ११	गु १२
२० ३०	च ४	सू ५	गु १२	शु २	श १०	गु १२	श १०
२१ ०	च ४	सू ५	गु १२	शु २	श १०	गु १२	श १०
२१ ३०	च ४	सू ५	गु १२	२१ २५ ४२ शु २	श १०	गु १२	श १०
२२ ०	च ४	सू ५	गु १२	बु ३	श १०	गु १२	श १०
२२ ३०	च ४	सू ५	गु १२	बु ३	श १०	गु १२	श १०
२३ ०	च ४	सू ५	गु १२	बु ३	श १०	म १	श १०
२३ ३०	च ४	सू ५	गु १२	बु ३	२३ २० श १०	म १	श १०
२४ ०	च ४	सू ५	गु १२	बु ३	श ११	म १	श १०
२४ ३०	च ४	सू ५	गु १२	बु ३	श ११	म १	श १०
२५ ०	च ४	सू ५	गु १२	बु ३	श ११	म १	श १०
२५ ३०	च ४	सू ५	गु १२	बु ३	श ११	शु २	म ८
२६ ०	च ४	सू ५	गु १२	२५ ४२ ५१ बु ३	श ११	शु २	म ८
२६ ३०	च ४	सू ५	गु १२	च ४	श ११	शु २	म ८
२७ ०	च ४	सू ५	गु १२	च ४	२६ ४० श ११	शु २	म ८
२७ ३०	च ४	सू ५	गु १२	च ४	गु १२	शु २	म ८
२८ ०	च ४	सू ५	गु १२	च ४	गु १२	बु ३	म ८
२८ ३०	च ४	सू ५	गु १२	च ४	गु १२	बु ३	म ८
२९ ०	च ४	सू ५	गु १२	च ४	गु १२	बु ३	म ८
२९ ३०	च ४	सू ५	गु १२	च ४	गु १२	बु ३	म ८
३० ०	च ४	सू ५	गु १२	च ४	गु १२	बु ३	म ८

सिंहराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
गृह	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्का.	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	सू ३	गु १	गु १	गु १	गु १	गु १	गु १	गु १	गु १	गु १	गु १
सप्तम.	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	४ १७ ८ सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	८ ३४ १७ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	१२ २१ २५ शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
नवम	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	३ २० मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१३ २० चं ४	सू ५	सू ५	सू ५
द्वादश	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
त्रिंशा	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९

तुलराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश.	ग्रह	होरा	द्रेष्काण	सप्तम	नवम	द्वादश	त्रिंशांश
० ३०	शु ७	सू ५	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं १
१ ०	शु ७	मू ५	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं १
१ ३०	शु ७	मू ५	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं १
२ ०	शु ७	मू ५	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं १
२ ३०	शु ७	मू ५	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं १
३ ०	शु ७	मू ५	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं १
३ ३०	शु ७	मू ५	शु ७	शु ७	३ २० शु ७	मं ८	मं १
४ ०	शु ७	मू ५	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं १
४ ३०	शु ७	सू ५	शु ७	४ १७ ८ शु ७	मं ८	मं ८	मं १
५ ०	शु ७	सू ५	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं १
५ ३०	शु ७	सू ५	शु ७	मं ८	मं ८	गु ९	श ११
६ ०	शु ७	सू ५	शु ७	मं ८	मं ८	गु ९	श ११
६ ३०	शु ७	मू ५	शु ७	मं ८	मं ८	गु ९	श ११
७ ०	शु ७	मू ५	शु ७	मं ८	६ ४० मं ८	गु ९	श ११
७ ३०	शु ७	सू ५	शु ७	मं ८	गु ९	गु ९	श ११
८ ०	शु ७	सू ५	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११
८ ३०	शु ७	मू ५	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११
९ ०	शु ७	सू ५	शु ७	८ ३४ १७ मं ८	गु ९	श १०	श ११
९ ३०	शु ७	सू ५	शु ७	गु ९	गु ९	श १०	श ११
१० ०	शु ७	सू ५	शु ७	गु ९	गु ९	श १०	श ११
१० ३०	शु ७	सू ५	श ११	गु ९	श १०	श ११	गु ९
११ ०	शु ७	सू ५	श ११	गु ९	श १०	श ११	गु ९
११ ३०	शु ७	सू ५	श ११	गु ९	श १०	श ११	गु ९
१२ ०	शु ७	मू ५	श ११	गु ९	श १०	श ११	गु ९
१२ ३०	शु ७	सू ५	श ११	गु ९	श १०	श ११	गु ९
१३ ०	शु ७	सू ५	श ११	१२ ५१ २४ गु ९	श १०	गु १२	गु ९
१३ ३०	शु ७	सू ५	श ११	श १०	१३ २० श १०	गु १२	गु ९
१४ ०	शु ७	सू ५	श ११	श १०	श ११	गु १२	गु ९
१४ ३०	शु ७	सू ५	श ११	श १०	श ११	गु १२	गु ९
१५ ०	शु ७	सू ५	श ११	श १०	श ११	गु १२	गु ९

तुलराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश.	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४
द्रेष्काण	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
सप्तम	श १०	श १०	श १०	श १०	१७ ८ ३४ श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२१ २५ ४२ श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	२५ ४२ ५१ गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
नवम	श ११	श ११	श ११	१६ ४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२३ २० मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
द्वादश	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
त्रिंशा	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

तुलराशिसमवर्गपतिचक्रम् ।

अंश.	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्काण	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
सप्तम	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	४ १७ ८ शु७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
नवम	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३ २० शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	६ ४० मं ८	गु ९
द्वादश	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
त्रिंशा	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११

अंश.	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्काण	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
सप्तम	मं ८	मं ८	८ ३४ १७ म८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	१२ ५१ २४ गु९	श १०	श १०	श १०	श १०
नवम	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३ २० श १०	श ११	श ११	श ११
द्वादश	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
त्रिंशा	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९

तुलराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्काण	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
सप्तम	श १०	श १०	श १०	श १०	१७ ८ ३४ श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२१ २५ ४२ श ११	गु १२	गु १२
नवम	श ११	श ११	श ११	१६ ४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	म १	म १	म १	म १	म १
द्वादशा	म १	म १	म १	म १	म १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
त्रिंशा	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३

अंश	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्काण	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
सप्तम	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	२५ ४२ ५१ गु १२	म १	म १	म १	म १	म १	म १	म १	म १
नवम	म १	२३ २० म १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
द्वादशा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
त्रिंशा	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

वृश्चिकराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	ग्रह	होरा	द्रेष्का.	सप्तम	नवम	द्वादश	त्रिंशा.
० ३०	म ८	चं ४	मं ८	शु २	चं ४	मं ८	शु २
१ ०	मं ८	चं ४	म ८	शु २	चं ४	मं ८	शु २
१ ३०	मं ८	च ४	म ८	शु २	चं ४	म ८	शु २
२ ०	मं ८	च ४	मं ८	शु २	चं ४	म ८	शु २
२ ३०	म ८	चं ४	म ८	शु २	चं ४	मं ८	शु २
३ ०	म ८	च ४	म ८	शु २	चं ४	बृ ९	शु २
३ ३०	मं ८	चं ४	मं ८	शु २	३ २० चं ४	बृ ९	शु २
४ ०	म ८	चं ४	मं ८	शु २	सू ५	बृ ९	शु २
४ ३०	मं ८	चं ४	म ८	४ १७ ८ शु २	सू ५	बृ ९	शु २
५ ०	मं ८	च ४	मं ८	बु ३	सू ५	बृ ९	शु २
५ ३०	मं ८	च ४	म ८	बु ३	सू ५	श १०	बु ६
६ ०	म ८	च ४	म ८	बु ३	सू ५	श १०	बु ६
६ ३०	म ८	चं ४	म ८	बु ३	सू ५	श १०	बु ६
७ ०	मं ८	च ४	मं ८	बु ३	६ ४० शु ५	श १०	बु ६
७ ३०	म ८	च ४	म ८	बु ३	बु ६	श १०	बु ६
८ ०	म ८	च ४	मं ८	बु ३	बु ६	श ११	बु ६
८ ३०	म ८	चं ४	म ८	बु ३	बु ६	श ११	बु ६
९ ०	म ८	च ४	म ८	८ ३४ १७ बु ३	बु ६	श ११	बु ६
९ ३०	म ८	च ४	म ८	चं ४	बु ६	श ११	बु ६
१० ०	म ८	च ४	म ८	चं ४	बु ६	श ११	बु ६
१० ३०	म ८	चं ४	गु १२	चं ४	शु ७	बृ १२	बु ६
११ ०	म ८	च ४	गु १२	चं ४	शु ७	बृ १२	बु ६
११ ३०	म ८	च ४	गु १२	चं ४	शु ७	बृ १२	बु ६
१२ ०	म ८	चं ४	गु १२	चं ४	शु ७	बृ १२	बु ६
१२ ३०	म ८	च ४	गु १२	च ४	शु ७	बृ १२	बृ १२
१३ ०	मं ८	च ४	गु १२	१२ ११ २५ च ४	शु ७	मं १	बृ १२
१३ ३०	मं ८	च ४	गु १२	सू ५	१३ २० शु ७	म १	बृ १२
१४ ०	मं ८	च ४	गु १२	सू ५	मं ८	म १	बृ १२
१४ ३०	मं ८	चं ४	गु १२	सू ५	म ८	मं १	बृ १२
१५ ०	मं ८	च ४	गु १२	सू ५	मं ८	मं १	बृ १२

वृश्चिकराशिसवर्णानिचक्रम् ।

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्काण	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४
सप्तम	र ५	र ५	र ५	र ५	१७ ८ ३४ ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	२१ २५ ४२ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२५ ४३ ५१ शु ७	म ८	म ८	म ८	म ८	म ८	म ८	म ८	म ८
नवम	म ८	म ८	म ८	१६ ४० म ८	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	२३ २० श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२६ ४० श ११	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२
द्वादश	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
त्रिंश	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८

धनूराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्।

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्काण	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
सप्तम	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	१७ ८ ३४ गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२१ २५ ४२ मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२५ ४२ ५१ शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
नवम	सू ५	सू ५	सू ५	१६ ४० सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२३ २० शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२६ ४० मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
द्वादश	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
त्रिंश	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

मकरराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्.

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
गृह	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
सप्तम	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	४ १७ ८ चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
नवम	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	३ २० श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	६ ४० श ११	गु १२
द्वादश	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
त्रिंशा	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६

अंश	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
गृह	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
सप्तम	सू ५	सू ५	८ ३४ १७ सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	१२ ५१ २५ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
नवम	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१३ २० मं १	शु २	शु २	शु २
द्वादश	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
त्रिंशा	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२

मकरराशिसप्तवर्गशनिचक्रम् ।

अंश.	गृह	होरा	द्रेष्काण	सप्तम	नवम	द्वादश	त्रिंश
१५ ३०	श १०	सू ५	शु २	शु ७	शु १	चं ४	गु १२
१६ ०	श १०	सू ५	शु २	शु ७	शु २	चं ४	गु १२
१६ ३०	श १०	सू ५	शु २	शु ७	शु २	चं ४	गु १२
१७ ०	श १०	सू ५	शु २	शु ७	१६ ४० शु २	चं ४	गु १२
१७ ३०	श १०	सू ५	शु २	१७ ८ १४ शु ७	बु ३	चं ४	गु १२
१८ ०	श १०	सू ५	शु २	मं ८	बु ३	सू ५	गु १२
१८ ३०	श १०	सू ५	शु २	मं ८	बु ३	सू ५	गु १२
१९ ०	श १०	सू ५	शु २	मं ८	बु ३	सू ५	गु १२
१९ ३०	श १०	सू ५	शु २	मं ८	बु ३	सू ५	गु १२
२० ०	श १०	सू ५	शु २	मं ८	बु ३	सू ५	गु १२
२० ३०	श १०	सू ५	बु ६	मं ८	चं ४	बु ६	श १०
२१ ०	श १०	सू ५	बु ६	मं ८	चं ४	बु ६	श १०
२१ ३०	श १०	सू ५	बु ६	२१ २५ ४३ मं ८	चं ४	बु ६	श १०
२२ ०	श १०	सू ५	बु ६	गु ९	चं ४	बु ६	श १०
२२ ३०	श १०	सू ५	बु ६	गु ९	चं ४	बु ६	श.श १०
२३ ०	श १०	सू ५	बु ६	गु ९	चं ४	शु ७	श १०
२३ ३०	श. १०	सू ५	बु ६	गु ९	२३ २० चं ४	शु ७	श १०
२४ ०	श १०	सू ५	बु ६	गु ९	सू ५	शु ७	श १०
२४ ३०	श १०	सू ५	बु ६	गु ९	सू ५	शु ७	श १०
२५ ०	श १०	सू ५	बु ६	गु ९	सू ५	शु ७	श १०
२५ ३०	श १०	सू ५	बु ६	गु ९	सू ५	मं ८	मं ८
२६ ०	श १०	सू ५	बु ६	२५ ४२ ५२ गु ९	सू ५	मं ८	मं ८
२६ ३०	श १०	सू ५	बु ६	श १०	सू ५	मं ८	मं ८
२७ ०	श १०	सू ५	बु ६	श १०	२६ ४० सू ५	मं ८	मं ८
२७ ३०	श १०	सू ५	बु ६	श १०	बु ६	मं ८	मं ८
२८ ०	श १०	सू ५	बु ६	श १०	बु ६	गु ९	मं ८
२८ ३०	श १०	सू ५	बु ६	श १०	बु ६	गु ९	मं ८
२९ ०	श १०	सू ५	बु ६	श १०	बु ६	गु ९	मं ८
२९ ३०	श १०	सू ५	बु ६	श १०	बु ६	गु ९	मं ८
३० ०	श १०	सू ५	बु ६	श १०	बु ६	गु ९	मं ८

कुंभराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्.

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
गृह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्काण	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
सप्तम	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	४ १७ ८ श ११	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२
नवम	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३ २० शु ७	मं ८	मं ८	म ८	मं ८	मं ८	म ८	६ ४० मं ८	बृ ९
द्वादश	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	मं १	मं १	मं १	म १	मं १
त्रिंशा.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११

अंश	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
गृह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्काण	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
सप्तम	बृ १२	बृ १२	८ ३४ १७ बृ १२	म १	मं १	म १	मं १	म १	मं १	म १	१२ ५१ २५ म १	शु २	शु २	शु २	शु २
नवम	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३ २० श १०	श ११	श ११	श ११
द्वादश	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	च ४	च ४	च ४	च ४	च ४
त्रिंशा.	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९

कुंभराशिसमवर्गपतिचक्रम्.

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०
गृह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
सप्तम	शु २	शु २	शु २	शु २	१७ ८ ३४ शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
नवम	श ११	श ११	श ११	१६ ४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
द्वादश	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
त्रिंशा	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३

अंश	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०
गृह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
सप्तम	बु ३	बु ३	२१ २५ ४३ बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
नवम	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२३ २० मं १	शु २	शु २	शु २
द्वादश	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
त्रिंशा	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३

अंश	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
सप्तम	चं ४	२५ ४२ ५१ चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
नवम	शु २	शु २	शु २	२६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
द्वादश	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
त्रिंशा	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

मीनराशिमनरांगतिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
गृह	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
सप्तम.	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	४ १७ ८ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	८ ३४ १७ शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	१२ ५१ २५ मं ८	गु ८	गु ८	गु ८	गु ८
नवम	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	३ २० चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	६ ४० र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	१३ २० शु ७	मं ८	मं ८	मं ८
द्वादश	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
त्रिंश	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु ७	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२

मीनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्काण	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
सप्तम	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	१७ ८ ३४ गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	२१ २५ ४२ श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२५ ४२ ५१ श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
नवम	मं ८	मं ८	मं ८	१६ ४० मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	२३ २० श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२६ ४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
द्वादश	शु ६	शु ६	शु ६	शु ६	शु ६	बु ७	बु ७	बु ७	बु ७	बु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
त्रिंश	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८

इन चक्रोंमें सप्तवर्गपति मेषादि १२ राशियोंको जुदे जुदे अंशोंके तीस तीस कलाके अंतरसे ६०कोष्ठक लिखके उसके नीचे सप्तवर्गके सामने उनके स्वामी लिखके उनके स्वगृहके स्पष्टताके वास्ते ग्रहके पास स्वगृहका राशंक लिखा है इसपरसे सुलभरीतिसे सप्तवर्गपति मालूम होते हैं।

उदाहरण—यहां सूर्य ०० । १३ । १०।४२ है, इसवास्ते मेषराशिका १३ अंश १० कला कोष्ठकके नीचेके सप्तवर्गपति आये।

गृ. प	हो. प.	द्रे. प	स. प.	न. प.	द्वा. प.	त्रि. प.
मं.	सू.	सू.	चं.	चं.	बु.	बृ.

इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका राश्यादिकसे चक्रपरसे सप्तवर्गपति होते हैं. इसी रीतिसे भावसप्तवर्गपति जानना.

ग्रहसप्तवर्गपतिचक्रम् । आश्रयगुणार्थम् ।

ग्र.	सूर्यः		चन्द्रः		भौमः		बुधः		गुरुः		भृगुः		शनिः	
स्वगृह	मं	स	श	श	सू	स	बृ	श	बु	श	श	स	बु	मि
होरा	सू	स्व	चं	स्व	सू	स	सू	ऽमि	चं	स	चं	स	सू	स
द्रेष्का.	सू	स्व	श	श	श	ऽमि	म	श	बु	ऽश	शु	स्व	शु	स
सप्त	चं	ऽमि	सू	ऽमि	शु	श	श	मि	मं	ऽमि	सू	स	बु	ऽमि
नवमां	चं	ऽमि	श	श	च	स	श	मि	बृ	स्व	बु	ऽमि	श	स्व
द्वाद.	बु	ऽमि	बृ	श	बृ	ऽमि	म	श	बृ	स्व	बृ	श	मं	स
त्रिंशा.	बृ	सू	बु	ऽमि	बृ	ऽमि	श	ऽमि	बु	ऽश	शु	स्व	मं	स

भावसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

भावाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सप्तवर्गबलोदाहरण ।

सूर्यका गृहपति भौम समके क्षेत्रमें है इसवास्ते गृहबल अष्टमांश ० । ७ । ३० होरापति सूर्य समके क्षेत्रमें है इसवास्ते होराबल० अष्टमांश ० । ७ । ३० द्रेष्काणपति सूर्य समके क्षेत्रमें है इसवास्ते द्रेष्काणबल अष्टमांश ० । ७ । ३० सप्तमांशपति चन्द्र शत्रुक्षेत्रमें है इसवास्ते सप्तमांशबल षोडशांश ० ।३।४५ नवमांशपति चन्द्र शत्रुक्षेत्रमें है इसवास्ते नवमांशबल

अथ ग्रहसप्तवर्गबलचक्रम् ।

सू.	च.	म	बु	बृ	शु.	श.	ग्रहाः
मं ० ७ स ३०	श ० २२ ऽमि ३०	सू ० ७ स ३०	बृ ० १ ऽश ५२॥	बु ० ३ श ४५	श ० २२ ऽमि ३०	बु ० ३ श ४५	गृह
सू ० ७ स ३०	च ० ३ श ४५	सू ० ७ स ३०	सू ० ७ स ३०	च ० ३ श ४५	च ० ३ श ४५	सू ० ७ स ३०	होरा
सू ० ७ स ३०	श ० २२ ऽमि ३०	बृ ० १ ऽश ५२॥	मं ० ७ स ३०	बु ० ३ श ४५	शु ० ७ स ३०	शु ० ७ स ३०	द्रेष्काण
च ० ३ श ४५	सू ० ७ स ३०	शु. ० ७ स ३०	श ० २२ ऽमि ३०	म ० ७ श ३०	सू ० ७ स ३०	बु ० ३ श ४५	सप्तमां.
चं. ० ३ श ४५	श ० २२ ऽमि ३०	च ० ३ श ४५	श ० २२ ऽमि ३०	बृ ० १ ऽश ५२॥	बु ० ३ श ४५	श ० २२ ऽमि ३०	नवमांश.
बु ० ३ श ४५	बृ ० १ श ५२॥	बृ ० १ ऽश ५२॥	म ० ७ स ३०	बृ ० १ ऽश ५२॥	बृ ० १ ऽश ५२॥	मं ० ७ स ३०	द्वादशां.
बृ ० १ ऽश ५२॥	बु ० ३ श ४५	बृ ० १ ऽश ५२॥	श ० २२ ऽमि ३०	बु ० ३ श ४५	शु ० ७ स ३७	म ० ७ स ३०	त्रिंशांश
० ३५ ३७॥	१ २४ २२॥	० ३१ ५२॥	१ ३१ ५२॥	० ०६ ५	० ५४ २२॥	१ ० ०	ऐक्य

पोडशांश ०।३।४५ द्वादशांशपति बुध शत्रुक्षेत्रमें है इसवास्ते द्वादशां
पोडशांश ० । ३ । ४५ त्रिंशांशपति गुरु अधिशत्रु क्षेत्रमें है इस
त्रिंशांशबल ० । १ । ५२ ॥ सूर्यके समवर्गके बलका योग ०।३५।
इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका समवर्गबल होताहै ॥ ५ ॥

शुक्रेन्दू समभांशके हि विषमेऽन्ये दद्युरङ्घ्रिं बलं
केन्द्राद्येषु च रूपकार्द्धचरणान्यच्छन्ति खेटाः क्रमात् ।
स्त्रीखेटौ चरमे नराः प्रथमके क्लीबौ च मध्ये तथा
द्रेष्काणे वितरन्ति पादमुदितं स्थानाख्यवीर्यं त्विदम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—समभांशके स्थितौ शुक्रेन्दू हीति निश्चयेनाङ्घ्रिं चतुर्थांशं
दद्याताम् । अन्ये रविभौमबुधगुरुशनयो विषमभांशे स्थितास्तदाङ्घ्रिं
दद्युः। भं चांशश्च भांशम् । विषमा राशयः १।३।५।७।९।११। शेषाः
केन्द्राद्येषु केन्द्रपणफरापोक्लिमेषु स्थिताः खेटाः क्रमाद्रूपकार्द्धचरणान्य
[illegible] भवति-केन्द्रे ग्रहे सति रू० १ बलं, पणफरे अर्द्धं
३० बलं, आपोक्लिमे चतुर्थांशं ० । १५ बलं यच्छंति । स्त्रीखेटौ
[illegible] द्रेष्काणे वर्तमानौ पादं बलं दत्तः। नराः—सूर्यमङ्गलगुरवः प्रथम
द्रेष्काणे पादं बलं [illegible]। क्लीबौ बुधशनी मध्ये द्रेष्काणे स्थितौ
[illegible] इदं [illegible] बलमुदितं तत्स्थानाख्यं वीर्यं [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥

अर्थः—शुक्र चंद्र यह समराशिमें किंवा समांशमें होय तो और सूर्य
[illegible], गुरु, बुध, शनि यह विषम राशिमें व विषमांशमें होवें तो
[illegible] बल देते हैं । यह केन्द्रमें कहिये लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानमें
[illegible] १ बल देते हैं । यह पणफरमें कहिये द्वितीय, पंचम, अष्टम,
[illegible] स्थानमें होंय तो अर्द्ध० ३०।० बल देते हैं । यह आपोक्लिममें
[illegible]

पुरुषग्रह प्रथम द्रेष्काणमें होंय और नपुंसकग्रह द्वितीय द्रेष्काणमें ह
और स्त्रीग्रह तृतीय द्रेष्काणमें होंय तो चरणबल ०।१५।० देते हैं। यह
:थान बलोंके योगको भी स्थान बल ऐसा कहते हैं.

युग्मायुग्मबलोदाहरण ।

यहां सूर्य भौम और शनि यह विषम राशिमें हैं,इसवास्ते इनका चर
ल, चन्द्र समराशिमें है इसवास्ते चन्द्रका चरण ०। १५ । ० बल, शु
समराशिमें किंवा समनवांशमें नहीं इसवास्ते इसका बल ० । ० । ० बु
रु विषम राशिमें किंवा विषमांशमें नहीं इनका बल ० । ० । ०

युग्मायुग्मबलम् ।

सू	च.	म.	बु.	बृ	शु	श	ग्र
०	०	०	०	०	०	०	
१५	१५	१५	०	०	०	०	बल
०	०	०	०	०	०	०	

अथ केन्द्रादिबलोदाहरणम् ।

सूर्य चन्द्रकेन्द्रमें हैं इसवास्ते इनका रूप बल, भौम शुक्र पणफरमें है
सवास्ते इनका अर्द्ध ० । ३० । ० बुध गुरु शनि यह आपोक्लिममें हैं
सवास्ते इनका चरणबल ।

केन्द्रादिबलम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	बृहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
१	१	०	०	०	०	०	
०	०	३०	१५	१५	३०	१५	बल
०	०	०	०	०	०	०	

अर्थ केन्द्रादिबलोदाहरणम् ।

यहां गुरु प्रथम द्रेष्काणमें है इसवास्ते चरणबल,शुक्र तृतीय द्रेष्काणमें
इसवास्ते चरणबल, शनि द्वितीय द्रेष्काणमें है इसवास्ते चरणबल, सू.मं.

प्रथम द्रेष्काणमें नहीं और बुध द्वितीय द्रेष्काणमें नहीं और चन्द्र तृतीय द्रेष्काणमें नहीं इसवास्ते इनका बल शून्य ० ।०। ० ॥ ६ ॥

द्रेष्काणबलचक्रम् ।

सूर्यः	चंद्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	भृगुः	रविः	ग्रहाः
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० १५ ०	० १५ ०	० १५ ०	बल.

स्थानबलयोगचक्रम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरु.	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
० ५८ ५६	० २० ४७	० ४ २१	० २ ७	० ३८ ५५	० ४९ ५८	० १७ ४७	उच्चबल १
० ३६ ३७॥	१ २४ २२॥	० ३१ ५२॥	१ ३१ ५२॥	० २६ १५	० ५८ २२॥	१ ० ०	सप्तवर्गै २
० १५ ०	० १५ ०	० १५ ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० १५ ०	युग्मायु ३
१ ० ०	१ ० ०	० ३० ०	० १५ ०	० १५ ०	० ३० ०	० १५ ०	केन्द्रादि ४
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० १५ ०	० १५ ०	द्रेष्काण ५
२ ५१ ३३॥	१ ० ०॥	१ ३१ १३॥	१ ४८ ५१॥	१ ३९ १०	२ २१॥ २०॥	२ २ ४७॥	योग.

मन्दाद्युमिनात्कुनाद्य दिवुकं शोध्यं त्रिपोभार्गवात्
शाप्यं शाट्टरुनोस्तमत्र रसभात्पुष्टं त्यजेच्चकतः ॥
दिग्नीपं रमट्टस्तयो समपदं रूपं सदा स्याद्दिद-
घ्रिशद्धकननोमनं शशिकुमार्कीणां परेषां बलम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—शनेः सकाशाल्लग्नं, सूर्याद्भौमाच हिबुकं चतुर्थं, विधोः भार्गवाच शोध्यं दशमं बुधाद्गुरोः सकाशादस्तं सप्तमं शोध्यमिति सर्वत्र ध्येयम् शेषं षड्राश्यधिकं चेत्स्याचदा द्वादशराशिभ्यः शोध्यम् ततः षड्हृत् षड्भक्तः सन् दिग्वीर्यं स्यात् । तुशब्दादुच्चबलभागप्रकारोऽत्रापि बोध्य इति । अथेत्यनंतरं समपजं कालजं बलमुच्यते । विधोः बुधस्य सदा दिनरात्रौ रूपं १ बलं स्यात् त्रिंशद्धकनतोन्नते शशिकुजार्कीणां परेषां बलं भवतः नतं त्रिंशता भक्तं यल्लब्धं तचन्द्रभौमशनीनां बलं भवेत् उन्नतं त्रिंशद्धक्तं रविगुरुशुक्राणां बलं स्यात् ॥

अर्थः—शनिमेंसे लग्न, सूर्य भौममेंसे चतुर्थ भाव, चन्द्र शुक्रमेंसे दशम भाव, बुध गुरुमेंसे सप्तम भाव यह क्रमसे कम करके शेष ६ राशिके अपेक्षा अधिक होय तो वह १२ राशिमें कम करके अनन्तर जो शेष रहै उसको उच्चबलमें पूर्वोक्तरीतिप्रमाण ६ से भाग देना तो ग्रहोंका दिग्बल होता है ॥

दिग्बलसारणी प्रवेश ।

ग्रहमेंसे लग्नादि कथित भाव कम करके जो शेष रहै उसको ६ से कम करना अर्थात् षड्भाल्प करना अब यहां सारणीमें ६ राशिकोष्ठक लिखके वह कोष्ठकके नीचे रूपादिफल उसमेंसे अभीष्ट ग्रहका जो ६ राशिमेंसे राश्यंक होय उसके नीचेका फल लेना राशिकोष्ठकके नीचे ३० अंशकोष्ठक और उसके नीचे ६० कलाकोष्ठक लिखा है उसमेंसे अभीष्टग्रहका जो अंश और कला आवे तत्तत्प्रमित कोष्ठकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिखा जो राशिफल तिसमें युक्त करना तो ग्रहोंका दिग्बल होता है ॥

दिग्बलसारणीस्वरूपम् ।

०	१	२	३	४	५	६	रा
०	०	०	०	०	०	१	
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	अं
०	०	०	०	०	०	०	

अंशफलचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ २०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०

कलाफलचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५५	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०	१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

उदाहरण—यहां सूर्य ०।१३।१०।४२ यह इसमेंसे चतुर्थ भा[illegible]
९।१२।४०।३४ कम करके शेष ३।०।३०।८ आया अब इसका राश[illegible]
३ है इसवास्ते ३ राशिफल ०।३०।० और अंश० है इसवास्ते अंशको
ष्टकका फल ०।०।० और कला ३० है इसवास्ते ३० कलाकोष्ठकका फ[illegible]
१०।० यह विकलामें युक्त किया तो ०।३०।१० यह सूर्यका दि[illegible]
भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका सारणीपरसे दिग्बल करना.

अब कालबल कहते हैं ।

दिग्बलचक्रम् ।

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
०	०	०	०	०	०	०
३०	५७	५१	६	४१	४९	१८
२०	१४	१२		१०	१५	४७

बुधका सर्वदा दिनमें किंवा रात्रिमें रूप १ बल, नतमें ३० से भाग देनेसे चन्द्र भौम और शनि इनका और उन्नतमें ३० से भाग दे तो सूर्य गुरु और शुक्र इनका नतोन्नत बल होता है अथवा नत द्विगुणित करे तो चन्द्र भौम शनि इनका और उन्न[illegible] द्विगुण करे तो सूर्य गुरु शुक्र इनका क्रमसे रीतिसे फलादि बल होता है.

उदाहरण—नत १५।४० इसको ३० से भाग देके ०।३१।२० यह चन्द्र भौम शनि इनका बल भया, उन्नत १४।२० इसको ३० से भाग देके ०।२८।४० यह सूर्य गुरु शुक्र इनका बल भया, और बुधका रूप १ बल ऐसा जानना ॥ ७ ॥

नतोन्नतबलचक्रम् ।

सू	च	मं	बु	बृ	शु	श
०	०	०	१	०	०	०
२८	३१	३१	०	२८	२८	३१
४०	२०	२०	०	४०	४०	२०

पक्षबलं त्र्यंशबलं वर्षमासदिनहोराबलम् ।

शुक्लेन्ते तिथिहृद्गतेंष्यतिथयो वीर्यं सतां भूच्युतं
पापानां द्विगुणं विधोरिदमथाह्नस्त्र्यंशकेषु क्रमात् ॥
सौम्यार्कार्किभुवां निशाः शशिसितारार्णा च रूपं सदे-
ज्यस्याथाभिचयाद्बली किल समामासद्युहोरेश्वराः ॥ ८ ॥

अन्वयः—शुक्ले अन्ते कृष्णे गतैष्यतिथयस्तिथिभिः पञ्चदश १५ भि-भाज्याः फलं सतां शुभग्रहाणां चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां बलं स्यात् । तदेव बलं भूच्युतं रूपाच्च्युतं पापानां रविभौमशनीनां पापयुतबुधस्य च वीर्यं बलं स्यात् । इदं चन्द्रबलं द्विगुणं कार्यम् । अथ पक्षबलकथनानंतरं त्र्यंश-बलमुच्यते अह्नो दिवसस्य अंशकेषु क्रमात् बुधसूर्यशनीनां रूपं बलं स्यात् निशो रात्रेस्त्र्यंशकेषु क्रमेण चन्द्रशुक्रभौमानां रूपं १ बलं भवति तद्यथा यदि दिने जन्म तदा दिनमानस्य त्रिभागं कार्यं चेत्प्रथमेंशे जन्म तदा बुधस्य रूपबलम्, अन्येषां शून्यं स्यात् । यदि द्वितीयेंशे जन्म तदा सूर्यस्य रूपं बलम् अन्येषां शून्यं, तृतीयेंशे शनेः रूपबलम् अन्येषां शून्यं स्यात् । एवं रात्रावपि इज्यस्य गुरोः सदा दिवारात्रौ वा जन्म स्यात् । तदा रूपं बलं भवति । अथेत्यनन्तरम् । अभिचयादारणदृष्ट्या समामासद्युहोरेश्वरो बली स्यात् । एतदुक्तं वर्षेशस्य बलं पादं ०।१५।० मासेशस्य ०।३०।० दिनेशस्य ०।४५।० होरेशस्य १।०।० बलम् ।

अर्थः—शुक्ल पक्षमें गततिथिको १५ से भाग देना और कृष्ण पक्षमें ऐष्य तिथिको १५ से भाग देना तो शुभग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) इनका

अंशफलचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ २०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०

कलाफलचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५५	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०	१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

उदाहरण—यहां सूर्य ०।१३।१०।४२ यह इसमेंसे चतुर्थ भाग ९।१२।४०।३४ कम करके शेष ३।०।३०।८ आया अब इसका राशि ३ है इसवास्ते ३ राशिफल ०।२०।० और अंश० है इसवास्ते अंशको ठकका फल ०।०।० और कला ३० है इसवास्ते ३० कलाकोठकका फल १०।० यह विकलामें युक्त किया तो ०।३०।३० यह सूर्यका दिग्बल भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका सारणीपरसे दिग्बल करना.

अब कालबल कहते हैं ।

दिग्बलचक्रम् ।

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
० ३० १०	० ५७ ३५	० ५१ १२	० ६	० ४२ १०	० ४५ १४	० १८ ४५

बुधका सर्वदा दिनमें किंवा रात्रिमें रूप १ षष्ट, नतमें ३० से भाग देनेसे चन्द्र भौम और शनि इनका और उन्नतमें ३० से भाग दे तो सूर्य गुरु और शुक्र इनका नतोन्नत बल होता है अथवा नत द्विगुणित करे तो चन्द्र भौम शनि इनका और उन्नत द्विगुण करे तो सूर्य गुरु शुक्र इनका सगम रीतिसे कलादि षष्ट होता है.

दिनपति बनानेकी रीति ।

अपने देशसे दक्षिणोत्तर मध्य रेखाका जो योजन होय उसमें उसका चतुर्थांश कम करके तन्मित फल पूर्व मध्यरेखा होय तो १५ घडीमें कम करना अथवा पश्चिम रेखा होय तो १५ घडीमें युक्त करना अनन्तर यह संस्कार युक्त घडी दिनार्धसे जितना पल कमती होय उतना पल सूर्योदयके अनन्तर वार प्रवृत्ति होती है । अथवा संस्कृत घडी दिनार्धसे जितना पल अधिक होय उतना पलसे सूर्योदयके पूर्व वार प्रवृत्ति होती है इस प्रकारसे जन्मकालमें जो वार होय सो वारपति जानना ।

होरापति बनानेकी रीति ।

वारप्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक जो घटी पल होय उसको दूना करना। उसको २ स्थानमें रखना। प्रथम स्थानमें ५ से भाग देना, शेषको द्वितीय स्थानमें घटाय देना और १ युक्त करना तो वारपतिके क्रमसे अर्थात् १ बचे तो सूर्य, २ में शुक्र, ३ में बुध, ४ में चन्द्र, ५ में शनि, ६ में गुरु, ७ में भौम यह क्रमसे इष्टवार पतिसे गणना करके जो वार आवे उसकी वह गत होरा जानना, अनन्तर वर्त्तमान होराका स्वामी होरापति जानना ।

पक्षबलसारिणीप्रवेश ।

तात्कालिक सूर्य और चन्द्र इनका अन्तर षड्भाल्प करना। अब सारणीमें६राशिकोष्ठक लिखके वह कोष्ठकके नीचे रूपादि फल लिखा है उसमेंसे अन्तरका जो राश्यंक होय उसके नीचेका फल लेना। राशिकोष्ठकके नीचे ३० अंश कोष्ठक और ६०कलाकोष्ठक लिखा है। उसमेंसे अन्तरका जो इष्ट अंश और कला आवे उसके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशिफल उसमें युक्त करना तो शुभग्रहोंका पक्षबल होता है और यह रूप १ में कम करे तो पापग्रहोंका पक्षबल होता है इसमेंसे चन्द्रका बल द्विगुणित करना ।

और यहीं १ में कम करके पापग्रह है (रवि भौम शनिका) पक्षबल होता
उसमेंसे आया जो चन्द्रबल सो दूना करना व तात्कालिक सूर्य और च
इनका अन्तर ६ राशिकी अपेक्षा ज्यादा होय तो १२ में कम करना
शेष रहें उसको उच्चबलमें पूर्वोक्त रीतिके प्रमाण ६ से भाग देना तो शु
ग्रहोंका और वही ६० मेंसे कम करके पापग्रहोंका पक्षबल होता है
त्र्यंशबल दिनके प्रथम त्रिभागमें जन्म होय तो बुधका रूप १ बल, द्वि
त्रिभागमें सूर्यका, तृतीय त्रिभागमें शनिका ऐसाही रात्रिमें प्रथम त्रिभा
चन्द्रका, द्वितीय त्रिभागमें शुक्रका, तृतीय त्रिभागमें भौमका और सर्व
कालमें गुरुका रूप१।०।०जानना, वर्षपतिका चरणबल, मासपतिका अर्ध
बल, दिनपतिका चरणत्रय बल, होरापतिका रूपबल यह वर्षमास दि
होरापतिका बल जानना इन चारों बलके योगको कालबल ऐसा कहते हैं

वर्षपति बनानेकी रीति ।

" द्विष्टोऽयं ग्रहलाघवद्युनिचयश्चक्राहतैः पद्शरैः
षड्दस्रैश्च युतः सबाणतपनः सेपुश्च खाङ्गाग्निभिः ॥
खाग्न्यंशैर्विहृतं फले गुणयमघ्ने चक्रनिघ्नाक्षरे
खांपंतं सत्रियुगे नगोर्वरितकेऽस्तोऽर्कात्समामासपौ ॥ "

अर्थः—अभीष्ट चक्रको ५६ से गुणके उसमें अहर्गण युक्त करना
अनंतर उसीमें १२५ युक्त करना ३६० से भाग देना जो भागाकार आवे
उसको ३ से गुणके गुणाकारको चक्रके ५ से गुणके उसमें २ युक्त करके
सब अंक एकत्र करके ७ से भाग देके जो शेषांक रहे सो क्रमसे सूर्यादि
वर्षेश्वर वर्षाधिप होता है ।

मासपति बनानेकी रीति ।

अभीष्ट चक्रको २६ से गुणके उसमें अहर्गण युक्त करना अनंतर
उसीमें ५ युक्त करना ३० से भाग देना जो भागाकार आवे उसको दूना
करके उसमें ४ युक्त करके ७ से भाग देके जो शेषांक रहे सो क्रमसे
सूर्यादि वर्षेश्वर मासपति होता है ।

रूपमें कम करके ० । २७ । २४ यह पापग्रहोंका पक्षबल और चंद्रका द्विगुणित १ । ५ । १२ जानना.

पक्षबलचक्रम् ।

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्र.
०	१	०	०	०	०	०	बल
२७	०५	२७	३२	३२	३२	२७	
२४	१२	२४	३६	३६	३६	२४	

दिनरात्रित्रिभागबलोदाहरणम् ।

यहां दिनमान ३२ । ०१ इसका त्रिभाग १० । ४० इस वास्ते दिनके तृतीय त्रिभागमें जन्म इसवास्ते शनिका रूपबल और गुरुका रूपबल जानना और ग्रहोंका शून्यबल जानना.

दिनरात्रित्रिभागबल.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ	शु	श	ग्र
०	०	०	०	१	०	१	बल
०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	

वर्षपतिबलोदाहरणम् ।

चक्र ३३ को ५६ से गुणके १८४८ यह भया इसमें अहर्गण ११७८ युक्त करके ३०२६ यह भया, इसमें १२५ युक्त करके ३१५१ इसको ३६० में भाग देके ८ भया ३ से गुणके २४ भया चक्र ३३ को ५ से गुणके १६५ इसमें ३ युक्त करके १६८ भया पूर्वोक्त अंक २४ युक्त करके १९२ इसको ७ से भाग देके शेषांक ३ इसवास्ते वर्षपति भौम इसका बल ० । १५ । ० जानना.

मासपतिबलोदाहरणम् ।

चक्र ३३ को २६ से गुणके ८५८ भया इसमें अहर्गण ११७८ युक्त करके २०३६ यह इसमें ५ युक्त करके २०४१ भया इसको ३० से भाग

राशिफलचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६
०	०	०	०	०	०	१
०	१०	२०	३०	४०	५०	०
०	०	०	०	०	०	०

अंशफलचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

कलाकोष्ठकम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

उदाहरण–सूर्य ०।१३।१०।४२ चन्द्र ९।५।२२।३५ इनका अं
८।२२।११।५३ यह ६ से ज्यादा है इसवास्ते १२ मेंसे कम करके ३।५
४८।७ यह भया। अब राशिकोष्ठक ३ इसका फल ०।३०।० इसको अं
कोष्ठक ७ इसका फल २।२० और कलाकोष्ठक ४८ इसका फल १६ एक
करके २।३६ युक्त किया तो ।०।३२।३६ यह [illegible] भया। प

देके ६८ भया इसको दूना करके १३६ यह इसमें ४युक करके १४०इसको
७ से भाग देके शेषांक ० इसवास्ते मासपति शनि इसका बल ० । ३० । ०।

दिनपतिबलोदाहरणम् ।

देशांतर योजन ५ इसमें इसीका चतुर्थांश १ । १५ कम करके ३।४५
पल यह पश्चिम देशांतर है इसवास्ते १५ घडीमें युक्त करके १५।३।४५
यह दिनार्ध १६ । २१ इससे १ घडी १८ पल कमती है इसवास्ते सूर्यो-
यके अनंतर १ घडी १८ पलसे वारप्रवृत्ति भई जन्मकाल रविवारको १
घडी १ पलपर है इसवास्ते रवि यही दिनपति इसका बल ०।४५।०जानना

होरापतिबलोदाहरणम् ।

वारप्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक ३०।४२ इसको २ से गुणके६१घडी२
पल इसको ५ से भाग देके१२आये यहां इष्टवारपति रवि इससे गणनाये
होरापति शनि और वर्त्तमान होरापति गुरु इसका बल रूप(१)जानना।४

वर्षमासदिनहोरापतिचक्रम् ।

सू	चं	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
दिन	०	वर्ष	०	होरा	०	मास	
०		०		१		०	बळ
४५	०	१५	०	०	०	३०	
०	०	०	०	०	०	०	

कालबलयोगचक्रम् ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ग्र
१	१	१	१	१	१	२	
४१	१६	१३	१२	१	१	२८	बळ
५	१२	४४	३६	१६	१६	४४	

इदानीं क्रमप्राप्तचेष्टाबलं विवक्षुरादावयनबलमाह-
क्रान्तिभागैर्युता ज्ञस्य सिद्धाः शनीन्द्वीर्युतोना:
क्रान्तिभाग्यैः ॥ त्रिंशमं परेषां गजाम्भोधि-
२८ भक्ता भवेदायनं वीर्यमर्कस्य द्विघ्नम् ॥ ९ ॥

: ंशफल १३।२४।०० में युक्त किया तो
ंति भई इसी प्रमाण सब ग्रहोंकी क्रांति
गोलमें है इस वास्ते उत्तर क्रांति जानना ।

क्रांतिचक्रम्

मंगल.	बुधः	बृह	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
१०	५	०	४	२३	
१७	३७	२२	७	४५	बलम्
३१	५८	४०	५७	२२	
उत्तर	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण	उत्तर	उत्तर दक्षिण

क्रांतिसारिणी ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	फ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

कलाविकलाफल ।

२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५
४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

रिमित अंक लेके उसके ऊपरके अंशादि शेषको गुणके उस गुणाकारको १० से भाग देके जो भागाकार आवे उसमें पीछेके अंककी मिलान युक्त करना और जो मिलान आवे तिसको १० से भाग देना जो भागाकार आवे सो अंशादि क्रांति जानना जो सायन ग्रह उत्तर गोलमें होय तो उत्तर क्रांति और दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण क्रांति जानना गोल ऐसा कि, मेषसे ६ राशितक सायनग्रह होय तो उत्तर गोल, तुलासे ६ राशितक सायन ग्रह होय तो दक्षिण गोल जानना ।

क्रांत्यंकचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४

क्रांतिसारिणीप्रवेश ।

प्रथम सायन ग्रह करके उसका भुज करके उसका भाग करना अनंतर सारणीमें अंशकोष्ठक ९० लिखके उसके नीचे अंशादिफल लिखा है और दश दश अंशके अन्तरसे अलग ६० कलाविकलाकोष्ठक लिखा है। अब अभीष्ट भुजभागकोष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेके उसकी भुजभागके नीचे जो कला विकला हो तत्तत्परिमित कलाविकलाकोष्ठकके नीचेका कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना ता ग्रहोंकी अंशादि क्रांति होती है ।

उदाहरण–सूर्य ०।१३।१०।४२ इसमें अयनांश २५।४४।०३ युक्त करके ०।१।५।५४।४५ यह सायन सूर्य इसका भुज किया तो वही रहा ०।१।५।५४।४५ इसके अंश ३५।५४।४५ यह हैं इसवास्ते भुजभाग कोष्ठक ३५ से नीचेका अंशादि फल १३।२४।०० कला ५४ का कला विकलाकोष्ठकका कलादि फल १८।२२ विकला ४५ का कलाविकला कोष्ठकका विकलादि फल १५ । १९ यह कलाविकलाकोष्ठकफल एकत्र

करके १८ । ३७ यह पूर्वोक्त अंशफल १३।२४।०० में युक्त किया तो १३।४२।३७ यह सूर्यकी क्रांति भई इसी प्रमाण सब ग्रहोंकी क्रांति बनाके अब सायन सूर्य उत्तरगोलमें है इस वास्ते उत्तर क्रांति जानना ।

क्रांतिचक्रम्

सूर्य	चन्द्रः	मंगल	बुधः	बृह	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
१३ ४२ ३७	२० ५६ २४	१० १७ ३१	५ ३७ ५८	० २२ ४०	४ ७ ५७	२१ ४५ २२	बलम्
उत्तर	दक्षिण	उत्तर	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण	उत्तर	उत्तर दक्षिण

क्रांतिसारिणी ।

भु. अं	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
अं फ.	० ० ०	० २४ ०	० ४८ ०	१ १२ ०	१ ३६ ०	२ ० ०	२ २४ ०	२ ४८ ०	३ १२ ०	३ ३६ ०	प.

कलाविकलाफल ।

को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. घ	० ०	० ०	० ०	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५
[illegible]															
क. घ	१२ ०	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६
को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. प.	१८ ०	१८ २४	१८ ४८	१९ १२	१९ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६

कलाविकलाफल ।

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क ध	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
[illegible]	३३	५५	१७	३९	१	२४	४६	८	३१	५२	१५	३७	५९	२१	४३

क्रांतिसारिणी ।

मु. अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
क्र फ	११ ४२ ०	१२ २ २५	१२ २२ ४८	१२ ४२ १२	१३ ३ ३६	१३ २४ ०	१३ ४४ २५	१४ ४ ४८	१४ २५ १२	१४ ४५ ३६	फ.

कलाविकलाफल ।

क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. ध.	० ०	० २०	० ४०	१ १	१ २१	१ ४२	२ २	२ २३	२ ४३	३ ३	३ २४	३ ४४	४ ४	४ २५	४ ४५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

क्रांतिसारिणी ।

मु. स.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
अंश.	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	
	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	फ.
कला.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

कलाविकलाफल ।

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
इ. घ.	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४
	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
इ. घ.	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८
	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
इ. घ.	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३
	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
इ. घ.	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	३०	४८	६	२४	४२		१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२

क्रांतिसारिणी ।

मु. स.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अंश.	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
कला.	६	[illegible]	३६	[illegible]	६	[illegible]	३६	[illegible]	६	[illegible]	फ.
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

क्रांतिसारिणी ।

मु. अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
अंश. कक्षा.	१५ ६ ०	१५ २४ ०	१५ ४२ ०	१६ ० ०	१६ १८ ०	१६ ३६ ०	१६ ५४ ०	१७ १२ ०	१७ ३० ०	१७ ४८ ०	फ.

कलाविकलाफल ।

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. घ.	० ०	० १८	० ३६	० ५४	१ १२	१ ३०	१ ४८	२ ६	२ २४	२ ४२	३ ०	३ १८	३ ३६	३ ५४	४ १२
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. घ	४ ३०	४ ४८	५ ६	५ २४	५ ४२	६ ०	६ १८	६ ३६	६ ५४	७ १२	७ ३०	७ ४८	८ ६	८ २४	८ ४२
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. घ.	९ ०	९ १८	९ ३६	९ ५४	१० १२	१० ३०	१० ४८	११ ६	११ २४	११ ४२	१२ ०	१२ १८	१२ ३६	१२ ५४	१३ १२

क्रांतिसारिणी ।

मु. अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अं. फ.	१८ ६ ०	१८ २१ ०	१८ ३६ ०	१८ ५१ ०	१९ ६ ०	१९ २१ ०	१९ ३६ ०	१९ ५१ ०	२० ६ ०	२० २१ ०	फ.

कलाविकलाफल।

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. घ.	० ०	० २	० ४	० ७	० ९	० ११	० १४	० १६	० १८	० २१	० २३	० २५	० २७	० ३०	० ३२
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. घ.	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	० [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क. घ.	१ १२	१ १४	१ १६	१ १९	१ २१	१ २३	१ २६	१ २८	१ ३०	१ ३३	१ ३५	१ ३७	१ ४०	१ ४२	१ ४४
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. घ.	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५५	१ ५७	१ २१	२ २	२ ४	२ ६	२ ९	२ ११	२ १३	२ १६	२ १८	२ २०

अयनवलसारिणीप्रवेश।

ग्रहोंके दक्षिणोत्तरक्रांतिसम्बन्धसे अपनवलसारिणीमें शून्यसे २४ तक २५ क्रांतिभागकोष्ठक दो ठिकाने लिखा है, जब सूर्य, मंगल, गुरु, भृगु इनकी उत्तरक्रांति और शनि,चन्द्र इनकी दक्षिणक्रांति और बुधकी दक्षिण किंवा उत्तर क्रांति हो तब प्रथमक्रांतिभागकोष्ठकमेंसे अभीष्ट क्रांतिभाग कोष्ठकके नीचेका रूपादि फलको ले उसको अंशकोष्ठकके आगे६० कला विकला कोष्ठक लिखा है उसमेंसे क्रांतिभागके नीचे जो कला विकला होय तत्तत्परिमित कलाविकलाकोष्ठकके नीचेका ४७ कोष्ठकसे कलाका विकलादि और विकलाका प्रतिकलादि और ४८ कोष्ठकसे कलाका कलादि वैसाही विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना तो भिन्नभिन्न ग्रहोंका अयनवल होता है। जब सूर्य, भौम, गुरु, शुक्रकी दक्षिण क्रांति और शनि चन्द्रकी उत्तर क्रांति होय तब द्वितीय क्रांतिभागकोष्ठकमेंसे अभीष्टक्रांतिभाग कोष्ठकके नीचेका रूपादि फल लेना। अनंतर आगे ६० कलाविकलाकोष्ठक लिखा है उसमेंसे अभीष्टक्रांतिभागके नीचे जो कला विकला होय तत्तत्परिमित कला विकलाकोष्ठकके नीचेका कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके लिया जो अंशफल उसमेंसे कम करना तो ग्रहोंका अयनवल तैयार होता है. यह अयनवल सूर्यका मात्र दूना करना।

प्रथमक्रांतिभागचक्र अंशफल-
अयनबलसारिणी ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
० ३० ०	० ३१ १५	० ३२ ३०	० ३३ ४५	० ३५ ०	० ३६ १५	० ३७ ३०	० ३८ ४५	० ४० ०	० ४१ १५	० ४२ ३०	० ४३ ४५	० ४५ ०
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	०
० ४६ १५	० ४७ ३०	० ४८ ४५	० ५० ०	० ५१ १५	० ५२ ३०	० ५३ ४५	० ५५ ०	० ५६ १५	० ५७ ३०	० ५८ ४५	० ० ०	० ० ०

द्वितीयक्रांतिभागअंशफल ।

प.को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
क.प.	० ३० ०	० २८ ४५	० २७ ३०	० २६ १५	० २५ ०	० २३ ४५	० २२ ३०	० २१ १५	० २० ०	० १८ ४५	० १७ ३०	० १६ १५
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
० १५ ०	० १३ ४५	० १२ ३०	० ११ १५	० १० ०	० ८ ४५	० ७ ३०	० ६ १५	० ५ ०	० ३ ४५	० २ ३०	० १ १५	० ० ०

फलाफल ।

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	[illegible]
क.फ.	० ०	१ १५	२ ३०	३ ४५	५ ०	६ १५	७ ३०	८ ४५	१० ०	११ १५	१२ ३०	१३ ४५	१५ ०	१६ १५	१७ ३०	०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
क.फ.	१८ ४५	२० ०	२१ १५	२२ ३०	२३ ४५	२५ ०	२६ १५	२७ ३०	२८ ४५	३० ०	३१ १५	३२ ३०	३३ ४५	३५ ०	३६ १५	०
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
क.फ.	३७ ३०	३८ ४५	४० ०	४१ १५	४२ ३०	४३ ४५	४५ ०	४६ १५	४७ ३०	४८ ४५	५० ०	५१ १५	५२ ३०	५३ ४५	५५ ०	२
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
क.फ.	५६ १५	५८ ३०	५९ ४५	१ ० ०	१ १ १५	१ २ ३०	१ ३ ४५	१ ५ ०	१ [illegible]	१ [illegible]	१ ८ [illegible]	१ १० [illegible]	१ ११ १५	१ १२ ३०	१ [illegible]	१

उदाहरण—सूर्यकी उत्तर क्रांति १३।४२।२७ का अंश १३ है, इसवास्ते यहां प्रथम क्रांतिभागकोष्ठक १३ का फल० । ४ घटी १५ इसकी क्रांतिभागके नीचेकी कला ४२ विकला २७ इसका कलाका विकलादि और विकलाका प्रतिकलादि फल एकत्र करके ५३।१६ यह विकलामें युक्त करके ०।४७।८ यह दूना करके १।३४।१६ यह सूर्यका अयनबल भया इसी प्रमाण सारणीसे चन्द्रादिकोंका अयनबल होता है ॥ ९ ॥

अयनबलचक्रम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
१	०	०	०	०	०	०	
३४	५६	५२	३७	२९	३४	०	बल
१६	१०	५२	२	३१	५०	१८	

इदानीं भौमादीनां चेष्टाबलमाह ।

मध्यस्पष्टयुतेर्दलोनितचलं चेष्टाख्यकेन्द्रं कुजात्
स्यात्तच्चेद्गणाच्च्युतं षडधिकं पड्लञ्च चेष्टाबलम् ॥
स्यादेकोत्तररूपमद्रिविहृतं नैसर्गिकं स्याद्बलं
मन्दारज्ञसुरेज्यशुक्रशशभृत्तीक्ष्णद्युतीनां क्रमात् ॥ १० ॥

अन्वयः—मध्यस्पष्टयोर्ग्रहयोर्योगार्धेनोनितं चलं नाम शीघ्रोच्चं तदा भौमादीनां चेष्टासंज्ञकं केन्द्रं स्यात् । तत्केन्द्रं चेत्षडधिकं तदा द्वादशराशिभ्यः शुद्धं ततः षड्हृच्चेष्टाबलं भवति । चकारादुच्चबलसाधनवद्भागविधिरत्रापि ज्ञेयः । अत्रेदं ध्येयम्—यदि मध्यस्पष्टयुतौ द्वादशाधिके तदा द्वादशभिस्तष्टं न कार्यमिति नैसर्गिकं बलं स्यादित्यस्य पूर्वापरेण संबंधः एकोत्तररूपमद्रिविहृतं तदा क्रमाच्छनिभौमबुधगुरुशुक्रचन्द्रसूर्याणां नैसर्गिकं बलं स्यात्, तद्यथा एकस्मिन् सप्तभक्ते शनेर्नैसर्गिकबलं द्वयोः सप्तभक्ते भौमस्य, एवं क्रमात् सर्वेषां ज्ञेयम् ॥ १० ॥

भाषा—मध्यम और स्पष्टग्रहका योगार्द्ध उसी ग्रहके शीघ्रोच्चमें कम करना तो भौमादिग्रहोंका चेष्टाकेन्द्र होता है । यह केन्द्र ६ राशिसे ज्यादा होय तो

चेष्टाबलसारिणी प्रवेश ।

चेष्टाकेन्द्र षड्भाल्प करके सारिणीमें ६ राशिकोष्ठक लिखके उसके नीचे कोष्ठकमें रूपादि फल लिखा है । उसमेंसे षड्भाल्प चेष्टाकेन्द्रका जो इष्ट राश्यंक होय उसके नीचेका फल लेना । अनन्तर राशिकोष्ठकके नीचे अंशकोष्ठक और ६० कलाकोष्ठक लिखा है, उसमेंसे षड्भाल्प केन्द्रके जो इष्टअंश और कला आवे तत्परिमिति कोष्ठकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशिफल उसमें युक्त करना तो ग्रहोंका चेष्टाबल होता है यह सारिणी प्रवेशसे इष्टकष्टाध्यायमेंका सूर्यचन्द्रका चेष्टाबल करनेके वास्ते काम पडता है ।

चेष्टाबलसारिणीराशिफल ।

०	१	२	३	४	५	६	०	०
०	०	०	०	०	०	१	०	०
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

अंशफल ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

१२ राशिमें कम करना। अनंतर उच्चबलमें पूर्वरीतिप्रमाण ६ से भाग देना चेष्टाबल होता है अथवा षड्भाल्प केन्द्रका अंशादिक करके इसको ३से भ देना तो सुगम रीतिसे चेष्टाबल होता है यह अयन और चेष्टाबल इनके योगः चेष्टाबल कहते हैं। अनुक्रमसे १ से ७ तक अंकको ७ से भाग देना क्रमसे शनि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र, सूर्य इनका नैसर्गिक बल होता अथवा ८। ३४। १७ इनको क्रमसे १ से ७ तक अंकसे गुणना तो श भौम इत्यादि ग्रहोंका कलादि नैसर्गिकबल होता है अथवा शनिके बल दूना तिगुना चौगुना करते जावे तो वही क्रमसे बल हो जायगा।

भौमादिग्रहोंका शीघ्रोच्च बनानेकी विधि।

बुध और शुक्र इनके शीघ्रकेन्द्रमें मध्यम सूर्य युक्त करनेसे बुध शुक्र शीघ्रोच्च होता है और मंगल, बृहस्पति, शनि इनका शीघ्रोच्च मध्यम सूर्य है

मध्यमग्रह ।

म	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
९	०	९	०	२	
२२	११	१२	११	१६	मं
७	११	१७	११	३१	
२५	५६	५१	५६	३७	

स्पष्टग्रह ।

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
४	११	९	१०	२	
११	२१	८	२६	१३	स्पष्ट
४	२०	१२	५६	२१	
१६	५३	३७	४	४९	

मध्यस्पष्टयोगः ।

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
१०	१२	१०	११	९	
३	२	२०	८	०	यो.
११	३२	३०	८	१	
४०	४१	१८	०	२२	

मध्यस्पष्टयोगदलचक्रम् ।

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र
५	६	५	५	२	
१	१	१०	१९	१९	यो.
३५	१६	१९	४	०	द.
५०	२४	१५	०	४१	

शीघ्रोच्चचक्रम् ।

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र
०	७	०	७	०	
११	१८	११	२४	११	शी.
११	१९	११	५४	११	च.
५६	१९	५६	१	५६	

चेष्टाकेन्द्रचक्रम् ।

म.	बु.	बृ.	शु	श.	ग्र.
७	१	७	२	१	
९	१६	०	९	२६	के.
३६	५८	५६	५०	११	
६	५१	४२	१	१९	

चेष्टाबलसारिणी प्रवेश ।

चेष्टाकेन्द्र षड्भाल्प करके सारिणीमें ६ राशिकोष्ठक लिखके उसके नीचे कोष्ठकमें रूपादि फल लिखा है । उसमेंसे षड्भाल्प चेष्टाकेन्द्रका जो इष्ट राश्यंक होय उसके नीचेका फल लेना । अनन्तर राशिकोष्ठकके नीचे अंशकोष्ठक और ६० कलाकोष्ठक लिखा है. उसमेंसे षड्भाल्प केन्द्रके जो इष्टअंश और कला आवे तत्परिमिति कोष्ठकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशिफल उसमें युक्त करना तो ग्रहोंका चेष्टाबल होता है यह सारिणी प्रवेशसे इष्टकष्टाध्यायमेंका सूर्यचन्द्रका चेष्टाबल करनेके वास्ते काम पडता है ।

चेष्टाबलसारिणीराशिफल ।

०	१	२	३	४	५	६	०	०
०	०	०	०	०	०	१	०	०
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

अंशफल ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

टीप—आरामेरेजपसीरीणां शीघ्रोचं स्यादिवाकरः ॥

कलाविकलाफल ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०	१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

उदाहरण–भौमका चेष्टाकेन्द्र ७।९।३६।६ यह ६ से अधिक है. इसवास्ते १२ मेंसे कम करके ४।२०।२३।५४ यह इसका राश्यंक ४ है। इसवास्ते ४ राशिकोष्ठकला फल ०।४०।० इसका अंश २० इसवास्ते २० कोष्ठकका फल ६।४० और कला २३ इसवास्ते २३ कलाकोष्ठककाफल ७।४० एकत्र करके ६।४८ यह राशिफलमें युक्त करके ०।४६।४८ यह भौमका चेष्टाबल भया. इसही प्रकार बुधादिकोंका करना।

चेष्टाफलचक्र । अयनचेष्टाफलचक्र ।

[illegible]	बु	शु	बृ.	श	०
०	०	०	०	०	
३६ ४८	४४ २०	४९ ४१	२१ ४६	२१ १६	०

सू.	च	म	बु	बृ.	शु.	श.
१	०	१	१	१	०	०
३४ १६	५६ १०	२९ ४०	३१ ३१	१९ १०	४६ ४६	३१ ३४

नैसर्गिकबलोदाहरण ।

एकको ७ में भाग देके ०।८।३४ यह शनिका, दोको ७ में भाग देके ०।१७।८ यह भौमका, ३ को ७ में भाग देके ०।२५।४३ यह बुधका, चारको ७ में भाग देके ०।३४।१७ यह गुरुका, पांचको ७ में भाग देके

०।४२।५१ यह शुक्रका, छःको ७से भाग देके ०।५१।२५ यह चन्द्रका, ७ को ७ से भाग देकें १।०।० यह सूर्यका इसी प्रमाण ग्रहोंका सब काल एकही नैसर्गिक बल होता है । यह बल सिद्ध है ॥ १० ॥

नैसर्गिकबल ।

ग्रह.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
	१	०	०	०	०	०	०
ब	०	५१	१७	२५	३४	४२	८
	०	२६	८	४३	१७	५१	३४

युद्धे बाणवियोगहृत्खचरयोर्वीर्यैक्ययोरन्तरं
स्वं सौम्यस्थबले क्षयं च यमदिक्संस्थस्य कुर्याद्बले ।
सदृष्टचाङ्घ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनं खेटवीर्यं भवेत्
भावानां बलमीशजं च नृचतुष्पादाख्यकीटाम्बुजाः ॥
जायाम्ब्वाद्यखभोनिताः खलु ततो दृग्वीर्यवत्तद्युतं
सदृष्टचाङ्घ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनं ज्ञेज्यदृग्युक्पुनः ॥ ११ ॥

अन्वयः—खचरयोस्ताराग्रहयोः भौमादिग्रहयोरित्यर्थः। युद्धे सति वीर्यैक्ययोर्बलैक्ययोरंतरं बाणवियोगहृत् शरांतरेण भक्तः सन् यल्लब्धं तत्सौम्यस्थस्योत्तरस्थस्य ग्रहस्य बले स्वं धनं कुर्यात् । यमदिक्संस्थस्य बले क्षयमृणं कुर्यात् । ग्रहस्य दक्षिणोत्तरस्थज्ञानं तु शरवशेन भवति । तद्यथा—यस्य ग्रहस्योत्तरः शरः स उत्तरस्थः यस्य दक्षिणः स दक्षिणस्थः। यदि द्वयोरुत्तरः शरस्तदा यस्याधिकशरः स उत्तरस्थोऽन्यो दक्षिणस्थः, यदि द्वयोर्दक्षिणशरस्तदा यस्याधिकशरः स दक्षिणस्थोऽन्य उत्तरस्थ इत्यर्थः । इदानीं दृग्बलं ग्रहाणां प्रागानीतं बलं सतां शुभग्रहाणां दृष्टिचतुर्थांशेन युतम् उग्राणां पापानां दृष्टिचतुर्थांशेन रहितं कार्यं तदा ग्रहाणां वीर्यं भवेत् । भावबलं। भावानामेकं बलं स्वामिबलमेव च पुनर्द्वितीयं बलं नृचतुष्पादाख्यकीटाम्बुजा भावाः नरचतुष्पादकीटजलचरराशयो भावाः क्रमेण जायाम्ब्वाद्यखभोनिताः, सप्तमचतुर्थप्रथमदशमभावैरूना यदि षड्भाधिकास्तदा द्वादश-

फलाविकलाफल ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

उदाहरण—भौमका चेष्टाकेन्द्र ७।९।३६।६ यह ६ से अधिक है. इसवास्ते १२ मेंसे कम करके, ४।२०।२३।५४ यह इसका राश्यंक ४ है। इसवास्ते ४ राशिकोष्ठकला फल ०।४०।० इसका अंश २० इसवास्ते २० कोष्ठकका फल ६।४० और कला २३ इसवास्ते २३ कलाकोष्ठकफल ७।४० एकत्र करके ६।४८ यह राशिफलमें युक्त करके ०।४६।४८ यह भौमका चेष्टाबल भया, इसही प्रकार बुधादिकोंका करना।

चेष्टाबलचक्र ।

म	बु	बृ	शु.	श	०
०	०	०	०	०	
५६	४४	४९	२१	२१	०
४८	२०	४१	५६	१६	

अयनचेष्टाबलचक्र ।

सु.	च	म.	बु	बृ.	शु.	श.
१	०	१	१	१	०	०
३४	५६	२९	२१	१९	४६	२१
१६	१०	४०	२१	१२	४६	३४

नैसर्गिकबलोदाहरण ।

एकको ७ से भाग देके ०।८।३४ यह शनिका, दोको ७ से भाग देके ०।१७।८ यह भौमका, ३ को ७ से भाग देके ०।२५।४३ यह बुधका, चारको ७ से भाग देके ०।३४।१७ यह गुरुका, पांचको ७ से भाग देके

०।४२।५१ यह शुक्रका, छःको ७से भाग देके ०।५१।२५ यह चन्द्रका ७ को ७ से भाग देकें १।०।० यह सूर्यका इसी प्रमाण ग्रहोंका सब काल एकही नैसर्गिक बल होता है । यह बल सिद्ध है ॥ १० ॥

नैसर्गिकबल ।

ग्रह.	सू	चं.	मं.	बु.	बृ	शु.	श.
ब	१	०	०	०	०	०	०
	०	५१	१७	२५	३४	४२	८
	०	२६	८	४३	१७	५१	३४

युद्धे बाणवियोगहृत्खचरयोर्वीर्यैक्ययोरन्तरं
स्वं सौम्यस्थबले क्षयं च यमदिक्संस्थस्य कुर्याद्बले ।
सद्दृष्टयङ्घ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनं खेटवीर्यं भवेत्
भावानां बलमीशजं च नृचतुष्पादाख्यकीटाम्बुजाः ॥
जायाम्बायखभोनिताः खलु ततो दृग्वीर्यवत्तद्युतं
सद्दृष्टयङ्घ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनं ज्ञेज्यदृग्युक्पुनः ॥ ११ ॥

अन्वयः—खचरयोस्ताराग्रहयोः भौमादिग्रहयोरित्यर्थः। युद्धे सति वीर्यैक्ययोर्बलैक्ययोरंतरं बाणवियोगहृत् शरांतरेण भक्तः सन् यद्लब्धं तत्सौम्यस्थस्योत्तरस्थस्य ग्रहस्य बले स्वं धनं कुर्यात् । यमदिक्संस्थस्य बले क्षयमृणं कुर्यात् । ग्रहस्य दक्षिणोत्तरस्थज्ञानं तु शरवशेन भवति । तद्यथा—यस्य ग्रहस्योत्तरः शरः स उत्तरस्थः यस्य दक्षिणः स दक्षिणस्थः। यदि द्वयोरुत्तरः शरस्तदा यस्याधिकशरः स उत्तरस्थोऽन्यो दक्षिणस्थः, यदि द्वयोर्दक्षिणशरस्तदा यस्याधिकशरः स दक्षिणस्थोऽन्य उत्तरस्थ इत्यर्थः । इदानीं दृग्बलं ग्रहाणां प्रागानीतं बलं सतां शुभग्रहाणां दृष्टिचतुर्थांशेन युतम् उग्राणां पापानां दृष्टिचतुर्थांशेन रहितं कार्यं तदा ग्रहाणां वीर्यं भवेत् । भावबलं। भावानामेकं बलं स्वामिबलमेव च पुनर्द्वितीयं बलं नृचतुष्पादाख्यकीटाम्बुजा भावाः नरचतुष्पादकीटजलचरराशयो भावाः क्रमेण जायाम्बायखभोनिताः, सप्तमचतुर्थैकादशदशमभावैरूना यदि षड्भाधिकास्तदा द्वादश-

शरके लिये शीघ्रकर्णका प्रकार ।

भौमादि जिस ग्रहका कर्ण साधना होय उसका अंतिम शीघ्रकेन्द्र लेके वह ६ राशिकी अपेक्षा अधिक होय तो १२ राशिमें कम करना और वह षड्भाल्प केन्द्रके राशिपरिमित कोष्ठकमें लिखा जो शीघ्रांक उसकी मिलान लेना, और एकाधिकराशिपरिमित शीघ्रांकमें केन्द्रकी राशि त्याग करके अंशादिकको गुणना और उस गुणाकारको ३० से भाग देना तो फल अंशादि आवेगा उसमें शीघ्रांककी मिलान युक्त करना जो योग आवे उसको क्रमसे कोष्ठकमेंके भाज्यांकसे भाग देना जो फल आवे सो अंशादि जानना। यह क्रमसे कोष्ठकमेंके शीघ्रकर्णांकमेंसे कम करना जो शेष रहै सो ग्रहोंका अंशादि शीघ्रकर्ण होता है और जो बुध शुक्रका पातांश कहे हैं उसमें अहर्गणोत्पन्न जो बुध और शुक्रके जो शीघ्रकेन्द्र होय सो ऊपर कहा जो पातांश उसमेंसे कम करके जो शेष अंश रहै सो बुध और शुक्रके पातांश होते हैं ।

भौमादि शर बनानेका प्रकार ।

मन्दस्पष्टखगात्स्वपातरहितात्क्रांत्यंशकाः केवलात्
कर्णांताख्रियमाहता अथ गुरोश्चेल्लोचनाप्ताः पुनः ।
स्वाङ्घ्र्यूना असृजोऽङ्गुल्यादिकशरः पातोनदिक् स्यादसौ
त्रिघ्नः स्यात्कलिकादिकः ।

भाषा-जिस ग्रहका शर बनाना होय उस ग्रहका पातांश मन्दस्पष्ट ग्रहमेंसे कम करके जो शेष रहै सो पातोन ग्रह भया । अनंतर पातोनग्रहको अयनांश देने विना उससे क्रांति लाना और उस क्रांतिको २२ से गुण और उस गुणाकारको शीघ्रकर्णसे भाग दे तो अभीष्ट ग्रहका अंगुलादि शर होता है, सो पातोन ग्रह उत्तर गोलमें होय तो उत्तर शर, दक्षिणगोलमें होय तो दक्षिण शर ऐसा जानना। वैसाही गुरुका शर करना होय तो ऊप-

रकी रीतिसे ले आये जो शर उसको २ से भाग देना तो गुरुका अंगुलादि शर होता है. और भौमका शर करना होय तो ऊपरकी रीतिसे ले आये जो शर उसमेंसे उसीका चतुर्थांश कम करना तो भौमका अंगुलादि शर होता है अनन्तर बनाया जो शर उसको ३ से गुण देना तो कलात्मक शर होता है ।

दृग्बल ।

यहाँ पर जिन ग्रहकी दृष्टि होवे उनमें शुभग्रहकी दृष्टिका ऐक्य करके उसका चतुर्थांश लेना तो वह धन दृग्बल होता है. और पापग्रहके दृष्टिका ऐक्य करके उसका चतुर्थांश लेना तो वह ऋण दृग्बल होता है. अनंतर धन दृग्बल और ऋण दृग्बल इनका अंतर करना तो स्पष्ट दृग्बल होता है।

टिप्पण–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र यह शुभग्रह और रवि, भौम, शनि यह पापग्रह हैं। बुध, पापग्रहयुक्त होय तो पाप, शुभग्रह युक्त होय तो शुभ, मिश्रग्रहयुक्त होय तो मिश्र फल जानना ।

उदाहरण–सूर्यके ऊपर शुभग्रहकी दृष्टिका ऐक्य १।३६।४२ इसका चतुर्थांश ०।२४।१० यह धन दृग्बल और सूर्यके ऊपर पापग्रहकी दृष्टिका ऐक्य ०।२९।२१ इसका चतुर्थांश ०।७।२० यह ऋण दृग्बल इनका अंतर ०।१६।५० यह धन दृग्बल सूर्यका भया इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका करना।

टिप्पण–शुभग्रहकी दृष्टिका चतुर्थांश पापग्रहकी दृष्टिके चतुर्थांशमें घट जाय तो ऋण दृग्बल अन्यथा धन दृग्बल जानना ।

दृग्बलचक्रमिदम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	भृगुः	शनिः	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	
१६	१	१	२	१६	१३	२१	दृग्बल
५०	४७	२६	५०	७	५१	४२	
धन	ऋण	ऋण	ऋण	धन	ऋण	धन	

पड्बलैक्यचक्रमिदम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंग.	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
२ ४२ ३३॥	३ ० ९॥	१ २१ १३॥	१ ४८ ५९॥	१ ३९ १०	२ २९ २०॥	२ २ ४७	स्थानबल १
० ३० १०	० ५७ ३४	० ५० ३२	० ६ ७	० ४१ ३०	० ४९ १४	० ३८ ४७	दिग्बल २
१ ४१ ५	१ ३६ ३२	१ १३ ४४	१ ३२ ३६	१ १ १६	१ १ १६	२ २८ ४४	कालबल ३
१ ३४ १६	० ५६ १०	१ २९ ४०	१ २१ २१	१ १९ १२	० ४६ ४६	० २९ ३४	चेष्टाबल ४
१ ० ०	० ५१ २६	० १७ ८	० २५ ४३	० ३४ १७	० ४२ ५१	० ८ ३४	नैसर्गिकबल ५
७ ३९ ३॥	७ २१ ५१॥	५ १२ १७॥	५ १४ ४६॥	७ ११ २५	५ ४५ २७॥	५ ५० २६	पांचोंका योग
० १६ धन ५०	० १ऋण ४७	० १ऋण ५६	० २ऋण २०	० १६ध. २	० ११ऋण ५०	० २१धन ४९	दृग्बल
७ ५१ ५३॥	७ २० ४॥	५ १० ५१॥	५ १२ २६॥	७ १९ २७॥	५ ३१ १७॥	६ २ ११	षड्बलयोग

भावबल ।

भाषा—लग्नादि भावोंके स्वामीका जो बल हो लग्नादि भावबल होता है मनुष्यराशिमें मिथुन, तुला, कन्या, धनका पूर्वार्द्ध और कुंभ इनमेंसे कोई

भाव कम करना। चतुष्पद राशि मेष, वृषभ, सिंह, धनका उत्तरार्द्ध और मकरका पूर्वार्द्ध इनमेंसे चतुर्थ भाव कम करना। कीटराशि कर्क, वृश्चिकमेंसे सप्तम भाव कम करना। जलचर राशि मीन और मकरका पश्चिमार्द्ध इनमेंसे दशम भाव कम करना अनंतर शेष६राशिकी अपेक्षा अधिक होय तो १२ राशिमेंसे कम करके षड्भाल्प शेषसे दिग्बलमें पूर्वोक्त रीतिप्रमाण बल साधन करना सो भाव दिग्बल होता है। अनंतर यह दिग्बल भावबलमें युक्त करना। भावपर जिन २ ग्रहोंकी दृष्टि होय उसमेंसे शुभग्रहोंके दृष्टिका ऐक्य करना और चतुर्थांश लेना तो यह धनदृग्बल होता है और पापग्रहोंके दृष्टिका ऐक्य करना उसकाभी चतुर्थांश लेना तो वह ऋणदृग्बल होता है। अनंतर धन ऋण दृग्बलका अंतर करना तो स्पष्टदृग्बल होता है। यह दिग्बल संस्कृत भावबलमें धन होय तो युक्त करना, ऋण होय तो कम करना फिर भावके ऊपरकी बुध गुरुकी दृष्टि युक्त करना तो स्पष्ट भावबल होता है।

भावबलोदाहरण—तनुभावस्वामी शुक्र इसका षड्बलैक्य ५।११।३७।३० यह तनुभावबल इसी रीतिसे धनादिभावोंका बल जानना। तनुभाव ६।१।४२।२६ यह लग्नराशिमें मनुष्यराशि है। इसवास्ते इसमेंसे दशमभाव ०।१।४२।२६ कम करके ६।०।०।० यह ६ से ज्यादा नहीं इसवास्ते ६ इसका फल पूर्वोक्त दिग्बलसारणीपरसे १।०।० यह तनुभावदिग्बल और यह तनुभाव बल ५।११।३७।३० इसमें युक्त करके ६।११।३७।३० यह दिग्बलसंस्कृत तनुभावबल भया। तनुभावपर शुभग्रहदृष्टैक्य १।४३।२ का चतुर्थांश ०।२५।४५ धनदृग्बल और पापग्रहदृष्टि १।३९।१२ इसका चतुर्थांश ०।२४।४८ ऋणदृग्बल इन दोनोंका अन्तर ०।०।५७ यह धन स्पष्टदृग्बल भया। यह दिग्बलसंस्कृत तनुभावबलमें युक्त करके ६।१२।३४।३० यह भया। अब तनुभावपर बुधदृष्टि ०।५०।५० गुरुदृष्टि ०।०।४४ युक्त करके ७।३४।८।३० यह भावस्पष्टबल भया इसी रीतिसे धनादिभावोंका भावबल करना।

भावबलचक्रम् ।

त.	ध.	स.	सु	पु	रि	जा.	मृ	ध.	क	आ.	व्य	भावाः
५ ३१ ३०	५ १० ५९	७ ३५ [illegible]	६ २ २२	६ २ ११	८ ३५ [illegible]	५ १० ५९	५ ३१ ३०	५ १२ २८	७ २० ७	७ ५१ ५३	५ १२ २५	भावस्वामिबलम्
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भावदिग्बलचक्रम्
६ ३१ ३७ ३०	५ २१ ११ ३०	८ १४ ४७ ०	६ २ ११ ०	६ २१ ३६ ०	८ १६ ६ ०	५ ३९ ५२ ३०	६ १० ५७ ३०	५ ३३ ५ ३०	७ ४१ ५ ३०	८ ४२ १२ ३०	६ ८ ४२ ३०	योगः
० ० ५७	० ८ ११	० १० ३८	० २ १	० २० २३	० ९ ३४	० १४ ६	० २६ २	० २१ १०	० १५ ७	० १ २१	० १७ २७	भावदृग्बल
३०	४०	०	०	०	०	५०	३०	३०	२०	३०	५०	योगः
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	बुधदृष्टिः
० ४४	१९ २९	४६ ३४	५१ ५	६ १७	३८ ४२	४५ ४२	५६ १६	१३ २४	० ०	० ०	० ०	गुरुदृष्टि
७ २४ ८ ३०	६ ० १९ ३०	० १० ४३ ०	६ २५ १५ ०	६ ८ १० ०	१ ५ १७ ०	६ ३१ ४३ ३०	७ ४२ ५५ ३०	६ ४२ ५९ ३०	८ ३८ ३२ ३०	८ ५० ३२ ३०	७ ४ ५० ३०	स्पष्टभावबलचक्रम्

जगदीशेन रचिते केशवीमन्थटिप्पणे ।
बलाधिकारः पूर्णोऽयं तद्भावार्थप्रकाशकः ॥ ४ ॥

इति बलाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अथेष्टकष्टाऽध्यायः ॥ ५ ॥

इष्टकष्टसाधनार्थरविचंद्रचेष्टाबलकेन्द्रसाधनम् ।
व्यर्केन्दुस्त्रिभयुक्तसायनरविश्चेष्टाख्यकेन्द्रं तयो-
र्गोकष्टेष्टविधौ बले कुरु ततः प्राग्वन्न वीर्याय ते ॥ १२ ॥

अन्वयः—विगतोऽर्को यस्मादिन्दोः स चासौ व्यर्केन्दुः त्रिभयुक्तसायनरविश्च क्रमेण तयोश्चेष्टाख्यकेन्द्रे भवतः । तद्यथा अर्कोनश्चन्द्रश्चन्द्रस्य चेष्टाकेन्द्रं राशित्रयेणायनांशैश्च युतो रविः सूर्यस्य चेष्टाकेन्द्रं स्यात्, ततस्ताभ्यां केन्द्राभ्यां प्राग्वद्भौमादिचेष्टाबलसाधनवत् षडधिकं चक्राच्च्युतं षड्हृतेत्यादिना रवीन्द्वोर्बलं कुरु भो गणकेत्यध्याहारः । कस्मिन् विधौ ? गोकष्टेष्टविधौ गावो रश्मयः कष्टं चेष्टं च कष्टेष्टे कष्टेष्टयोर्विधिः कष्टेष्टविधिस्तस्मिन् कष्टेष्टविधौ अयनयोश्चेष्टाबलयोः कष्टेष्टसाधने उपयोगोऽस्तीत्यर्थः । न वीर्यायेति भावः । यतः—"द्विसंगुणे चायनपक्षवीर्ये चेष्टाबले तिग्मकराब्जयोस्तः" इति ॥

भाषा—चन्द्रमेंसे सूर्य कम करना तो चन्द्रका चेष्टाकेन्द्र होता है, और सायनसूर्यमें ३ राशि युक्त करना तो सूर्यका चेष्टाकेन्द्र होता है अनन्तर इन केन्द्रोंसे रश्मि कष्टेष्टसाधनार्थ उपबलमें पूर्वोक्त रीतिप्रमाण चेष्टाबल बनाना यह चेष्टाबल पूर्वके ऐसा षड्बलार्थ नहीं समझना । कारण, सूर्यका जो अयनबल वही चेष्टाबल है इसवास्ते दूना करना और चन्द्रका जो पक्षबल वही चेष्टाबल है इसवास्ते दूना करना ।

उदाहरण—चन्द्र ९।५।२२।३५ यह इसमेंसे सूर्य ०।१३।१०।४२ यह कम करके ८।२२।११।५३ यह चन्द्रका चेष्टाकेन्द्र भया और ०।१३।१०।४२ यह इसको अयनांश २२।४४। ३ युक्त करके ११५।२४। ४५ यह सायनसूर्य इसको ३ राशि युक्त करके ४।५।२४।४५ यह सूर्यका चेष्टाकेन्द्र अनंतर यह चेष्टाकेन्द्रसे पूर्वोक्तरीतिसे पूर्वमें लिखी जो चेष्टाबलप्रकारसे उपबल बनाया सो यह चन्द्रचेष्टाबल ०।३२।३६ सूर्यका चेष्टाबल ०।४३।५८ ।

रश्मीष्टकष्टसाधनम् ।

ये चेष्टोच्चबले रसैर्विनिहते सैके निजा रश्मय-
श्चेष्टातुङ्गबलाहतेः पदमिहेष्टं स्याद्बलैनैकयोः ॥
घातान्मूलमिदं हि कष्टमथ तद्रूपं दशायाः फलं
वीर्यं दृक् पृथगिष्टकष्टगुणिते द्वे चेष्टकष्टाह्वये ॥ १३ ॥

अन्वयः—सूर्यादीनां भागानीते ये चेष्टोच्चबले ते षड्भिर्गुणिते सैके कृते सति निजा रश्मयः चेष्टाबलाच्चेष्टारश्मयः उच्चबलादुच्चरश्मयो भवन्ति इत्यर्थः। चेष्टाबलेनोच्चबलं गुणनीयं गोमूत्रिकागुणनरीत्या, तस्य मूलमिष्टसंज्ञं स्यात् चेष्टबलतुङ्गबलैनैकयोर्घातान्मूलं कष्टसंज्ञं स्यात् दशाफलं तद्रूपं स्यात्,अर्था-दिष्टकष्टतुल्यफलमिति इष्टेऽधिके सति शुभमधिकम्, कष्टेऽधिकेऽशुभमधिकम्, साम्ये मिश्रफलं दशायाः स्यात् । ग्रहस्य बलम् अर्थात्षड्बलैक्यं स्थानद्वये स्थाप्यम् तथा ग्रहोपरि या दृष्टयस्ता अपि स्थानद्वये ग्रहस्येष्टकष्टेन गुण्या-स्तदा क्रमेणेष्टबलं कष्टबलम्, इष्टदृष्टयः कष्टदृष्टयश्च भवन्तीति ॥ १३ ॥

भाषा—ग्रहोंका चेष्टाबल और उच्चबलको ६ से गुणके गुणाकारमें एक युक्त करना तो ग्रहोंकी उच्चरश्मि और चेष्टारश्मि होती है ग्रहोंका चेष्टाबल और उच्चबल इनके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो ग्रहोंका इष्ट होता है, एकमेंसे ग्रहोंकी उच्चबल और चेष्टाबल पृथक् पृथक् कम करके शेषका जो गुणाकार हो उसका वर्गमूल निकालना तो ग्रहोंका कष्ट होता है इन इष्टकष्टके प्रमाण ग्रहोंका शुभाशुभ दशाफल जानना । ग्रहोंका षड्बलैक्य और ग्रहोंपरिदृष्टिको पृथक् पृथक् इष्टसे और कष्टसे गुण देना तो ग्रहोंका इष्टबल और कष्टबल और ग्रहोंकी इष्ट दृष्टि और कष्ट दृष्टि होती है॥ १३॥

वर्गमूल निकालनेका प्रकार ।

"अन्त्यं यावदिहाद्याङ्काद्दूर्ध्वातिर्यक्स्थरेखया ।
संज्ञास्थानाङ्कानां च विषमाख्यसमक्रमात् ॥

त्यक्त्वान्त्याद्विषमात्कृतिं द्विगुणयेन्मूलं समे तद्धृते
त्यक्त्वा लब्धकृतिं तदाद्यविषमाल्लब्धं द्विनिघ्नं न्यसेत् ।
पंक्त्यां पंक्तिहृते समेऽन्त्यविषमात्त्यक्त्वाप्तवर्गं फलं
पंक्त्यां तद्द्विगुणं न्यसेदिति मुहुः पङ्क्तेर्दलं स्यात्पदम् ॥ "

अन्वयः—हे गणक ! अन्त्याद्विषमात् कृतिं त्यक्त्वा मूलं द्विगुणयेत्। समे तद्धृते सति तदाद्यविषमाल्लब्धकृतिं त्यक्त्वा लब्धं द्विनिघ्नं पंक्त्यां न्यसेत् समे पंक्तिहृते सति अन्त्यविषमादाप्तवर्गं त्यक्त्वा तत्फलं द्विगुणं पंक्त्यां न्यसेत् इति मुहुः कुर्यात् तदा पंक्तेः दलं पदं स्यात् ।

भाषा—जिस संख्याका मूल निकालना होय उसके दहने तरफसे विषम समका चिह्न करना । जबतक अंककी समाप्ति न होय तबतक करना अनं-रका सबसे बांई तरफ जो अन्त्य विषम होय उसमें जिस संख्याका वर्ग घटे सो-घटाय देना और जिसका वर्ग घटे उस संख्याको मूल कहते हैं, उसको दूना करना उसका नाम पंक्ति है, उस करके भाग देना जो विषमके पास सम होय उसमें लब्धि ऐसी लेना कि, जिसका वर्ग आगेके विषममें घट जाय तो उस लब्धिका वर्ग आगेके विषममें घटाय देना उसको दूना करके प्रथम जो पंक्ति संज्ञा है उसमें आगे एक स्थानमें बढायके रखना कदाचित् औरभी अंक होय तो उसी पंक्तिसे पुनः पूर्वरीतिसे भाग देना लब्धिका वर्ग आगेके विषममें घटाना लब्धि दूनी पंक्तिमें रखना ऐसा अंक समाप्तितक करते जाना फिर उस पंक्तिका आधा करणा तो मूल होता है।

सावयव अंकका मूल निकालनेकी रीति ।

" मूलावशेषकं सैकं षष्टिघ्नं विकलान्वितम् ॥
द्वियुक्तेन द्विनिघ्नेन मूलेनाप्तं स्फुटं भवेत् ॥"

अर्थ—जब मूल निःशेष न होय तो शेषमें १ युक्त करके ६० से गुण देना विकला मिला देना तब जो हो उसको आया जो मूल उसमें २ युक्त करके दूना करके भाग देना तो मूलका अवयव होता है यह स्थूल रीति है।

सूक्ष्म रीति यह है ।

" सैकेन द्विघ्नमूलेन भक्तं मूलावशेषकम् ॥
ऊर्ध्वं तु तदधः स्थाप्यं मूलं सूक्ष्मतरं भवेत् ॥"

अर्थ–जो मूल आया है उसको दूना करके १ युक्त करके मूलशेषमें भाग देना लब्धिको उस मूलके नीचे रखना तो सूक्ष्म मूलके आसन्न होगा।

और यह सबसे अच्छी रीति है ।

जिसका मूल लेना होय उसको ६० से गुण देना कला युक्त करना फिर ६० से गुणना उसका मूल लेना उसको ६० से भाग देना तो ठीक मूल होगा । यदि ऊपरका अंश शून्य होय तो नीचेके अंकको ६० से गुणके विकला युक्त करके मूल लेना उसको ६० से भाग देना तो मूल होता है।

रश्म्युदाहरण ।

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ इसको ६ से गुणके ४।११।४८ यह भया, इसमें एक युक्त करके ५।११।४८ सूर्यकी चेष्टारश्मि भयी । सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ है इसको ६ से गुणके ५।५३।३६ एक १ युक्त करके ६।५३।३६ यह सूर्यकी उच्चरश्मि भयी इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंकी चेष्टा रश्मि और उच्चरश्मि बनाना ।

चेष्टाबल ।

सू	चं.	मं.	बु	बृ	शु	श
०	०	०	०	०	०	०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उच्चबल ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
०	०	०	०	०	०	०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चेष्टारश्मि ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
५	४	५	५	५	१	१
११	१९	५०	२६	३८	११	७
४८	१६	४८	०	६	१६	१६

उच्चरश्मि ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
६	३	२	२	५	५	५
५३	५	२६	१२	५३	५१	४९
३६	५२	६	५२	१०	५८	४७

इष्टोदाहरण ।

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ यह है इसको सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ से गुणके ०।४१।१३ इसका वर्गमूल ०।४९।४२ यह सूर्यका इष्ट भया इसी प्रकारसे चन्द्रादिकोंका इष्ट बनाना ।

चेष्टोच्चबलगुणनचक्रम् । इष्टचक्रम् ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
०	०	०	०	०	०	०
४१	११	३	१	३२	१८	६
१३	१८	२४	१४	१४	१६	१८

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
०	०	०	०	०	०	०
४१	२६	१४	९	४३	३३	१९
४३	३	१७	४२	२८	७	२६

कष्टोदाहरण ।

सूर्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ यह एकमें कम करके ०।१८।२ इसको सूर्यका उच्चबल ०।५८।५६ को एकमें कम करके ०।१।४ इससे गुणके ०।०।१९ भया इसका वर्गमूल ०।४।२० यह सूर्यका कष्ट भया इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका कष्ट साधना ।

एकोनचेष्टोच्चबलगुणनम् । कष्टचक्रम् ।

सू	च	म	बु	बृ	शु	श
०	०	०	०	०	०	०
८	१०	१२	१८	३	६	२७
१९	५६	१६	७	३८	२२	१६

सू	च	म	बु	बृ	शु	श	म
०	०	०	०	०	०	०	
४	३२	२७	३०	१५	१९	५०	०
२०	४७	७	७	४०	३३	४६	१

इष्टकष्टफलोदाहरण ।

सूर्यका षड्वर्गैक्य ७।५१।५३।३० को सूर्यका इष्ट ०।४१।४२ से गुणके ५।३६।१०।०।५३ यह सूर्यका इष्टफल, अथवा सूर्यका कष्ट ०।४।२० से सूर्यका षड्वर्गैक्यको गुणके ०।३४।०।४।५२ यह सूर्यका कष्टफल भया इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंका इष्टफल और कष्टफल करना ।

इष्टबलचक्रम् ।

सू	चं.	मं	बु.	बृ.	शु.	श
६	३	१	०	५	३	१
३१	११	१४	५०	३३	३	५७
०	३	०	३०	४५	२	१८
५३	५७	६	४१	०	१०	०

कष्टबलचक्रम् ।

सू.	च	मं.	बु	बृ.	शु	श	ग्र.
०	४	२	२	१	१	४	
३४	०	२०	३६	५१	४८	३	०
४	२७	२१	४८	५८	३	५८	
५२	८	२६	४२	०	१६	०	

उदाहरण—चन्द्रके ऊपर सूर्यकी दृष्टि ०।१८।५४ इसको चन्द्रके इष्ट ०।२६।३ यह इसको गुणके ०।८।१२यह चन्द्रके ऊपर सूर्यकी इष्टदृष्टि, और चन्द्रका कष्ट ०।३२।४७ यह इससे सूर्यदृष्टि ०।१८।५४ गुणके ०।१०।१९यह कष्ट दृष्टिभई इसी रीतीसे सर्वग्रहोंपरकी इष्ट दृष्टि और कष्टदृष्टि करना॥

इष्टदृष्टिचक्रम् ।   कष्टदृष्टिचक्रम् ।

सू.	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ग्र	सू.	चं	मं.	बु	बृ	शु	श.
० ० ०	० ८ १२	० ७ २४	० ० ०	० ३ ३८	० ० ०	० ४ ३९	सू	० ० ०	० १० १९	० १४ २	० ० ०	० १ १३	० ० ०	० १० १४
० ३४ ३	० ० ०	० १० २	० ५ ०	० २० ५७	० ५ ३७	० ५ १०	च	० २ २८	० ० ०	० ११ ३	० १५ ३२	० ७ १	० ३ ११	० १० ४९
० २३ ५९	० २ २८	० ० ०	० ८ २	० ० ०	११ ७ ०	० ० ०	मं.	० ३ १५	० ३ ७	० ० ०	० २४ ३७	० ० ०	० १९ ११	० ० ०
० ० ०	० १ २८	० २ २७	० ० ०	० २४ ४२	० ० ०	० ११ ३९	बु	० ० ०	० ४ २२	० ४ ११	० ० ०	० ८ १७	० ० ०	० २४ ११
० १९ २१	० २९ २६	० ० ०	० ८ १८	० ० ०	० २० ४०	० ४ १	बृ.	० १ २६	० १३ ०	० ० ०	० २६ १९	० ० ०	० १२ १६	० ८ २९
० ६ ४३	० ० ०	० ६ ४२	० ० ०	० १९ ५८	० ० ०	० ११ ३९	शु	० ० १६	० ० ०	० ४३ ४९	० ० ०	० १३ ३३	० ० ०	० १४ ४७
० २ २०	० ११ १६	० ११ १९	० ७ ७	० १५ ५७	० २४ १	० ० ०	श	० ० १	० २६ ४६	० १९ १	० २३ १६	० १५ २१	० १४ २७	० ० ०

सप्तवर्गशुभाशुभसाधनम् ।

स्वोच्चे रूपं त्रिकोणे चरणविरहिते स्वर्क्षगेऽर्द्धं त्रयोशां-
शाश्चाधीशर्क्षे इष्टर्क्षयुजि च चरणः स्यात्समर्क्षेऽष्टमांशः ॥
भूपांशो वैरिगेहेऽध्यरिभयुजि रदांशश्च नीचे खमीशा-
दिष्टं गेहे तदूनैकमसदथ दलं पट्टसु कार्यं तदैक्ये ॥ १४ ॥

पंक्त्योः सप्तसु कोष्ठयोः प्रथमयोरिष्टासदैक्ये कृता-
ऽप्ते स्थाप्ये भद्रलादिपट्टसु च तदर्धे वर्गपानां पृथक् ॥
कृत्वोक्त्या सदसद्युती निजनिजे तन्निघ्न इष्टाशुभे
वर्गद्तस्थखगौजसोः सदसतोर्घातात्पदघ्ने स्फुटे ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्वोच्चे मूलत्रिकोणे स्वर्क्षादिगते ग्रहे रूपं पादोनं रूपार्द्धमि-
त्यादि । गेहे गृहस्थाने ईशात्स्वामिन इष्टं स्यात् । तद्यथा—ग्रहो यस्मिन्
गृहे वर्तते तत्स्वामी यदि स्वयं तदा रूपार्द्धं बलम् यद्यधिमित्रगृहे तदा त्रयो-
शांशाः, मित्रगृहे चतुर्थांशः, समगृहेऽष्टमांशः, शत्रुगृहे भूपांशः, अधिशत्रु-
गृहे दन्तांशः, नीचे खं शून्यम्, एतदूनं रूपात्कष्टं गेहे गृहस्थानस्ययोरिष्ट-
कष्टयोरर्द्धं होरादिपट्टसु स्थाप्ये । एतदुक्तम् । सप्तस्थानस्थितानां शुभाना-
मैक्यं शुभम् अशुभानामैक्यमशुभं स्यात् ॥ १४ ॥ पंक्त्योरिति । इष्टामैक्ये
स्तुभंक्ते पंक्त्योः स्थाप्ये । एतदुक्तं भवति—भागानीतमिष्टैक्यं चतुर्भक्तं
शुभसंक्त्योः स्थाप्यं कष्टैक्यं चतुर्थांशमशुभं पंक्तौ स्थाप्यं प्रथमयोर्गृहको-
ष्ठयोरित्यर्थः । भद्रलादिपट्टसु होरादिपट्टसु तदर्द्धं गृहस्थापितफलस्यार्द्धं
स्थाप्यम्, वर्गपानां गृहादिसप्तवर्गपानां पृथक् प्रत्येकं निजनिजे स्वस्व
सदसद्युती शुभाशुभयोरैक्ये उत्तयैवेत्यनेन स्वोच्चबलमित्यादिना स्थापितयोरै

शुभाशुभयोरैक्ये कार्यं न चान्तरं स्थापितयोरिति कृत्वा तन्निघ्न इष्टाशुभे तांभ्यां निघ्ने कार्ये इष्टशुभे पंक्त्योः समसु कोष्ठयोः स्थापितफले अनया रीत्या आनीते ये इष्टाशुभे वर्गेदतत्स्थखगौजसोः सदसतोर्घातात् पदघ्ने स्फुटे स्याताम् । वर्गेट् वर्गस्वामी, तत्स्थखगो वर्गस्थग्रहः, ओजसोः बलयोः तयोर्घातपदेन पूर्वफले गुणिते सति स्फुटे स्तः ॥ १५ ॥

भाषा—गृहेश परमोच्चमें होय तो रूपबल १, त्रिकोणमें होय तो तीन चतुर्थांश ०।४५।० स्वगृहमें होवो अर्द्ध ०।३०।० अधिमित्रके गृहमें होय तो तीन अष्टमांश ०।२२।३०, मित्रगृहमें चतुर्थांश ० ।१५। ०, समके गृहमें अष्टमांश ०।७।३०, शत्रुगृहमें षोडशांश ०।३।४५, अधिशत्रुगृहमें दन्तांश ०।१।५२।३०, परमनीचमें होय तो शून्य० यह गृहस्थानमें शुभ जानना यह शुभ एक १ में हीन करनेसे अशुभ होता है. गृहस्थानमें यह शुभाशुभ होरादि षड्वर्गस्वामीपरसे गृहस्थानके फल प्रमाणसे जो फल आवे उसका अर्द्ध जानना अनन्तर समवर्गोत्पन्न शुभका और अशुभका ऐक्यता करना.

उच्च मूलत्रिकोण व स्वगृहमेंसे तीनका वा दोका एक स्थानमें संभव होनेमें निर्णय।

सिंह २० अंशतक सूर्यका त्रिकोण, अनन्तर स्वगृह, वृषभ ३ अंशतक चन्द्रका उच्च, अनन्तर मूलत्रिकोण, मेष १२ अंशतक भौमका त्रिकोण, अनन्तर स्वगृह, कन्या १५ अंशतक बुधका उच्च, आगे ५ अंशतक मूल त्रिकोण, आगे स्वगृह, धनु १० अंशतक गुरुका त्रिकोण अनंतर स्वगृह, तुला १५ अंशतक शुक्रका त्रिकोण अनंतर स्वगृह, कुंभ २० अंशतक शनिका त्रिकोण अनंतर स्वगृह जानना । जब ग्रह उच्च किंवा नीच राशिका उच्चांशमें रहता है ग्रहका परमोच्च किंवा परमनीच जानना ।

भाषा—दो सात सात कोष्ठककी शुभाशुभ पंक्ति लिखना अनन्तर शुभ पंक्तिका प्रथम कहिये गृहकोष्ठकमें ग्रहोंके सप्तवर्गोत्पन्न शुभैक्यका चतुर्थांश लिखना और होरादि ६ कोष्ठकमें इस चतुर्थांशका अर्ध लिखना. और अशुभ पंक्तिके प्रथम कोष्ठकमें ग्रहका सप्तवर्गोत्पन्न अशुभैक्यका चतुर्थांश लिखना और होरादि पद ६ कोष्ठकमें यह चतुर्थांश अर्ध लिखना अनंतर गृह होरादि सप्तवर्गस्वामीका जुदा जुदा किया जो सप्तवर्गोत्पन्न शुभैक्य उसको क्रमसे इस शुभपंक्तिमें लिखा जो गृहहोरादि सप्तवर्गफल है तिससे अलग अलग गुण देना तो मध्यम शुभ होता है. और गृहहोरादि सप्तवर्ग स्वामीका पृथक् पृथक् किया जो सप्तवर्गोत्पन्न अशुभैक्य उसको क्रमसे अशुभपंक्तिमें लिखा जो गृह होरादिसप्तवर्गफल उससे पृथक् गुण देना तो मध्यम अशुभ होता है।

अनंतर जिस ग्रहका स्पष्ट शुभ साधन करना हो उस ग्रहके इष्टबलको उसी ग्रहके गृहहोरादि सप्तवर्गस्वामीके इष्टबलसे पृथक् पृथक् गुणके उनके वर्गमूलसे स्वस्ववर्गस्थ मध्यम शुभको गुणदेना तो ग्रहोंका स्पष्ट शुभ होता है और जिस ग्रहका स्पष्ट अशुभ साधन करना हो उस ग्रहके कष्टबलको उसी ग्रहके गृहहोरादि सप्तवर्गस्वामीके कष्टबलसे पृथक् पृथक् गुणके उनके वर्ग मूलसे स्वस्ववर्गस्थ मध्यम अशुभको गुण देना तो ग्रहोंका स्पष्ट अशुभ होता है ॥ १५ ॥

उदाहरण—सूर्य मंगलके गृहमें है इसवास्ते गृहस्वामी भौम सो समके गृहमें है इसवास्ते सूर्यके गृहस्थानमें ०।७।३० शुभ, यह एकमें कम करके ०।५२।३० यह अशुभ, होरास्वामी सूर्य यह, समके गृहमें है इसवास्ते सूर्यके होरास्थानमें ०।७।३० शुभ, यह एकमें कम करके ०।५२।३० अशुभ, इनके अर्द्ध होरास्थानमें ०।३।४५ शुभ और ०।२६।२५ यह अशुभ, द्रेष्काणस्वामी सूर्य यह समके गृहमें है इसवास्ते सूर्यके द्रेष्काणस्थानमें ०।७।३०शुभ यह एकमें कम करके०।५२।३०अशुभ इनके अर्ध द्रेष्काण

स्थानमें ०।३।४५ शुभ और ०।२६।१५ अशुभ, सप्तमांशस्वामी चन्द्र यह शत्रुगृहमें है इसवास्ते सूर्यके सप्तमांशस्थानमें ०।३।४५ शुभ यह एकमें कम करके ०।५६।१५ अशुभ इनके अर्ध सप्तमांशस्थानमें ०।१।५२ शुभ, और ०।२८।७ अशुभ नवमांशस्वामी चन्द्र यह शत्रुगृहमें है इसवास्ते सूर्यके नवमांशस्थानमें ०।३।४५ शुभ, यह एकमें कम करके ०।५६।१५ अशुभ इनका अर्ध नवमांशस्थानमें ०।१।५२ शुभ और ०।२८।७ अशुभ द्वादशांशस्वामी बुध शत्रुगृहमें है इसवास्ते सूर्यके द्वादशांशस्थानमें ० । ३ । ४५ शुभ यह एकमें कम करके ०।५६।१५ अशुभ इनका अर्ध द्वादशांशस्थानमें ०।१।५२ शुभ और ०।२८।७ अशुभ त्रिंशांशस्वामी गुरु अधिशत्रुके गृहमें है इसवास्ते सूर्यके त्रिंशांशस्थानमें ०।१।५२ शुभ, यह एकमें कम करके ०।५८।७ अशुभ, इनका अर्ध त्रिंशांशस्थानमें ०।०।५६ शुभ और ०।२९।३ अशुभ सूर्यके सप्तवर्ग शुभका ऐक्य ०।२१।३३॥ और सूर्यके सप्तवर्ग अशुभका ऐक्य ३।३८।२६ यह भया इसी प्रमाणसे चन्द्रादिक ग्रहोंका शुभाशुभ करके उनका ऐक्य करना ।

टिप्पण–विंशतिरंशाः सिंहे त्रिकोणमपरे स्वभवनमर्कस्य ।
उच्चं भागत्रितयं वृष इन्दोः स्यात्त्रिकोणमपरेंशाः ॥
द्वादश भागा मेषे त्रिकोणमपरे स्वभं तु भौमस्य ।
उच्चमथो कन्यायां बुधस्य तुङ्गांशकैः सदा चिन्त्यम् ॥
परतस्त्रिकोणजातं पञ्चभिरंशैस्स्वराशिजं परतः ।
दशभिर्भागैर्जीवस्य त्रिकोणं धनुषि तत्परं स्वगृहम् ॥
शुक्रस्य च तिथयोंशास्त्रिकोणमपरं स्वभं तुलायां तु ।
कुंभे त्रिकोणस्वगृहे रविजस्य रवेर्यथा सिंहे ॥

टिप्पण–ग्रह घरमें उच्चमें किंवा परम नीचमें वा मूलत्रिकोणमें प्राप्त होय तो मित्रादिक फल न लेना, वह उच्च किंवा नीच वा मूलत्रिकोण इसीका फल लेना ।

सप्तवर्गअशुभचक्रमिदम् ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
गृह	० ३२ ३०	० ३७ ३०	० ५२ ३०	० ५८ ७॥	० ५६ १५	० ३७ ३०	० ५६ १५	गृह
होरा	० २६ १५	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	० २८ ७॥	० २८ ७॥	० २६ १५	होरा
द्रेष्काण.	० २६ १५	० १८ ४५	० २१ ३॥।	० २६ १५	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	द्रेष्का.
सप्तमांश.	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	० १८ ४५	० २६ १५	० २६ १५	० १८ ७॥	सप्त.
नवमांश.	० २८ ७॥	० १८ ४५	० २८ ७॥	० १८ ४५	० २१ ३॥।	० २८ ७॥	० १८ ४५	नवमां
द्वादशांश	० २८ ७॥	० २१ ३॥।	० २१ ३॥।	० २६ १५	० २१ ३॥।	० २१ ३॥।	० २६ १५	द्वाद.
त्रिंशांश.	० २१ ३॥।	० २८ ७॥	० २१ ३॥।	० १८ ४५	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	त्रिंशा.
ऐक्य	३ ३८ २६।	३ ६ ३३॥।	३ ५० १८॥।	३ १३ ७॥	३ ५९ ०	३ २१ ३३॥।	३ २८ ७॥	ऐक्य

उदाहरण—सूर्यका शुभैक्य ०।२१।३३ इसको ४ से भाग देके ०। ५।२३ यह सूर्यके शुभपंक्तिके गृहकोष्ठकमें लिखना और इसका अर्ध ०। २।४१ यह शुभपंक्तिके होरादि ६ कोष्ठकमें लिखना।

सूर्यका अशुभैक्य ३।३८।२६ इसको ४ से भाग देके ०।५४।३६ यह सूर्यके अशुभपंक्तिके गृहकोष्ठकमें लिखना और इसका अर्ध ०।२७।१८ यह अशुभपंक्तिके होरादि ६ कोष्ठकमें लिखना इसी प्रमाण चन्द्रादिकों-काभी जानना।

षर्गैशसहितसप्तवर्गशुभचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
मं ० ७ म ३०	श ० २२ ऽमि ३०	सू ० ७ स ३०	बृ ० १ ऽश ५२॥	बु ० ३ श ४५	श ० २२ ऽमि ३०	बु ० ३ श ४५	गृह
सू ० ३ त ४५	च ० १ श ५२॥	सू ० ३ स ४५	सू ० ३ स ४५	चं ० १ श ५२॥	च ० १ श ५२॥	सू ० ० स ४५	होरा
बु ० ३ श ४५	श ० ११ ऽम १५	बृ ० ० ऽश ५६।	मं ० ३ म ४५	बु ० १ श ५२॥	शु ० ३ स ४५	शु ० ३ स ४५	द्रेष्काण
च ० १ श ५२॥	सू ० ३ व ४५	बु ० ३ स ४५	श ० ११ ऽमि १५	मं ० ३ श ४५	बु ० ३ स ४५	बु ० १ श ५२॥	सप्तमां.
च ० १ ग ५२॥	श ० ११ ऽमि १५	च ० १ श ५२॥	श ० ११ ऽमि १५	बृ ० ० ऽश ५६।	बु ० १ श ५२॥	श ० ११ ऽमि १५	नवमांश.
बु ० १ श ५२॥	बृ ० ० ग ५६।	बृ ० ० ऽश ५६।	म ० ३ म ४५	बृ ० ० ऽश ५६।	बृ ० ० ऽश ५६	म ० ३ स ४५	द्वादशां.
बृ ० ० ऽश ५६।	बु ० १ श ५२॥	बृ ० ० ऽश ५६।	श ० ११ ऽमि १५	बु ० १ श ५२॥	शु ० ३ स ४५	मं ० ३ स ४५	त्रिंशांश
० २१ ३३॥	० ५३ २६।	० १२ ४१।	० ४६ ५२॥	० १५ ०	० ३८ २६।	० ३१ ५२॥	ऐक्य

समवर्गेअशुभचक्रमिदम् ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
गृह	० ३२ ३०	० ३७ ३०	० ५२ ३०	० ५८ ७॥	० ५६ १५	० ३७ ३०	० ५६ १५	गृह
होरा	० २६ १५	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	० २८ ७॥	० २८ ७॥	० २६ १५	होरा
द्रेष्काण.	० २६ १५	० १८ ४५	० २१ ३॥।	० २६ १५	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	द्रेष्का.
सप्तमांश.	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	० १८ ४५	० २६ १५	० २६ १५	० २८ ७॥	सप्त.
नवमांश.	० २८ ७॥	० १८ ४५	० २८ ७॥	० १८ ४५	० २१ ३॥।	० २८ ७॥	० १८ ४५	नवमां
द्वादशांश.	० २८ ७॥	० २१ ३॥।	० २१ ३॥।	० २६ १५	० २१ ३॥।	० २१ ३॥।	० २६ १५	द्वाद.
त्रिंशांश.	० २१ ३॥।	० २८ ७॥	० २१ ३॥।	० १८ ४५	० २८ ७॥	० २६ १५	० २६ १५	त्रिंशा.
ऐक्य	३ ३८ २६।	३ ६ ११॥	३ ५० १८॥।	३ ११ ७॥	३ ५९ ०	३ २१ ११॥।	३ २८ ७॥	ऐक्य

उदाहरण—सूर्यका शुभैक्य ०।२१।३३ इसको ४ से भाग देके ०।५।२३ यह सूर्यके शुभपंक्तिके गृहकोष्ठकमें लिखना और इसका अर्ध ०।२।४१ यह शुभपंक्तिके होरादि ६ कोष्टकमें लिखना।

सूर्यका अशुभैक्य ३।३८।२६ इसको ४ से भाग देके ०।५४।३६ यह सूर्यके अशुभपंक्तिके गृहकोष्ठकमें लिखना और इसका अर्ध ०।२७।१८ यह अशुभपंक्तिके होरादि ६ कोष्ठकमें लिखना इसी प्रमाण चन्द्रादिकों-काभी जानना।

मध्यमशुभचक्रम् ।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृ.	०।१।४६	०।७।९	०।१।४६	०।२।२६	०।२।५६	०।५।६	१।६।१३
हो.	०।०।५८	०।५।५६	०।०।५३	०।२।६	०।१।४०	०।४।१६	०।१।२६
द्रे.	०।०।५८	०।३।३२	०।०।३७	०।१।५५	०।१।२७	०।३।४	०।२।३३
स.	०।२।२३	०।२।२४	०।१।३४	०।३।६	०।०।३७	०।१।४४	०।३।७
न.	०।२।२३	०।३।३२	०।२।११	०।३।६	०।०।२८	०।३।५५	०।२।७
द्वा.	०।२।६	०।१।४०	०।०।३७	०।१।५५	०।०।२८	०।१।१२	०।१।१८
त्रिं.	०।०।४०	०।५।१२	०।०।३७	०।३।७	०।१।२७	०।३।४	०।१।१८

मध्यमाऽशुभचम् ।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृ.	३।१०।२८	३।९।२३	३।२०।२८	३।१।४	३।१।४	३।५४।५८	२।४७।२८
हो.	१।३९।२३	१।१२।३०	१।४०।१४	१।२७।२२	१।२७।२६	१।१८।२३	१।३४।३३
द्रे.	१।३१।२३	१।३४।४१	१।४३।१०	१।२८।३७	१।३०।३०	१।२४।३९	१।२७।२३
स.	१।२४।५३	१।२४।२३	१।३२।२९	१।२३।४२	१।४३।१९	१।३१।४४	१।२३।४४
न.	१।२४।५३	१।२०।५२	१।२५।३६	१।२३।४२	१।४५।२६	१।२१।६	१।३०।१४
द्वा.	१।२७।५२	१।२७।२६	१।४३।१९	१।२८।३७	१।४५।२६	१।३४।३०	१।३४।३१
त्रिं.	१।४२।२२	१।१५।३	१।४३।१९	१।२३।४२	१।३०।३०	१।२४।३९	१।३५।३१

सूर्यका स्पष्ट शुभ साधन करना इसवास्ते सूर्यका इष्टबल ६।३१।०।५३ इसको सूर्य मेपका है इसवास्ते गृहेश भौमका इष्टबल १।१४।० इससे गुणके ८।२।१६ इसका वर्गमूल २।५०।६ इसको सूर्यका मध्यम गृहशुभ ०।१।४६ से गुणके ०।५।० यह सूर्यका स्पष्ट गृहशुभ भया इसी रीतिसे सूर्यके होरादिकोंका स्पष्ट शुभ और सूर्यका गृहादि स्पष्ट अशुभ और चन्द्रादिकोंका स्पष्ट शुभ और अशुभ करना ॥ १४ ॥ १५ ॥

शुभपंक्तिचक्रम्। — अशुभपंक्तिचक्रम्।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृ.	० ५ २३	० १३ २१	० ४ ५५	० ११ ४३	० ३ ४२	० ९ ३६	० ७ ५८	गृ.	० ५४ ३६	० ४६ ३८	० ५५ ४	० ४८ १७	० २६ १५	० २० २४	० २२ २
हो.	० २ ४१	० ६ ४०	० २ २७	० ५ २१	० १ ५२	० ४ ४८	० ३ ५९	हो.	० २७ १८	० २३ १९	० २७ ३२	० २४ ८	० २८ ७	० २५ १२	० २६ १
द्रे	० २ ४१	० ६ ४०	० २ २७	० ५ २१	० १ ५२	० ४ ४८	० ३ ५९	द्रे	० २७ १८	० २३ १९	० २७ ३२	० २४ ८	० २८ ७	० २५ १२	० २६ १
स	० २ ४१	० ६ ४०	० २ २७	० ५ २१	० १ ५२	० ४ ४८	० ३ ५९	स.	० २७ १८	० २३ १९	० २७ ३२	० २५ ८	० २८ ७	० २५ १२	० २६ १
न	० २ ४१	० ६ ४०	० २ २७	० ५ २१	० १ ५२	० ४ ४८	० ३ ५९	न.	० २७ १८	० २३ १९	० २७ ३२	० २४ ८	० २८ ७	० २५ १२	० २६ १
द्वा.	० २ ४१	० ६ ४०	० २ २७	० ५ २१	० १ ५२	० ४ ४८	० ३ ५९	द्वा.	० २७ १८	० २३ १९	० २७ ३२	० २४ ८	० २८ ७	० २५ १२	० २६ १
त्रि.	० २ ४१	० ६ ४०	० २ २७	० ५ २१	० १ ५२	० ४ ४८	० ३ ५९	त्रि.	० २७ १८	० २३ १९	० २७ ३२	० २४ ८	० २८ ७	० २५ १५	० २६ १

उदाहरण—सूर्य मेषका है इसवास्ते गृहेश मङ्गल है इसका शुभैक्य ०।१९।२१ इसको सूर्यके शुभपंक्तिमेंका गृहफल ०।५।२३ इससे गुणे ०।१।२६ यह सूर्यका गृहमध्यमशुभ, गृहेश मंगल इसका अशुभैक्य १।२०।१८ इसको सूर्यके अशुभपंक्तिमेंका गृहफल ०।५४।३६ से गुणे १।२०।२८ यह सूर्यका गृहमध्यम अशुभ, इसी रीतिसे होरादिकोंका मध्यम शुभाशुभ करना और चन्द्रादिकोंका भी गृहादि मध्यम शुभाशुभ करना।

मध्यमशुभचक्रम् । मध्यमाऽशुभचक्रम् ।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सू.	१ ४६	७ ९	१ ४६	२ २६	२ ५६	५ ६	६ १३	सू.	२० २८	१ २३	२० २८	१ ४	१ ४	५४ ५८	४३ ३८
हो.	० ० ५८	० ५ ५६	० ० ५१	० २ ६	० १ ४०	० ४ १६	० १ २६	हो.	१ ३० २३	१ १२ ३०	१ ४० १४	१ २७ ५२	१ २७ २६	१ १८ २३	१ १४ ४१
द्रे.	० ० ५८	० १ १२	० ० १७	० १ ५५	० १ २७	० १ ४	० २ ११	द्रे.	१ ३१ २१	१ ३४ ५१	१ ४३ १०	१ २८ ३०	१ ३० ३०	१ २४ ३०	१ ३० ५३
स.	० २ २१	० २ २४	० १ १४	० १ ६	० ० १७	० १ ४४	० १ ७	स.	१ २४ ५१	१ २४ ५३	१ ३२ २०	१ २३ ५२	१ ४३ १५	१ ३१ ४२	१ २३ ४४
न.	० २ २१	० १ १२	० २ ११	० १ ६	० ० २८	० १ ४५	० २ ७	न.	१ २४ ५१	१ २० ५२	१ २५ ३६	१ २३ ४२	१ ४५ २६	१ २१ ६	१ ३० १४
द्वा.	० २ ६	० १ ४०	० ० १७	० १ ५५	० ० २८	० १ १२	० १ १८	द्वा.	१ २७ ५२	१ २७ २६	१ ४३ १५	१ २८ ३०	१ ४५ २६	१ ३४ ३०	१ १४ ११
त्रि.	० ० ४०	० ५ १२	० ० १७	० १ ७	० १ २७	० १ ४	० १ १८	त्रि.	१ ४२ २२	१ २५ ३	१ ४३ १५	१ २३ ४२	१ ३० १०	१ २४ ३१	१ ३५ ११

सूर्यका स्पष्ट शुभ साधन करना इसवास्ते सूर्यका इष्टवल ६।२३।०। ५३ इसको सूर्य मेषका है इसवास्ते गृहेश भौमका इष्टवल ३।३४।० इससे गुणके ८।२।१६ इसका वर्गमूल २।५०।६ इसको सूर्यका मध्यम गृहशुभ ०।१।४६ से गुणके ०।५।० यह सूर्यका स्पष्ट गृहशुभ भया इसी रीतिसे सूर्यके होरादिकोंका स्पष्ट शुभ और सूर्यका गृहादि स्पष्ट अशुभ चन्द्रादिकोंका स्पष्ट शुभ और अशुभ करना ॥ १४ ॥ १५ ॥

वर्गेशगृहेशेष्टबलगुणनपदचक्रम् ।								वर्गेशगृहेशकष्टबलगुणनपदचक्रम् ।							
ग्र.	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृ.	२ ५० ६	२ २९ ४२	२ ५० ६	२ ९ ५०	२ ९ ५०	२ २६ ३१	१ १६ ५८	गृ	१ ९ ११	४ २ १२	१ ९ ११	२ १२ ३१	२ १२ ३१	२ ४२ २१	३ १५ ४०
हो.	६ ३१ १	३ ११ ५	२ ५० ६	२ २० ११	४ १२ २८	३ ७ १	३ ३४ ९	हो	० ३४ ५	५ ० २७	१ ९ ११	१ १३ ८	२ ४४ ५	२ ४१ ११	१ ३१ ११
द्रे.	६ ११ १	२ २९ ४२	२ १७ ९	१ १ ९	२ ९ ५०	१ ३ ३	२ २६ ३१	द्रे.	० १४ ५	४ २ १२	२ ५ २५	२ २८ २७	२ १२ ३१	६ ४० २१	९ ४२ २१
○ स.	४ ३३ ११	४ ३३ ११	१ २६ २२	१ १६ ५८	९ १७ ९	४ २७ ३०	१ १६ ५८	स	१ ३० ३७	१ ३० ३७	२ ३ १२	३ १५ ४०	२ ५ २५	१ ० ४१	३ १५ ४०
न.	४ ३३ १९	२ २९ ४२	१ ५८ ५४	१ १६ ५८	५ १३ ४५	१ ३६ ९	१ ५७ १८	न	१ ३० ३७	४ २ १२	३ ३ ४८	३ १५ ४०	१ २१ ५७	२ १० ११	० ३ ५९
द्वा.	२ २० ३१	४ १२ २८	२ १७ ९	१ १ ९	५ ३१ ४५	४ ७ ९	१ ११ १०	द्वा	१ १३ ८	२ ४४ ५	२ ५ २५	२ २८ २७	१ २१ ५७	१ ४१ ५८	३ ५ ८
त्रि.	६ १ १६	१ १८ १४	२ १७ ९	१ १६ ५८	२ ९ ५०	१ ३ १	१ ११ १०	त्रि	१ ५१ ९	३ १४ ११	२ ५ २५	३ १५ ४०	२ १२ ३१	२ ४० २१	३ ५ ८

वर्गेशगृहेशेष्टबलगुणनपदचक्रम् ।

ग्र.	सू.	च	म	बु.	बृ	शु.	श.
गृ.	२ ५० ६	२ २९ ४२	२ ५० ६	२ ९ ५०	२ ९ ५०	२ २६ ३१	१ १६ ५८
हो.	६ ३१ १	३ ११ ५	२ ५० ६	२ २० ३१	४ १२ २८	३ ७ १	३ ३४ ९
द्रे.	६ ३१ १	२ २९ ४२	२ ३७ ९	१ १ ९	२ ९ ५०	३ ३ ३	२ २६ ३१
स.	४ ३३ १९	४ ३३ १९	१ ५६ २९	१ १६ ५८	१ ३७ ९	४ २७ ३०	१ १६ ५८
न.	४ ३३ १९	२ २९ ४२	१ ५८ ५४	१ १६ ५८	५ ३३ ४५	१ ३६ ९	१ ५७ १८
द्वा	२ २० ३१	४ १२ २८	२ ३७ ९	१ १ ९	५ ३३ ४५	४ ७ ९	१ ३३ १०
त्रि.	६ १ १६	१ ३८ १४	२ ३७ ९	१ १६ ५८	२ ९ ५०	३ ३ ३	१ ३३ १०

वर्गेशगृहेशकष्टबलगुणनपदचक्रम् ।

ग्र	सू	च	म	बु	बृ	शु	श
गृ.	१ ९ ११	४ २ १२	१ ९ ११	२ १२ ३१	२ १२ ३१	२ ४२ २१	३ १५ ४०
हो	० ३४ ५	४ ० २७	१ ९ ११	१ १३ ८	२ ४४ ५	२ ४१ ११	१ ३१ ११
द्रे.	० ३४ ५	४ २ १२	२ ५ २५	२ २८ २७	२ १२ ३१	२ ४० २१	२ ४२ २१
स	१ ३० ३७	१ ३० ३७	२ ३ १२	३ १५ ४०	२ ५ २५	१ ० ४१	३ १५ ४०
न	१ ३० ३७	४ २ १२	३ ३ ४८	३ १५ ४०	१ ५१ ५७	२ १० ११	० ३ ५९
द्वा	१ १३ ८	२ ४४ ५	२ ५ २५	२ २८ २७	१ ५१ ५७	१ ४१ ५८	३ ५ ८
त्रि	१ ५३ ९	३ १४ ११	२ ५ २५	३ १५ ४०	२ १२ ३१	२ ४० २१	३ ५ ८

भाषा–पूर्वोक्त रश्मि तीनसे कम होय तो उसमें एक युक्त करके उसका चतुर्थांश लेना तो गुणक होता है । यदि तीनसे ज्यादा होय तो उसमेंसे एक कम करके उसका अर्द्ध लेना तो गुणक होता है इसी रीतिसे चेष्टा रश्मिसे चेष्टागुणक और उच्च रश्मिसे उच्चगुणक होता है । अनन्तर चेष्टागुणक और उच्चगुणकके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो स्फुटगुणक होता है ॥ १९

उदाहरण–रविका चेष्टारश्मि ५।११।४८ यह तीनसे अधिक है इस वास्ते इसमेंसे एक कम करके ४।११।४८ इसका अर्द्ध २।५।५४ यह रविका चेष्टागुणक, रविका उच्चरश्मि ६।५३।३६ यह तीनसे अधिक है इस वास्ते इसमेंसे एक कम करके ५।५३।३६ इसका अर्ध २।५६।४८ यह रविका उच्चगुणक भया । भौमकी उच्चरश्मि १।२६।६। यह तीनसे कम है इसवास्ते इसमें एक युक्त करके २।२६।६। इसका चतुर्थांश ०।३६।३१ यह भौमका उच्चगुणक भया इसी प्रकार अन्यग्रहोंका चेष्टागुणक और उच्चगुणक बनाना रविका चेष्टागुणक २।५।५४ को रविका उच्चगुणक २।५६।४८से गुणके ६।१०।५९इसका वर्गमूल २।३९।१२ यह रविका स्फुट गुणक भया । इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका स्फुट गुणक करना॥१९॥

चेष्टागुणकचक्रम् ।   उच्चगुणकचक्रम् ।

[illegible]

स्फुटगुणकचक्रम् ।

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	[illegible]
२	३	१	१	२	१	१	
३९	१८	११	६	११	११	०	०
१२	६	३६	५४	६७	१९	८	

आश्रयगुणकसाधनम् ।

यः स्वाधीष्टसुहृत्समार्यधिरिपोर्वर्गे धृतिश्चेष्विला-
दिश्वाङ्केषु गुणा गृहे द्विगुणिता योगः क्रमात्तं हरेत् ॥
तद्भे चेद्वसुगोंऽशुमद्धतिजिनैः षड्भैश्च वर्गोत्तम-
स्वांशन्यंशगते सदा रसगुणैः स्यादाश्रयाख्यो गुणः॥ १७ ॥

अन्वयः—यो ग्रहः स्वाधिमित्रमित्रसमारिप्वधिरिपूणां वर्गे गृहादिषड्वर्गे
त् तस्य क्रमेण १८।१५।१२।९।५।३ एते अङ्का माह्याः ॥ एतदुक्तं
ति—यद्यधिमित्रगृहे होरायां द्रेष्काणे वा सप्तमांशे नवमांशे द्वादशांशे वा
ांशे स्थितः तदा १८ अंको माह्यः, परं यदि गृहे तदा तद्द्विगुणं ग्राह्य-
प्यः। एवं होरादिषड्गृहेषु यथागतं स्थाप्यम्. तेषां समस्तु स्थानेषु स्थापि-
मङ्कानां योगः कार्यः । तं योगं तद्भे स्वाधिमित्रादिभे राशौ ग्रहे सति
त् ६।८।९।१२।१८।२४ एतैरङ्कैः षड्भैर्भजेत् । वर्गोत्तमस्वांशत्र्यंशगते
सति सदा षट्त्रिंशद्भिर्भजेत् । एवं भक्ते यल्लभ्यते स आश्रयसंज्ञको
: स्यात् ॥ १७ ॥

भाषा—ग्रह स्वकीय वर्गमें होय तो १८, अधिमित्रके वर्गमें होय तो १५,
के वर्गमें होय तो १२, समके वर्गमें होय ते ९, शत्रुके वर्गमें होय
: इस प्रमाण होरादि वर्गमें अंक लेना, परंतु गृहस्थानमें इस रीतिसे जो
। उसको दूना करके लेना। अनन्तर गृहादि समवर्गोंके अंकका योग करके
जो ग्रह स्वगृहमें होय तो ३६ से, अधिमित्रके गृहमें होय तो ४८ से,
के गृहमें होय तो ५४ से, समके गृहमें होय तो ७२ से, शत्रुके गृहमें
तो १०८ से, अधिशत्रुके गृहमें होय तो १४४ से भाग देना, परन्तु वर्ग-
त्तम कहिये राशिके स्वनवमांशमें होय तो वा स्वनवमांशमें बिना स्वद्रे-
णमें होय तो पूर्वोक्त अंक न लेना सर्वकाल ३६ से भाग देना जो
ाकार आवे सो आश्रय गुणक होता है ॥ १७ ॥

उदाहरण—रवि समके गृहमें है इसवास्ते ९ अंक यह गृहस्थानमें
णित १८, रवि स्वहोरामें है इसवास्ते होरास्थानमें १८, रवि स्वद्रे-

भाषा–पूर्वोक्त रश्मि तीनसे कम होय तो उसमें एक युक्त करके उसका चतुर्थांश लेना तो गुणक होता है । यदि तीनसे ज्यादा होय तो उसमेंसे एक कम करके उसका अर्द्ध लेना तो गुणक होता है इसी रीतिसे चेष्टा रश्मिसे चेष्टागुणक और उच्च रश्मिसे उच्चगुणक होता है । अनन्तर चेष्टागुणक और उच्चगुणकके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो स्फुटगुणक होता है॥१६

उदाहरण–रविका चेष्टारश्मि ५।११।४८ यह तीनसे अधिक है इस वास्ते इसमेंसे एक कम करके ४।११।४८ इसका अर्द्ध २।५।५४ यह रविका चेष्टागुणक, रविका उच्चरश्मि ६।५३।३६ यह तीनसे अधिक है इस वास्ते इसमेंसे एक कम करके ५।५३।३६ इसका अर्ध २।५६।४८ यह रविका उच्चगुणक भया । भौमकी उच्चरश्मि १।२६।६। यह तीनसे कम है इसवास्ते इसमें एक युक्त करके २।२६।६। इसका चतुर्थांश ०।३६।३१ यह भौमका उच्चगुणक भया इसी प्रकार अन्यग्रहोंका चेष्टागुणक और उच्चगुणक बनाना रविका चेष्टागुणक २।५।५४ को रविका उच्चगुणक २।५६।४८से गुणके ६।१०।५९इसका वर्गमूल २।२९।१२ यह रविका स्फुट गुणक भया । इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका स्फुट गुणक करना॥१६॥

चेष्टागुणकचक्रम् । उच्चगुणकचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु	बृ	शु.	श	ग्र	सू	चं	मं.	बु	बृ	शु.	श
२	१	२	२	२	१	१		२	१	०	०	१	२	०
५	३७	२०	१३	२९	५	३	०	५६	२	३६	३३	२६	२९	२६
५४	४८	२४	०	३	४८	४८		४८	२१	२१	१०	४५	५४	४१

स्फुटगुणकचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	स्तु.
२	१	१	१	२	१	१	
२९	१८	१२	६	११	३९	०	यु.
१२	६	३६	७४	५७	१९	८	

वर्गे स्थापिताङ्काद् त्रिषड्लब्ध्यावाप्तफलेन स आश्रयक ऊनो युक्तार्यः । यदि वर्गोत्तमादिष्ववर्तमानो ग्रहः शत्रुगृहे वा मित्रगृहे भवेद् तदा तद्गृहाङ्काद् अब्धिनवकाप्त्या फलेन स आश्रयको गुणो हीनयुक्तार्यः । मित्राधिमित्रगृहे युक्तः अधिशत्रुशत्रुगृहे हीन इत्यर्थः । ततः आश्रयाख्यगुणकस्फुटगुणकयोर्घातान्मूलं स योग्यो गुणः स्याद् । खेटानां ग्रहाणां तनोर्लग्नस्यांशाः चत्वारिंशद्भिर्भक्ताः शेषा इह आयुर्लवाः स्युः इति ॥ १८ ॥

भाषा–जो ग्रह वर्गोत्तममें स्वनवमांशमें वा स्वद्रेष्काणमें होके अधिशत्रुगृहमें वा अधिमित्रगृहमें होय तो उसके गृहांकको ६३ से भाग देके जो भागाकार आवे सो क्रमसे पूर्वानीत आश्रयगुणकमें कम करना वा युक्त करना और ग्रह शत्रुगृहमें वा मित्रगृहमें होय तो उसके गृहांकको ९४ से भाग देके जो भागाकार आवे सो क्रमसे पूर्वानीत आश्रयगुणकमें कम करना वा युक्त करना तो आश्रयगुणक होता है, परंतु ग्रह वर्गोत्तमादि ३ स्थानमें होके स्वगृहमें वा समगृहमें होय तो संस्कार नहीं । अनन्तर आश्रयगुणक और स्फुटगुणकके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो कर्मयोग्य गुणक होता है ग्रह वा लग्नके अंश करके ४० से भाग देना जो शेष रहै सो आयुर्भाग होते हैं ॥ १८ ॥

उदाहरण–वर्गोत्तमादि ३ स्थानमें गुरु शनि स्वनवमांशमें है इसवास्ते गुरु शनिका आश्रयगुणक संस्कारयोग्य है सो ऐसा गुरु अधिशत्रुके गृहमें है इसवास्ते गुरुके गृहांक ६ को ६३ से भाग लिया तो ०।५।४२ यही हुआ अब इसको गुरुका आश्रयगुणक २।०।० में कम करके १।५४।१८ यह गुरुका आश्रयगुणक भया और शनि अधिमित्रके गृहमें है इसवास्ते शनिके गृहांक ३० को ६३ से भागके ०।२८।३४ यह शनिका आश्रयगुणक २।४५।० में युक्त करके ३।१३।३४ यह शनिका आश्रयगुणक भया और वर्गोत्तमादि ३ स्थानमें सूर्य शुक्र स्वद्रेष्काणमें हैं तथापि समके गृहमें हैं इसवास्ते इनको आश्रयगुणकको संस्कार नहीं ।

ऊना भूर्गुण एकभे द्विबहुषु त्वेकस्य वह्वोजसः
कार्यास्तद्गुणिताः स्वदायजलवाश्चक्रार्द्धहानिस्त्वियम् ॥ १९ ॥

अन्वयः—ग्रहोनोदये षड्भाल्पे सति, भस्त्रांशोद्धृतैः खाग्निभिः खेचरोन उदय एकाल्पे सति अस्त्रांशाः खाग्निभिर्भाजितलवैरूना भूरेको गुणः स्यात् तेन गुणकेन गुणिता स्वदायजलवा आयुर्भागा इयं चक्रार्द्धहानिर्भवेत् । यद्ये-कभे द्विबहुषु तदा बह्वोजस एकस्य ग्रहस्येयं चक्रार्द्धहानिः कार्या । बलसाम्ये नैसर्गिकबलमपि ध्येयम् सौम्योनितस्त्वर्धितैरित्यपि ध्येयम् ॥ १९ ॥

भाषा—लग्नमेंसे ग्रह कम करके बाकी ६ राशिसे कमती रहतेही चक्रार्द्धहानि होती है. अनंतर षड्भाल्प ग्रहोनित लग्नकी पलसे ३० अंशकी पलको भाग देना जो भागाकार आवे सो एकमें कम करना तो गुण होता है परंतु ग्रहोनित लग्न एकसे कमती होय तो ग्रहोनित लग्नके अंशको ३० अंशसे भाग देके जो भागाकार आवे सो एकमें कम करना तो गुण होता है परंतु लग्नमेंसे शुभग्रह कम करके पूर्वोक्त रीतिसे भाग देके जो भागाकार आवे उसका अर्ध एकमेंसे कम करना तो गुणक होता है । एक राशिमें दो किंवा दोसे अधिक ग्रह होय उसमें जो ग्रह बलिष्ठ होय उसका मात्र गुण करना । अनन्तर इस गुणकसे स्वकीय आयुर्भागको गुणना कहिये रविके गुणकसे रविके आयुर्भागको गुणना इसी प्रमाण यहां गुणकरके चक्रार्द्धहानि कथित किया है ॥ १९ ॥

उदाहरण—यहां रवि, भौम, गुरु, शनि इन्होंका चक्रार्धहानि संभव है. इसवास्ते लग्न ६।१९।४२।२६ यह इसमें सूर्य ०।१३।१०।४२ कम करके ५।२६।३१।४४ इसकी पल ६३५५०४ इसमें ३० अंशकी १०८००० इसमें भाग दिया तो ०।१०।११ यह एकमें कम करके ०।४९।४९ यह सूर्यका गुणक, इससे सूर्यका आयुर्भाग १३।१०।४२ यह गुणके १०।५६।३० यह सूर्यका हानि संस्कृत आयुर्भाग भया । इसी प्रमाणसे भौमका गुणक ०।२९।१९ गुरुका ०।३२।२६, शनिका ०।४४।३२इन गुणकोंसे इनोंके आयुर्भागको गुणा तो भौमका५।२४।३४,

आश्रयगुणकचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	म.
३	०	१	०	१	२	३	
५६	४०	११	४१	५४	३०	१३	३
५०	३३	५०	१७	१८	०	३४	

कर्मयोग्यगुणकोदाहण ।

सूर्यका आश्रय गुणक २।५६।४ और स्फुटगुणक २।२९।१२ का गुणाकार ७।१९।१९ इसका वर्गमूल २।४२।२१ यह सूर्यका कर्मयोग्य-गुणक भया इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंका कर्मयोग्य गुणक करना ।

कर्मयोग्यगुणकचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु	बृ.	शु	श.	ग्र.
२	०	१	०	२	२	१	
४२	५६	११	५२	२	२	४७	०
२१	१६	३७	२१	४८	३	५३	

आयुर्भागोदाहरण ।

सूर्य ०।१३।१०।४२ इसके अंश १३।१०।४२ इसको ४० का भाग देके शेष १३।१०।४२ यह सूर्यका आयुर्भाग भया । इसी रीतिसे चंद्रादिकोंका आयुर्भाग करना तथा लग्नकाभी ॥ १८ ॥

आयुर्भागचक्रम् । हानिसंस्कृतायुर्भागचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु	बृ	शु	श	सू.	चं	मं.	बु.	बृ	शु	श	ल.
१०	३५	९	३१	२०	६	२४	१३	३५	११	३१	३८	६	३३	२९
५६	२२	२४	२०	१	५६	४५	१०	२२	४	२०	१२	५६	२१	४२
३०	३९	३४	५३	५	४	४४	४२	३५	१६	५३	३७	४	४९	२६

चक्रपातार्द्धहानिः ।

पड्भाल्पे सति खेचरोन उदयेऽस्यांशोद्धृतैः खाग्निभि-
स्त्वेकाल्पे सति खाग्निभाजितलवैः सौम्योनिते त्वार्धितैः ।

आयुर्भागकलाचक्रम् ।						
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
६५६	२१२६	३२७	१८८०	१२०१	४१६	१४८९
३०	१६	१४	५१	९	४	४४
कर्मयोग्यगुणगुणितायुर्भागकलाचक्रम् ।						
सू	च	म	बु	बृ	शु	श
१७७६	११९८	३८७	१६४१	२४२८	८४६	२६७२
२३	३१	७४	-४	११	२१	३८

उदाहरण—सूर्यका आयुर्भाग कला ६५६।३० सूर्यका कर्मयोग्य गुणक २।४२।२१ इससे गुणके १७७६।२३ इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंकी कलाको गुणना सूर्यकी कर्मयोग्यगुणित आयुर्भाग कला १७७६।२३ इसको २०० से भागके लब्ध ८ वर्ष शेष १७६।२३ इसको १२ से गुणके २११६।३६ इसको २०० से भागके लब्ध १० मास शेष ११६। ३६ इसको ३० से गुणके ३४९८ इसको २०० से भागके लब्ध दिन १७ शेष ९८ इसको ६० से गुणके ५८८० इसको २०० से भागके लब्ध २९ घटी शेष ८० इसको ६० से गुणके ४८०० इसको २०० से भागके लब्ध २४ पल यह सूर्यका वर्षादि अंशायु ८ । १० । १७ । २९ । २४ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु करना । लग्नका आयुर्भाग २९।४२।२६ इसको ३ से गुणके ९८।७।१८ इसको १० से भागके लब्ध ८ वर्ष शेष ९।७।१८ इसको १२ से गुणके १०९।२७।३६ इसको १ से भागके लब्ध १० मास शेष ९।२९।३६ इसको ३० से गुणके २८३।४८ इसको १० से भागके लब्ध २८ दिन शेष ३।४८ इसको ६० से गुणके २२८ इसको १० से भागके लब्ध २२ घटी शेष ८

इसको ६० से गुणके ४८० इसको १० से भागके लब्ध ४८ पल यह लग्नका वर्षादि ८।१०।२८।२२।४८ अंशायु भया इसको लग्नबल ७। २४।८।३० यह ६ रूपसे अधिक है इसवास्ते लग्नराशितुल्य वर्ष ६ युक्त करके १४।१०।२८।२२।४८ इसको लग्नका भागादि ९।४२।२६ इसकं २ से गुणके १९।२४।५२ इसको ५ से भागके लब्ध ३ मास शेष ४ २४।५२ इसको ३० से गुणके १३२।२६ इसको ५ से भागके लब्ध २६ दिन शेष २।२६ इसको ६० से गुणके १४६ इसको ५ से भागके लब्ध २९ घटी शेष १ इसको ६० से गुणके ६० इसको ५ से भागके लब्ध १२ पल यह मासादि ३।२६।२९ । १२ युक्त करके १५ । २ । २४ । ५२ । ० ॥ २० ॥

टीप–अंशायुफल निकालनेके वक्त २०० से भाग देके प्रथम फल जो वर्ष आवेगा बाकी जो रहे उसको १२ से गुणके २०० से भागके फल मास आता है बाकी रहे उसको ३० से गुणके २०० से भागके फल दिन आता है बाकी रहे उसको ६० से गुणके २०० से भागके पल घटी आती है बाकी जो रहे उसको ६० से गुणके २०० से भागके फल पल आता है इसी रीतिसे लग्नायुमेंभी ऐसे मासादि फल लेना ॥

वर्षाद्यंशायुचक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	मंग.	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः	लग्नं	योगः
८	९	१	८	११	४	१३	१५	७२
१०	११	११	२	२	२	४	२	११
१७	१२	७	१३	१	२३	८	२४	१९
२९	५५	१९	५५	१२	२५	३४	५२	४४
२४	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२

पिण्डनिसर्गजीवशर्मायुर्दायायुर्भागाः ।

द्युचरोङ्कभात्समधिको ग्राह्योऽल्पकोनार्कर्भ

तद्भागा द्युचरोऽरिभे यदि गुणांशोना विना वक्रगम् ॥

द्वयाप्ता अस्तमिते विना शनिसितौ हानिद्वयेऽत्राधिकैः
कार्याः पिण्डनिसर्गजीवगदिता चक्रार्द्धहानिर्भवेत् ॥ २१ ॥

अन्वयः—स्वकीयेनोच्चेन हीनो ग्रहो यदि षडधिकः षड्राशिभ्यो अधिकस्तदास्यांशाः कार्याः यदा षड्भाल्पस्तदा तं द्वादशराशिभ्यो विशोध्य शेषस्यांशाः कार्याः वक्रं विना वक्रीग्रहं विना यदि शत्रुग्रहगस्तदा तस्यांशा निजत्र्यंशेन हीनाः कार्याः यद्यस्तम् इते याते ग्रहे तदा तस्यांशानामर्धं कार्यम्, शनिशुक्राभ्यां विना अत्र हानिद्वये यातेऽधिकैका हानिरेव ग्राह्या न हानिद्वयम् अर्द्धहानिरेव ग्राह्या। अत्र नैसर्गिकशत्रुरेव ग्राह्यः पूर्वानीतस्वकीयचक्रार्धहानिगुणेन दायांशा गुणनीया इयं पिण्डनिसर्गजीवगदिता चक्रार्द्धहानिर्भवेत् ॥ २१

भाषा—ग्रहमें उच्च कम करके शेष ६ राशिसे कम होय तो वह १२ राशिमें कम करके उसके भाग करना तो पिण्डनिसर्गजीवायुर्भाग होते हैं परंतु जो ग्रह वक्रगति न होयके शत्रुगृहमें होय तो पूर्वोक्त भागोंका तृतीयांश उस भागमें कम करना और जो शनि शुक्र विना जो ग्रह अस्तंगत होय तो पूर्वोक्त भागोंका अर्ध करना और जो ग्रह शत्रुगृहमें होयके अस्तंगत भी हो तो पूर्वोक्त भागका अर्ध मात्र करना यह पिंडनिसर्गजीवायुर्दायभागको पूर्वकथितचक्रार्धहानिसंस्कारभी करना तो १९ के श्लोकसे ले आये सो गुणक उससे यह आयुर्भाग गुणना यहां नैसर्गिक शत्रुत्व समझना तात्कालिक शत्रुत्व लेना नहीं ॥ २१ ॥

उदाहरण—रवि ०।१३।१०।४२ इसमेंसे रविका उच्च ०।१०।०।० कम करके ०।३।१०।४२ यह ६ राशिसे कम है इसवास्ते १२ राशिमेंसे कम करके ११।२६।४९।१८ इसके अंश ३५६।४९।१८ यह सूर्यका अंशादि आयुर्भाग भया इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका करना ।

भौमका चक्रार्द्धहानि गुणक ०। २९।१९ इससे भौमके आयुरंश १९।३।४।१६ इसको गुणके ९४।२०।१२ यह भौमका आयुरंश भया।
गुरुका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।३१।२६ इससे गुरुके आयुरंश२१६। ४७।२३ इसको गुणके १५५।२९।५ यह गुरुका स्पष्ट आयुर्भाग भया।
शनिका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।४४।३२ इससे शनिके आयुरंश२३३। २९।४५ इसको गुणके १७३।१२।२४ यह शनिका स्पष्ट आयुर्भाग भया बाकी ग्रहोंका पूर्वोक्त ही आयुर्भाग लेना ॥ २१ ॥

लग्ने पापग्रहे सति विशेषसंस्कारः ।

दायांशा द्युसदां पृथक्तनुलवादिमाः खपद्मस्युद्धृता
आप्त्योनास्तनुगे खले च यदि सद्दृष्टेऽर्धयाथापरे ॥
निम्नोच्चोदयभाववर्जेन तनुगोग्रौ चेद्बलिष्ठस्य तत्
साम्ये पुष्टफलेन नेति तनुपेऽस्मिन्नांशजेऽसौ क्रिया ॥ २२ ॥

अन्वयः—लग्ने पापे सति चक्रार्धहानिर्गुणिता ग्रहाणां दायांशाः पृथक् स्थाप्याः, लग्नस्य राशिं विहाय अंशादिभिर्गुण्या षष्ट्यधिकशतत्रयेण भाज्याः आप्त्या लब्धफलेनांशादिना पृथक्स्थाः हीनाः कार्याः । पापग्रहास्तु रविभौमशनयः सौम्येक्षिते त्वर्धया, शुभग्रहदृष्टे लग्नस्थक्रूरखगे तदा लब्धफलस्यार्धं पातयेदायुःपिण्डादित्यर्थः। अथापरेषां मतम्-निम्नोच्चोदयभाववर्जेनेति केचिदेवं ब्रुवन्ति, लग्ने क्रूरे तदा पृथक्स्थाः आयुर्भागाः उच्चोदयभाववर्जेन गुण्याः पूर्वहरेणाप्त्या ऊनाः कार्याः शुभदृष्टेऽर्धेन उच्चोदयभाववर्जं तु लग्नग्रहस्य पापग्रहस्य यो भावस्तस्यावरोहारोहफलेनेत्यर्थः। यदि लग्ने द्विशः क्रूरास्तदा बलिष्ठस्य भाववर्जेन गुण्याः तत्साम्ये बलसाम्ये पुष्टफलेन अधिकावरोहारोहफलेन फल-साम्ये द्व्यादिगुणनं कार्यमिति भावः। [illegible] अस्मिन् लग्ने क्रूरे लग्नाधीशे लग्नगे सति अर्धहानिर्न कार्या। अंशजे [illegible] न कार्या २२

भाषा—जो लग्नमें पापग्रह होवै तो ग्रहका सिद्धान्तायुर्भाग पृथक् रखना उसको लग्नका राश्यंक छोडके भागादिकसे गुणके गुणनफलको ३६० से भाग देके जो लब्धि आवै सो पृथक् रक्खा जो भाग उसमें कम

भौमका चक्रार्द्धहानि गुणक ०। २९।१९ इससे भौमके आयुरंश १९३।४।१६ इसको गुणके ९४।२०।१२ यह भौमका आयुरंश भया।

गुरुका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।३१।२६ इससे गुरुके आयुरंश२९६। ४७।२३ इसको गुणके १५५।२९।५ यह गुरुका स्पष्ट आयुर्भाग भया।

शनिका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।४४।३२ इससे शनिके आयुरंश२३३। २९।४५ इसको गुणके १७३।१२।२४ यह शनिका स्पष्ट आयुर्भाग भया बाकी ग्रहोंका पूर्वोक्त ही आयुर्भाग लेना ॥ २१ ॥

लग्ने पापग्रहे सति विशेषसंस्कारः ।

दार्यांशा द्युसदां पृथक्तनुलवादिघ्नाः खपट्ट्युद्धृता
आप्त्योनास्तनुगे खले च यदि सद्दृष्टेऽर्धयाथोपरे ॥
निघ्न्योग्रोदयभावजेन तनुगोग्रो चेद्बलिष्ठस्य तत्
साम्ये पुष्टफलेन नेति तनुपेऽस्मिन्नांशजेऽसौ क्रिया ॥ २२॥

अन्वयः–लग्ने पापे सति चक्रार्धहानिर्गुणिता ग्रहाणां दार्यांशाः पृथक् स्थाप्याः,लग्नस्य राशिं विहाय अंशादिभिर्गुण्या षष्टयधिकशतत्रयेण भाज्याः आप्त्या लब्धफलेनांशादिना पृथक्स्था हीनाः कार्याः । पापग्रहास्तु रविभौमशनयः सौम्येक्षिते त्वर्धया, शुभग्रहदृष्टे लग्नस्थक्रूरखगे तदा लब्धफलस्यार्धं पातयेदायुःपिण्डादीत्यर्थः। अथापरेषां मतम्-निघ्न्योग्रोदयभावजेनेति केचिदेवं ब्रुवन्ति, लग्नगे क्रूरे तदा पृथक्स्थाः आयुर्भागाः उग्रोदयभावजेन गुण्याः पूर्व हरेणाप्त्या ऊनाः कार्याः शुभदृष्टेऽर्धया उग्रोदयभावजं तु उग्रग्रहस्य पापग्रहस्य यो भावस्तस्यावरोहारोहफलेनेत्यर्थः। यदि लग्ने द्वित्राः क्रूरास्तदा बलिष्ठस्य भावजेन गुण्याः तत्साम्ये बलसाम्ये पुष्टफलेन अधिकावरोहारोहफलेन फलसाम्य द्व्यादिगुणनं कार्यमिति भावः।तदसत्।एकदेशत्वात् अस्मिन् लग्ने क्रूरे लग्नाधीशे लग्नगे सति असौ हानिर्न कार्या।अंशजे क्रूरलग्नगेऽसौ न कार्या२२

भाषा–जो लग्नमें पापग्रह होयतो ग्रहका पिंडायायुर्भाग पृथक् रखना उसको लग्नका राश्यंक छोडके भागादिकसे गुणके गुणाकारको ३६० से भाग देके जो लब्धि आवे सो पृथक् रक्खा जो भाग उन्हमेंसे कम .१

सूर्यादिग्रहाः ।								उच्चचक्रम् ।						
सू.	चं	म	बु.	बृ	शु.	श	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श
०	९	४	११	५	१०	२		१	१	९	५	३	११	६
१३	५	११	२१	८	२६	१३		१०	३	२८	१५	५	२७	२०
१०	२२	४	२०	१२	५६	२१		०	०	०	०	०	०	०
४२	३५	१६	२३	३७	४	४५		०	०	०	०	०	०	०

उच्च कम करके ।								षड्भाल्प १२ राशिम कम करके ।						
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ग्र.	सू	च	मं	बु	गु	शु	श
०	८	६	६	२	१०	७		११	८	६	६	९	१०	७
३	२	१३	६	३	२९	२३		२६	२	१३	६	२६	२९	२३
१०	२२	४	२०	१२	५६	२१		४९	२२	४	२०	४७	५६	२१
४२	३५	१६	२३	३७	४	४५		१८	३५	१६	२३	२३	४	४५

पिंडाद्यायुर्भागचक्रम् ।

ग्र.	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
पि.	३५६	२४२	११३	१८६	२९६	३२९	२३३
आ.	४९	२२	४	२०	४७	५६	२१
मा	१८	३५	१६	५३	३३	४	४५

चक्रार्धहानिसंस्कृतपिंडाद्यायुर्भागचक्रम् ।

ग्र.	सू.	च	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
पि.	२१६	२४२	९४	१८६	१९५	३२९	१७१
आ.	१५	२२	२०	२०	२९	५६	१२
मा.	४०	३५	१२	५३	५	४	२४

यहां कोई ग्रह अस्तादि नहीं है और शत्रुराशिकाभी नहीं इस वास्ते संस्कार नहीं भया केवल चक्रार्द्धहानिका संस्कार है उसका उदाहरण कहते हैं।

सूर्यका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।४९।४९ इससे सूर्यके आयुरंश ३५६। ४९।१८ इसको गुणके २१६।१५।४० यह सूर्यका स्पष्ट आयुर्भाग भया।

भौमका चक्रार्द्धहानि गुणक ०। २९।१९ इससे भौमके आयुरंश ११३।४।१६ इसको गुणके ९४।२०।१२ यह भौमका आयुरंश भया ।
गुरुका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।३१।२६ इससे गुरुके आयुरंश२९६। ४७।२३ इसको गुणके १५५।२९।५ यह गुरुका स्पष्ट आयुर्भाग भया ।
शनिका चक्रार्द्धहानि गुणक ०।४४।३२ इससे शनिके आयुरंश२३३। २९।४५ इसको गुणके १७३।१२।२४ यह शनिका स्पष्ट आयुर्भाग भया बाकी ग्रहोंका पूर्वोक्त ही आयुर्भाग लेना ॥ २१ ॥

लग्ने पापग्रहे सति विशेषसंस्कारः ।

दायांशा द्युसदां पृथक्तनुलवादिघ्नाः खषट्त्र्युद्धृता
आप्तोनास्तनुगे खले च यदि सद्दृष्टेऽर्धयाथोपरे ॥
निघ्न्योग्रोदयभावजेन तनुगोग्रौ चेद्बलिष्ठस्य तत्
साम्ये पुष्टफलेन नेति तनुपेऽस्मिन्नंशजेऽसौ क्रिया ॥२२॥

अन्वयः—लग्ने पापे सति चक्रार्धहानिर्गुणिता ग्रहाणां दायांशाः पृथक् स्थाप्याः,लग्नस्य राशिं विहाय अंशादिभिर्गुण्या षष्ट्यधिकशतत्रयेण भाज्याः आप्त्या लब्धफलेनांशादिना पृथक्स्था हीनाः कार्याः । पापग्रहास्तु रविभौमशनयः सौम्येक्षिते त्वर्धया, शुभग्रहदृष्टे लग्नस्थक्रूरखगे तदा लब्धफलस्यार्धं पातयेदायुःपिण्डादीत्यर्थः। अथापरेषां मतम्-निघ्न्योग्रोदयभावजेनेति केचिदेवं ब्रुवन्ति, लग्नगे क्रूरे तदा पृथक्स्थाः आयुर्भागाः उग्रोदयभावजेन गुण्याः पूर्वं हरेणाप्त्या ऊनाः कार्याः शुभदृष्टेऽर्धया उग्रोदयभावजं तु उग्रग्रहस्य पापग्रहस्य यो भावस्तस्यावरोहारोहफलेनेत्यर्थः। यदि लग्ने द्विशाः क्रूरास्तदा बलिष्ठस्य भावजेन गुण्याः तत्साम्ये बलसाम्ये पुष्टफलेन अधिकावरोहारोहफलेन फलसाम्य द्व्यादिगुणनं कार्यमिति भावः।तदसत्।एकदेशत्वात् अस्मिन् लग्ने क्रूरे लग्नाधीशे लग्नगे सति असौ हानिर्न कार्या।अंशजे क्रूरलग्नगेऽसौ न कार्या२२

भाषा—जो लग्नमें पापग्रह होय तो ग्रहका पिंडाद्यायुर्भाग पृथक् रखना उसको लग्नका राश्यंक छोडके भागादिकसे गुणके गुणाकारको ३६० से भाग देके जो लब्धि आवे सो पृथक् रक्खा जो भाग उसमेंसे कम करना

परंतु जो पापग्रह शुभग्रहकरके दृष्ट हो तो लब्धिका अर्थ पूर्वोक्त भागमें कम करना तो पिंडायुर्भाग होता है । दूसरे आचार्योंका मत यह है कि, पृथक् रक्खा जो आयुर्भाग उसको लग्नस्थ पापग्रहका जो भाव उसका जो फल उससे गुण देना और ३६० से भाग देना । लब्धि पूर्वस्थापित भागादिमें हीन करना तौ पिण्डाद्यायुर्भाग होता है शुभग्रह देखता होय तो लब्धिका आधा घटाना और लग्नमें दो या तीन पापग्रह होंय तो जो बली होय उसीका भावफल लेना, पापग्रह लग्नपति होकर लग्नमें होय तो यह क्रिया न करना ॥२२॥

उदाहरण–यहां लग्नमें पापग्रह कोई नहीं इसवास्ते विशेष संस्कार नहीं भया ॥ २२ ॥

पूर्वोक्तहानिसंस्कृतपिण्डाद्यायुर्भागचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
२१६ १९ ५४०	२४२ २१ ३९	९४ २० १२	१८६ २० ५३	१५९ २१ ९	३२१ ५६ ४	१७३ १२ २४	

इदानीं पिण्डनिसर्गजीवशर्मायुर्दायानयनमाह ।

गोऽग्नास्तत्त्वतिथिप्रभाकरतिथिस्वर्गा नखाः पैण्डजे
नैसर्गे नखभूद्विगोधृतिनखाः पञ्चाशदर्काद्गुणाः ॥
दायांशाः स्वगुणैर्हता हि भगणांशाप्ताः समाद्यायुषी
स्वर्गाप्ताश्च समादि जैवमिभहृत्स्वांशैर्घटीप्वान्वितम् ॥२३॥

अन्वयः–गोऽग्नेति अर्कादिति अर्कमारभ्य पिण्डाद्यायुर्दाये गोऽग्ना इत्यारभ्य नखा इत्यन्ताङ्काः गुणकाः । नैसर्गे नखभूरित्यादयो गुणकाः १, दायांशाः स्वगुणगुणा भगणांशै ३६० र्भाज्याः फलानि वर्षाद्यायुर्दाया भवन्ति । गोऽग्ना इत्यादिभिरङ्कैर्गुणिते पिण्डायुः नखभूरित्यादिभिर्गुणिते निसर्गायुः स्यात् । दायांशाः स्वर्गाप्ता एकविंशत्या भाज्याः फलानि वर्षादि [illegible] स्यात् पुनर्दायांशा घट्यादिरपोऽष्टभकेऽपो पष्ठभं घट्यादिकं [illegible] घटी ॥ २३ ॥

भाषा–१९।२५।१५।१२।१५।२१।२० यह क्रमसे सूर्यादि सात ग्रहोंके पिण्डायुर्दायके गुणक और २०।१।२।९।१८।२०।५० यह क्रमसे रव्यादि सातग्रहोंके निसर्गायुर्दायके गुणक जानना ग्रहोंका आयुर्भाग स्व (अपना) गुणकसे गुणके गुणाकारको ३६० से भाग देना तो क्रमसे वर्षादि पिण्डायु और निसर्गायु होता है। पूर्वोक्त आयुर्भागको २१ से भाग देना जो वर्षादि फल आवेगा उसमें पूर्वोक्त आयुर्भागको ८ से भाग देके जो फल आवे सो वर्षमें युक्त करे तो जीवशर्माके आयु होता है। यहां मासादिफल अंशायुर्दायमें कथितप्रमाण लेना ॥ २३ ॥

पिण्डायुके गुणक।							निसर्गायुके गुणक।						
सू	च	म.	बु	बृ	शु	श	सू	च	म	बु	बृ.	शु	श.
१९	२५	१५	१२	१५	२१	२०	२०	१	२	९	१८	२०	५०

पिण्डायुरुदाहरण।

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इसको सूर्यका गुणक १९ इससे गुणके ५६२८।५७।४० इसको ३६० से भागके लब्धि १५ वर्ष शेष २२८।५७।४० इसको १२ से गुणके २७४७।३२ इसको ३६०से भाग देके लब्धि मास ७ शेष २२७।३२ इसको ६० से गुणके ६८२६ इसको ३६०से भागके लब्धि दिन १८ शेष ३४६ इसको ६०से गुणके२०७६० इसको ३६० से भागके लब्धि घटी ५७ शेष २४० इसको ६० से गुणके १४४००इसको ३६०से भागके लब्धि पल४०इसी प्रकारसे सूर्यके वर्षादि पिण्डायु भये १५।७।१८।५७।४० इस प्रमाण चन्द्रादिकोंका करना।

निसर्गायुरुदाहरण।

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इसको सूर्यका गुणक २० इससे गुणके ५९२५।१३।२० इसको ३६० से भागके लब्धि वर्ष १६ शेष १६५।१३।२०इसको १२से गुणके १९८२।४० इसको ३६० से भागके लब्धि मास ५ शेष १८२।४० इसको ३० से गुणके ५४८०

परंतु जो पापग्रह शुभग्रहकरके दृष्ट हो तो लब्धिका अर्ध पूर्वोक्त भागमें कम करना तो पिंडायुर्भाग होता है। दूसरे आचार्योंका मत यह है कि, पृथक् रक्खा जो आयुर्भाग उसको लग्नस्थ पापग्रहका जो भाव उसका जो फल उससे गुण देना और ३६० से भाग देना। लब्धि पूर्वस्थापित भागादिमें हीन करना तौ पिण्डाद्यायुर्भाग होता है शुभग्रह देखता होय तो लब्धिका आधा घटाना और लग्नमें दो या तीन पापग्रह होंय तो जो बली होय उसीका भावफल लेना, पापग्रह लग्नपति होकर लग्नमें होय तो यह क्रिया न करना ॥२२॥

उदाहरण—यहां लग्नमें पापग्रह कोई नहीं इसवास्ते विशेष संस्कार नहीं भया ॥ २२ ॥

पूर्वोक्तहानिसंस्कृतपिण्डाद्यायुर्भागचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
२१६	२४२	९४	१८६	१५५	३२१	१७३	
१५	२२	२०	२०	२१	५६	१२	
६४०	३५	१२	५३	५	४	२४	

इदानीं पिण्डनिसर्गजीवशर्मायुर्दायानयनमाह ।

गोऽज्जास्तत्त्वतिथिप्रभाकरतिथिस्वर्गा नखाः पैण्डजे
नैसर्गे नखभूद्विगोधृतिनखाः पञ्चाशदर्काद्गुणाः ॥
दायांशाः स्वगुणैर्हता हि भगणांशाप्ताः समाद्यायुषी
स्वर्गाप्ताश्च समादि जैवमिभहृत्स्वांशैर्घटीष्वन्वितम् ॥२३॥

अन्वयः—गोऽज्जेति अर्कादिति अर्कमारभ्य पिण्डाद्यायुर्दाये गोऽज्जा इत्यारभ्य नखा इत्यन्ताङ्काः गुणकाः। नैसर्गे नखभूरित्यादयो गुणकाः २, दायांशाः स्वगुणगुणा भगणांशै ३६० भाज्याः फलानि वर्षाद्यायुर्दाया भवन्ति । गोऽज्जा इत्यादिभिरङ्कैर्गुणिते पिण्डायुः नखभूरित्यादिभिर्गुणितं निसर्गायुः स्यात्। दायांशाः स्वर्गाप्ता एकविंशत्या भाज्याः फलानि वर्षादि जीवशर्मायुः स्यात् पुनर्दायांशा घट्यादिभ्योऽष्टभक्तेभ्यो यल्लब्धं घट्यादिकं :: ं घटी ॥ २३ ॥

पिण्डायुर्दायत्रये लग्नायुर्दायसाधनम्।

स्याच्छित्ताः खनखोद्धृता विभतनोर्वर्षादिपैण्डत्रिके
लग्नायुर्निखिलैस्तदंशकसमं कैश्चिद्भतुल्यं स्मृतम्॥
यस्येशोधिबलस्तदेव हि परैस्तेनाढ्यमन्यैर्यदं-
शायुर्वत्त्वथ चांशतुल्यमखिलोक्तं ग्राह्यमेवादिमम्॥ २४॥

अन्वयः–विभतनोर्लिप्ता राशिं विहाय लग्नस्य कलाः कार्याः द्विशत्या भाज्याः फलं वर्षादिपैण्डनिसर्गजीवशर्मायुर्दायेषु स्यात् सर्वैराचार्यैस्तदंशकसमं नवमांशसमम् उक्तं लग्नभतुल्यं कैश्चिदायुरुक्तं लग्नेशनवमांशयोर्मध्ये यो बली तदेव ग्राह्यमित्यन्यो तेनाढ्यमिति स्याच्छित्ता खनखोद्धृता इत्यादिनानीतं तत्र तेनाढ्यराशीशो बली तदा राशितुल्यवर्षनवमांशे बलवति तदा नवमांशतुल्यं वर्षम् आढ्यं कुत्र अंशायुर्वदानीते लग्नायुपि इत्यपरमतम्। अथ निखिलोक्तम् अंशसममादिममेव ग्राह्यमिति यावत्॥ २४॥

भाषा–राशिको छोडके भागादि लग्नकी कला करके उसको २०० से भाग देना तो पिंड निसर्ग और जीवशर्मायुर्दायमें लग्नायु होती है। यह अंशतुल्य अर्थात् लग्नभुक्तनवमांशतुल्य आयु सर्वाचार्य संमत है। कोई आचार्य लग्नके राशितुल्य कहते हैं। लग्नपति अंशपतिमें जो बली होय तत्तुल्य अर्थात् लग्नपति बली होय तो लग्नके राशितुल्य, आयु अंशपति बली होय तो अंशतुल्य आयु यह कोई आचार्यका मत है। आयुर्दायमें कथितरीतिसे जो आयु आवे उसमें अंशपति बली होय तो अंशतुल्य, लग्नपति बली होय तो लग्नतुल्य वर्ष युक्त करना, यह परमत है। ऐसा पृथक् पृथक् सब आचार्योंने कहा है तथापि प्रथम प्रकार जो है कोई सबका मत है इसलिये उसीको मानना इति॥ २४॥

उदाहरण–राशिरहित भागादि लग्न ९।४६।२६ इसकी कला ५८९। २६ इसको २०० से भागके २।५।२८।२२।४८ वर्ष दिन, पिंड, निसर्ग, जीवायुर्दायके विषे लग्नायु जानना॥ २४॥

चतुर्णामायुषां व्यवस्थामाह ।

अंशायुश्च तनाविनेऽधिकबले पैण्डं निसर्गं विधौ
स्याचेत्तुल्यबलं द्वयोर्युतिदलं तज्जायुषोश्चेत्त्रयः ॥
ज्यायूंपि त्रिबलैर्निहत्य च युतिर्वीर्यैक्यहृद्वा त्रिजा-
युर्युत्यास्त्रिलवोऽथ जैवमुदितं चेद्धीनवीर्यास्त्रयः ॥ २५ ॥

अन्वयः—अधिकबलायां तनावंशायुः, इने सूर्येऽधिकबले पिण्डायुः, विधावधिकबले निसर्गायुः साध्यम् । यदा द्वौ सबलौ तदा तत्तदायुषो योगदलं मिश्रायुः स्यादिति गौणः, मुख्यस्तु तत्तदायुस्तत्तद्बलेन संगुण्य तयोर्योगं तयोर्बलैक्येन भजेत्तदा मिश्रायुः स्यादित्यर्थः । यदि लग्नार्कचन्द्रास्त्रयोऽपि तुल्यबलास्तदा लग्नबलेन दिनादिकमंशायुः संगुण्य सूर्यबलेन पिण्डायुः संगुण्य चन्द्रबलेन निसर्गायुः संगुण्य सर्वेषां योगं लग्नार्कचन्द्रबलयोगेन, भजेत्फलं मिश्रायुः स्फुटं स्यात् । अथवा त्रयाणामायुषां योगस्य तृतीयांशो मिश्रायुः स्यात् । चेल्लग्नार्कचन्द्रास्त्रयोऽपि हीनबलास्तदा जीवशर्मायुः स्यादिति ॥ २५ ॥

भाषा—लग्न बली होय तो अंशायु, सूर्य बली होय तो पिण्डायु, चन्द्रबली होय तो निसर्गायु लेना, जो दो समबल कहिये पड्बलाधिक बल होय तो उन्हींसे उत्पन्न आयुष्यका योगार्ध आयु होता है. लग्न और सूर्य समबल होय तो अंशायु और पिण्डायुका योगार्ध करना, लग्न और चन्द्र समबल हो तो अंशायु और निसर्गायुका योगार्ध करना, सूर्य और चन्द्र समबल होय तो पिण्डायु और निसर्गायुका योगार्ध करना तो लग्न सूर्य और चन्द्र यह समबल होयँ तो तीनों आयुष्यको तीनोंके बलसे गुणके ऐक्य करके उसको तीनोंके बलैक्यसे भागके जो भागाकार आवे सो, अथवा तीनोंके आयुष्यके योगका तृतीयांश आयुष्य लेना यह मिश्रायु होता है । जो लग्न, सूर्य और चन्द्र यह तीनोंही हीनबल होयके [illegible] बल होय तो जीवशर्माके आयु लेना ॥ २५ ॥

उदाहरण—सूर्यका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ यह दिनादि करके ३११७।२९।२४ इसको लग्नबल ७।२४।८।३० से गुणके २३६६८। ५८।३२ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु गुणना ।

रविका पिंडायु १५।७।१८।५७।४० यह दिनादि करके ५६२८।५७ ४० इसको रविबल ७।५१।५३।३० से गुणके ४४२७०।५९।५० यह भया, इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका वह सूर्यका निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह दिनादिकरके ५९२५।१३।२० इसको चन्द्रबल ७।२०।४।३० से गुणके ४३।४५९।२।१० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका निसर्गायु करना ।

रविका यह गुणित तीनों आयुर्दायका योग दिनादि१११३९९।०।३२ इसके पल४०१०३६४३२इसको लग्नपल७।२४।८।३०रविबल७।५१। ५३।३० चन्द्रबल ७।२०।४।३०इनका योग २२।३।६।६ इसकी विकला ८१३६६।इससे भागके लब्धि दिनादि ४९२८।४७।४६ यह वर्षादि करके १३।८।८।४७।४६ यहसूर्यका मिश्रायु भया इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंका मिश्रायु साधन करना।अथवा रविका अंशायु८।१०।१७।२९।२४,पिण्डायु १५।७।१८।५७।४०, निसर्गायु१६।५।१५।१३।२०यह तीनों आयुर्दायका योग ४०।११।२१।४०।२४ इसका तृतीयांश१३।७।२७।१३।२८ यह रविका वर्षादि मिश्रायु भया, इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना॥२५॥

अंशायुश्चक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल	यो.	
८	९	१	८	११	४	१३	१५	७२	वर्ष
१०	११	११	२	९	२	४	२	११	मास
१७	१२	७	१३	१	२३	८	२४	१९	दिन
२९	५५	१९	५५	१२	२५	३४	५२	४४	घटी
२४	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२	पल

पिण्डायुश्चक्रम् ।

सू.	च.	मं	बु.	बृ.	शु	श.	ल.	यो.	
१९	१६	३	६	६	११	९	२	८०	वर्ष
७	९	११	२	९	२	७	१०	१०	मास
१८	२९	९	१६	२२	२८	१४	२८	१३	दिन
५७	०५	३	१०	१६	३७	८	२२	०	घटी
४०	३९	०	३६	१८	२५	४०	५८	२१	पल

निसर्गायुश्चक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१६	०	०	४	७	१८	२५	२	७२	वर्ष
५	८	६	७	१	३	०	१०	४	मास
१५	२	८	२७	८	२८	२०	२८	११	दिन
१३	१२	४०	७	४३	४१	२०	२२	३१	घटी
१८	३९	२४	५७	३०	२०	०	५८	५५	पल

अंशपिंडानिसर्गायुर्योगचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
४०	२७	६	११	२९	४१	४७	२१	२२१	वर्ष
११	९	४	०	९	९	०	०	२	मास
२१	१४	२१	२७	२	२०	१३	२१	२२	दिन
४०	४२	२	१३	११	५४	२	३७	१६	घटी
२४	५८	३६	४९	४८	३२	४८	३६	२७	पल

योगतृतीयांशमिश्रायुश्चक्रम् ।

सू.	च.	म.	बु	बृ.	शु.	श	ल.	यो.	(
१३	९	२	६	८	१३	१९	७	७६	वर्ष
७	१	१	४	९	११	८	०	४	मास
२३	२४	१७	९	२०	६	४	७	२७	दिन
१३	५४	०	४	४३	५४	२०	१२	२९	घटी
०८	१२	५२	३२	५६	५१	०६	३२	२६	पल

इदानीं बलाबलज्ञानं तथेदमायुः
केषां घटत इति वदति ।

ऽयल्पे हीनबले वली षडधिके वीर्यं ग्रहश्चोदयो
भिन्नं स्वस्वमते स्मृतायुरिति तत्प्राज्ञैर्व्यवस्थापितम् ॥
अंशायुर्बहुसंमतं भवति तत्सत्यं च सत्योदितं
स्याद्धर्मिष्टसुशीलपथ्यसुभुजां न स्यादिदं पापिनाम् ॥ २६ ॥

अन्वयः–ग्रह उदयो लग्नं वा ऽयल्पे सति हीनबलः ऽयधिके षड्भाल्पे मध्यबलः, षडधिके बली स्यादिति प्राज्ञैः श्रीसत्यादिभिर्व्यवस्थापितं व्यवस्था कृता निर्णीतमिति यावत् । अंशायुश्च तनाविनेत्यादिना भिन्नमिति स्वस्वमते चतुर्विधमायुः स्मृतमुक्तम् । अंशायुर्बहुसंमतं बहूनामाचार्याणां संमतं भवति, सत्यं च, तदेव सत्योदितं स्यात् बहुसाम्यं समुपैति सत्यवाक्यम् । इदमायुः धर्मिष्ठानां सुशीलवतां पथ्यसुभुजां पथ्यहितं यद्भोजनं तत्सेवनं येषां भवति तेषां स्यात् गणितागतमायुः न पापिनां स्यात् ॥ २६ ॥

भाषा–ग्रह या लग्नका षड्बलैक्य ३ से कम होय तो हीनबल होवे हैं । ३ से अधिक होय तो मध्यबल और ६ से अधिक होय तो बली होता है । सब आचार्योंने पृथक् ६ आयु कहा है । लग्न बली होय तो अंशायु, सूर्य बली होय तो पिण्डायु इत्यादि कहा है । ऐसा है तथापि सत्याचार्यका मत अंशायुपर है । बहुत आचार्योंकाभी मत है और जो धर्मिष्ठ, सुशील, पथ्यभोजी हैं उन्हीकी आयु मिलती है, पापियोंकी नहीं और पथ्यापथ्यसे रहित जो हैं वह अकालमें भी मरते हैं ॥ २६ ॥

शिष्यसन्देहनिवारणमाह ।

हानिर्यास्तमितेऽरिभेऽप्यनुमतांशोत्थेऽल्पबुद्ध्या न
तद्यस्माच्चैहिक आश्रयेऽस्ति निखिलैः पैण्डादिषूक्ता ततः ॥
आयुः सौरमिदं यतोऽब्दगणना सौरान्ततः सूरिभिः
प्रोक्तं सत्यमसत्यदल्पकथितं नाक्षत्रकं सावनम् ॥ २७ ॥

अन्वयः-या अस्तमितेऽर्द्धहानिः शत्रुभे त्र्यंशहानिः सा तु पैण्डादित्रिष्वायुर्दाये उक्ता, केनचिदाचार्येणांशायुर्दाये कृता सात्वल्पबुद्ध्या हेतुभूतया अल्पाचार्यो बुद्धिश्चाल्पबुद्धिस्तयाल्पबुद्ध्याऽसत् यस्मात्कारणादसत्त्म् इते हानिश्चेष्टिके चेष्टागुणके यतोऽस्तं गतस्य चेष्टागुणके रूपार्द्धमेव हानिः, अरिगृहे त्र्यंशहानिरुक्तास्तीति भावः। आयुः सौरमितमेव ग्राह्यं यतोब्दगणनां सौरात् उक्तं च 'वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरान्मासास्तथा च तिथयस्तुहिनांशुमानात् ॥ यत्कृच्छ्रसूतकचिकित्सितवासराद्यं तत्सावनाच घटिकादिकमार्क्षमानात् ॥' ततः सूरिभिः सत्यं प्रोक्तम् अतःकथितं नाक्षत्रकं सावनमिति केचिदल्पज्ञेन नाक्षत्रसावनेनायुः कथितं तदसदिति शम् ॥२७॥

भाषा-पिण्डादि आयुर्दायमें अस्तंगत ग्रह होय तो अर्ध हानि और शत्रु गृहमें होय तो त्र्यंश हानि जो सब आचार्योंने कहा है उसको अनुमानसे कोई अल्पबुद्धिसे अंशायुर्दायमें करेंगे तो वह करना नहीं, कारण अर्ध हानि चेष्टा गुणकमें और त्र्यंश हानि आश्रय गुणकमें है, वर्षगणना सौरसे है इसवास्ते विद्वान्ने यह आयुर्दाय सौरमानसे कथित है और वही सत्य है, नाक्षत्र किंवा सावन मान लेना ऐसा जो कोई कहते हैं सो असत्य जानना क्योंकि बहुमतसे विरोध है सो ठीक नहीं है ॥ २७ ॥

इदानीं मनुष्यपरमायुरन्यप्राणिनां परमायुःकथनपूर्वकमायुर्दायानयनमाह।

पञ्चाद्रे नगभूगुणा नृकरिणां व्यामाश्वगादेर्नृपाः
गोकाल्योश्च जिनास्तयोद्दसरयोर्ल्लरवानि गृधां शुनाम् ॥
अश्वायुः परमं त्वदा नृवदिहानीयायुरेषां परा-
युर्निघ्नं नृपरमायुषा च विहृतं तेषां स्फुटायुर्भवेत् ॥ २८ ॥

अन्वयः-नगाश्विकरमभूगुणानि १२०।१५ नृकरिणां परमायुः न्तद्।व्यामाश्वगादेर्नृपाः १६, गोकाल्योर्विदिष्योर्जिनाश्चतुर्विंशति २४

मितास्तमायुः, हीति निश्चयार्थबोधकः । तयोर्खरयोस्तत्त्वानि पंचविंशति २५ वर्षाणि परमायुः, शुनां कुक्कुराणां द्वादशवर्षाणि परमायुः स्यात् अश्वानां रदा द्वात्रिंशत् ३२, एषां नृवत् मनुष्यवदायुरानीय स्वस्वपरमायुर्दायवर्षैः संगुण्य नृपरमायुषा भजेत्तदा तेषां स्फुटायुर्भवेत् ॥ २८ ॥

इति आयुर्दायाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

भाषा-मनुष्य और हाथी इनका परमायु १२० वर्ष ५ दिन, व्याघ्रादि और अजादि इनका १६ वर्ष, गौ भैंस इनका २४ वर्ष, ऊँट और गर्दभ इनका २५ वर्ष, कुत्तेका १२ वर्ष, घोडेका ३२ वर्ष यह प्राणीका मनुष्यके प्रमाण आयुर्दाय बनायके उसको स्वस्वपरमायुसे गुणके गुणाकारको मनुष्यके परमायु १२० वर्ष ५ दिनसे भाग देना तो उस २ प्राणीका स्पष्टायु होता है इति ॥ २८ ॥

जगदीशेन रचिते केशवीग्रन्थटिप्पणे ॥
पूर्णोऽयमायुरध्यायो भाषार्थस्य प्रकाशकः ॥ ६ ॥
इत्यायुर्दायाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

अथ दशाऽध्यायः ॥ ७ ॥

यस्यायुर्यदसौ दशास्य च शुभेष्टोच्चस्वभांशे तथा-
रोहा नीचपरिच्युतस्य यदि सा कष्टारिनीचांशभे ॥
त्यक्तोच्चे त्ववरोहिणी भवति सा मध्योच्चमित्रस्वभां-
शे सदृष्टयुतः स्फुरत्करबलिष्ठेऽष्टाधिके स्याच्छुभा ॥२९॥

अन्वयः-यस्य ग्रहस्य लग्नस्य वा यदायुरानीतस्य ग्रहस्य दशा स्यात्, इष्टोच्चस्वभांशे वर्त्तमानस्य शुभा, इष्टस्य मित्रस्य भेंऽशे वा उच्चगृहे उच्चांशे वा स्वभे स्वांशे वा स्थितस्य ग्रहस्य दशा शुभा स्यात् तथा नीचपरिच्युतस्य ग्रहस्य दशाऽऽरोहा शुभा स्यात् । यदि नीचपरिच्युतग्रहोऽरिभांशे अरेः शत्रोर्नीचस्य वा भांशे तदा तस्य दशा कष्टदा नेष्टफलदा । त्यक्तोच्चे ग्रहे तद्दशाऽवरोहिणी अशुभा अशुभफलदा, यदि त्यक्तोच्चग्रह उच्चमित्रस्वभ

स्थितस्तदा तस्य दशाऽशुभाऽपि मध्या स्यात् । सद्दृष्टयुतस्फुरत्करबलिष्ठेष्टा- धिके ग्रहे सति तस्य दशा शुभा स्यात् । शुभग्रहैर्दृष्टो युतश्च स्फुरत्करा रश्मयो यस्य स स्फुरत्करः बलिष्ठेऽधिकबले इष्टाधिके इष्टम् इष्टबलमधिकं यस्य स इष्टबलः ॥ २९ ॥

भाषा—ग्रहका जो आयुर्दाय वही उसकी दशा होती है. ग्रह मित्रगृहमें उच्चमें वा स्वगृहमें अथवा मित्रांशमें उच्चांशमें वा स्वांशमें होय तो उस ग्रहकी दशा शुभ होती है । ऐसाही यदि ग्रह परमनीचको छोडकर आगे जाय तो दशा आरोहा शुभ होती है परंतु जो वह ग्रह शत्रुगृहमें वा नीचमें किंवा शत्रुके अंशमें वा नीचांशमें होय तो आरोहा दशा यह अशुभ होती है । और ग्रह परम उच्च छोडके आगे जाय तो दशा अवरोहिणी अशुभ होती है परंतु ग्रह उच्चमें मित्रगृहमें वा स्वगृहमें अथवा उच्चांशमें मित्रांशमें वा स्वांशमें होय तो अवरोहिणी दशा यह मध्यम होती है ग्रह शुभदृष्ट शुभ- युक्त, उदित, बलिष्ठ और इष्टाधिक कहिये पूर्वमें ले आये जो इष्ट सो अधिक होय तो दशा शुभ होती है ॥ २९ ॥

इदानीं दशाक्रममाह ।

> स्यादाद्या हि दशाऽधिकौजस इहार्केन्दूदयानां तत-
> स्तत्केन्द्रादियुजामथ द्विबहुषां वीर्यक्रमेणैव हि ॥
> स्वेद्रांनस्समतायुपोऽधिकतयायुस्तुल्यता चेद्दशा-
> मौढ्यात्स्यादुदितक्रमात्क्रमविधौ वीर्ये हि तत्रान्यथे ॥ ३० ॥

अन्वयः—अर्केन्दूदयानां सूर्यचन्द्रलग्नानां मध्ये योऽधिकबलस्तस्याद्या दशा कल्प्या, ततस्तत्केन्द्रादियुजाम् । तद्यथा—अर्के बलाधिके प्रथमदशा- ऽर्कस्य, ततस्तत्केन्द्रस्थितानाम् अर्थात् द्वितीया दशा रविस्थाने स्थितस्य, तृतीया चतुर्थे स्थितस्य, चतुर्थी सप्तमस्थस्य, पंचमी दशमस्थितस्य एवं चन्द्रे वा लग्ने बलिनि । ततः पणफरस्थानां २।५।८।११ ततः आपोक्लिमस्था ३।६।९।१२ स्थान ग्रहदशास्या द्विबहुषः संति तदा बलक्रमात आदि-

स्याद्या दशा, ततो न्यूनस्य द्वितीया, एवं तृतीयाद्या, बलसाम्ये यस्याधि-
कायुः तत्रापि न्यूनाधिक्यं योज्यम्, तस्यापि साम्ये यो ग्रहोऽस्तात्प्रथमो-
दितस्तस्याद्या दशा ज्ञेयेति ॥ ३० ॥

भाषा–सूर्य, चन्द्र और लग्न इसमें जो बली होय उसकी दशा प्रथम जानना और उसके बाद केन्द्र १।४।७।१० स्थकी दशा, अनंतर पणफर २।५।८।११ स्थकी दशा, अनन्तर आपोक्लिमस्थ ग्रहकी दशा ऐसा क्रम जानना। केन्द्रमें पणफरमें और आपोक्लिमस्थानमें एकसे ज्यादा ग्रह होय तो प्रथम दशा किसकी है। तब उसमें जो अधिकबल होय उसकी प्रथम दशा अनंतर न्यूनबल होय उसकी दशा कदाचित् बलकी भी समता होय तो जिसकी आयु अधिक होय उसकी प्रथम दशा, आयुकीभी समता होय तो जो अस्तसे प्रथम उदय हुआ होय उसकी प्रथम दशा होती है ॥ ३० ॥

इदानीं लग्नाद्यदशाप्राप्तबलमाह।

चेल्लग्नाद्यदशा स्वभावजफलग्नौजांसि पाकक्रमे-
ऽर्केन्द्वोश्चेत्प्रथमाखगोदयबलाङ्घ्रिर्भेऽन्यवर्गेऽर्द्धितः ॥
स्वैर्वर्गेशबलैर्हतो बलमिहैक्यं मूलितैक्यं परे-
ऽप्येवं रिष्टदभंकृजेऽधिकबले भक्ता तदा रिष्टहृत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः–चेदाद्या लग्नदशा तदा भावफलग्नौजांसि कार्याणि ओजांसि स्वस्वषड्बलैक्यानि ग्रहाणां भावजफलैर्गुण्यानि दशाक्रमे तानि दशाबलानि स्फुटानि भवन्ति। चेदर्केन्द्वोः प्रथमा दशा, अर्कस्य चन्द्रस्य वा प्रथमा दशा तदा ग्रहाणां लग्नस्य च यत्षड्बलैक्यं तस्यांघ्रिश्चतुर्थांशो भे गृहस्थाने स्थाप्योऽन्यवर्गे होरादिषु चतुर्थांशस्यार्द्धः स्थाप्यः, ते सप्तवर्गस्थितांकाः स्वैर्वर्गेशबलैर्निहत्य गुणयित्वा तेषामैक्यं बलं स्यात् अपरमतं तु अपरे एवं ब्रुवन्ति। तेषां गुणनफलं प्रथमं मूलानि गृहीत्वा तेषामैक्यं बलं स्यात्तदसदे-कदेशत्वात् खगोदयबलांघ्रीत्यादिप्रकारेणानीतबले रिष्टदभंकृज्ग्रहयोर्यदि रिष्टभंक्ता रिष्टदग्रहापेक्षयाऽधिकबलस्तदा रिष्टहृत्स्यात् ॥ ३१ ॥

स्थितस्तदा तस्य दशाऽशुभाऽपि मध्या स्यात् । सदृष्टयुतस्फुरत्करवलिष्टेष्टाधिके ग्रहे सति तस्य दशा शुभा स्यात् । शुभग्रहैर्दृष्टो युतश्च स्फुरत्करा रश्मयो यस्य स स्फुरत्करः वलिष्टेऽधिकबले इष्टाधिके इष्टम् इष्टबलमधिकं यस्य स इष्टबलः ॥ २९ ॥

भाषा–ग्रहका जो आयुर्दाय वही उसकी दशा होती हैं. ग्रह मित्रगृहमें उच्चमें वा स्वगृहमें अथवा मित्रांशमें उच्चांशमें वा स्वांशमें होय तो उस ग्रहकी दशा शुभ होती है । ऐसाही यदि ग्रह परमनीचको छोडकर आगे जाय तो दशा आरोहा शुभ होती है परंतु जो वह ग्रह शत्रुगृहमें वा नीचमें किंवा शत्रुके अंशमें वा नीचांशमें होय तो आरोहा दशा यह अशुभ होती है । और ग्रह परम उच्च छोडके आगे जाय तो दशा अवरोहिणी अशुभ होती है परंतु ग्रह उच्चमें मित्रगृहमें वा स्वगृहमें अथवा उच्चांशमें मित्रांशमें वा स्वांशमें होय तो अवरोहिणी दशा यह मध्यम होती है ग्रह शुभदृष्ट शुभयुक्त, उदित, बलिष्ठ और इष्टाधिक कहिये पूर्वमें ले आये जो इष्ट सो अधिक होय तो दशा शुभ होती है ॥ २९ ॥

इदानीं दशाक्रममाह ।

स्यादाद्या हि दशाऽधिकौजस इहार्केन्दूदयानां तत-
स्तत्केन्द्रादियुजामथ द्विबहवो वीर्यक्रमेणैव हि ॥
चेदोजस्समतायुपोऽधिकतयायुस्तुल्यता चेद्दशा-
मौढ्यात्स्यादुदितक्रमात्क्रमविधौ वीर्यं हि तत्रोच्यते ॥३०॥

अन्वयः–अर्केंदूदयानां सूर्यचन्द्रलग्नानां मध्ये योऽधिकबलस्तस्याद्या दशा कल्प्या, ततस्तत्केन्द्रादियुजाम् । तद्यथा–अर्के बलाधिके प्रथमदशाऽर्कस्य, ततस्तस्य केन्द्रस्थितानाम् अर्थात् द्वितीया दशा रविस्थाने स्थितस्य, तृतीया चतुर्थस्थितस्य, चतुर्थी सप्तमस्थस्य, पंचमी दशमस्थितस्य एवं चन्द्रे वा लग्ने बलवति सति । ततः पणफरस्थस्य२।५।८।११तत आपोक्लिमस्था ३।६।९।१२ नाम यद्येकस्था द्विप्रहवः संति तदा वक्ष्यमाणबलाधिक-

द्वितीय दशा, चन्द्रकी तृतीय दशा, अनन्तर पणफरमें शुक्र, मङ्गल हैं इसमें मङ्गल अधिकबल है इसकी चतुर्थ दशा, अनन्तर शुक्रकी आपोक्लिममें गुरु, बुध, शनि हैं. इसमें गुरु अधिक बल है इसकी दशा अनन्तर शनिकी दशा अनन्तर बुधकी दशा इस प्रकार अंशायु करना। उदाहरणार्थ सूर्य अधिक बल कल्पना करके पिंडायुमें दशाक्रम लिखते हैं प्रथम सूर्य दशा अनन्तर सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इसमें प्रथम दशा किसकी है यह समझनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं–

अंशायुचक्रम् ।

लग्न	सूर्यः	चन्द्रः	मंग	शुक्रः	बृह	शनिः	बुधः	योगः
१६	८	१	१	४	११	१३	८	७२
२	१०	११	११	२	२	४	२	११
२४	१७	१२	७	२३	१	८	१३	११
५२	२९	५५	१९	२६	१२	३४	५५	४४
१०	२४	४८	१२	४८	०	४८	१२	१२

चन्द्रका षड्बलैक्य७।२०।४इसका चतुर्थांश१।५०।१ यह गृहस्थानमें बल इसका अर्ध०।५५।० यह होरादि६ स्थानमें बल। अब चन्द्रका गृहेश शनि इसका षड्बलैक्य ६।२।११ इससे चन्द्रका गृह बल १।५०।१ इसको गुणके ११।४।६ यह चन्द्रका होरेश चन्द्र इसका षड्बलैक्य ७।२०।४ इससे चन्द्रका होराबल ०।५५।० इनको गुणके ६।४३।२४ इस रीतिसे द्रेष्काणादिकोंका गुणाकार करके समवर्गमेंके गुणाकारका ऐक्य करना तो दशाक्रम बल होता है ।

भाषा—यदि लग्नकी प्रथम दशा होय तो भावफलसे ग्रहके षड्बलैक्यको गुण देना तो दशाक्रमसे बल होता है। यदि सूर्य या चन्द्रमाकी प्रथम दशा होय तो ग्रह और लग्न इनके बलका चतुर्थांश सप्तवर्ग बलके गृहस्थानमें रखना और उसका आधा होरादि ६ स्थानमें रखना और उनको अपने अपने वर्गस्वामीके बलसे गुण देना और सबका योग करना तो बल होता है। और कोई आचार्योंका यह मत है कि, गुणनफलका मूल लेकर योग करना तो बल होता है यह ठीक नहीं है। पूर्वरीतिसे आया जो बल वह यदि रिष्टकर्ता ग्रहके अपेक्षा रिष्टभङ्गकर्त्ता ग्रहका बल अधिक होय तो रिष्टको नाश करेगा ॥ ३१ ॥

दशाक्रमोदाहरण।

यहां सूर्य चन्द्र और लग्न इसमें सूर्य अधिक बल है इसवास्ते पिंडायुमें सूर्यदशा प्रथम लेके उदाहरणक्रम लिखना। तथापि ग्रन्थक्रमानुरोधसे लग्नबलाधिक कल्पना करके अंशायुमें प्रथम लग्नदशा लेके दशाक्रम लिखते हैं—प्रथमलग्नदशा अनन्तर लग्नसे केन्द्रस्थानमें सूर्य, चन्द्र है और पणफरमें शुक्र, मंगल है और आपोक्लिममें गुरु, बुध शनि हैं इनमेंसे प्रथम दशा किसकी है यह समझनेके वास्ते दशाक्रमबल करते हैं।

दशाक्रमबलचक्रम्।

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ल
६	३	४	१	६	०	०	
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	[illegible]

लग्नचक्रम्।
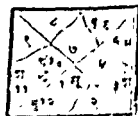
रविका षड्बलैक्य ७।०।१।५३ इसको रविभावफल ०।४६।३२ इससे गुनके ६।३।३६।२८ रविका दशाक्रमबल भया। इसी रीतिसे चन्द्रादिकोंका बल करना। यहां केन्द्रमें जो सूर्य चन्द्र हैं इसमें सूर्य अधिकबल है। इसकी

द्वितीय दशा, चन्द्रकी तृतीय दशा, अनन्तर पणफरमें शुक्र, मङ्गल हैं इसमें मङ्गल अधिकबल है इसकी चतुर्थ दशा, अनन्तर शुक्रकी आपोक्लिममें गुरु, बुध, शनि हैं. इसमें गुरु अधिक बल है इसकी दशा अनन्तर शनिकी दशा अनन्तर बुधकी दशा इस प्रकार अंशायु करना । उदाहरणार्थ सूर्य अधिक बल कल्पना करके पिंडायुमें दशाक्रम लिखते हैं प्रथम सूर्य दशा अनन्तर सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इसमें प्रथम दशा किसकी है यह समझनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं—

अंशायुचक्रम् ।

लग्न	सूर्यः	चन्द्रः	मग	शुक्रः	गुरु	शनिः	बुधः	योगः
१९	८	९	१	४	११	१३	८	७२
२	१०	११	११	२	२	४	२	११
२४	१७	१३	७	२३	१	८	१३	११
५७	२९	५५	११	२९	१२	३४	५५	४४
१०	२४	४८	१७	४८	०	४८	१२	१२

चन्द्रका षड्बलैक्य ७।२०।४ इसका चतुर्थांश १।५०।१ यह गृहस्थानमें बल इसका अर्ध ०।५५।० यह होरादि ६ स्थानमें बल। अब चन्द्रका गृहेश शनि इसका षड्बलैक्य ६।२।११ इससे चन्द्रका गृह बल १।५०।१ इसको गुणके ११।४।६ यह चन्द्रका होरेश चन्द्र इसका षड्बलैक्य ७।२०।४ इससे चन्द्रका होराबल ०।५५।० इनको गुणके ६।४३।२४ इस रीतिसे द्रेष्काणादिकोंका गुणाकार करके सप्तवर्गमेंके गुणाकारका ऐक्य करना तो दशाक्रम बल होता है ।

ग्रह और लग्न इनका बलचतुर्थांश गृह और तदर्ध होरादि ६ स्थानमें।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
गृह	१ ५७ ५८	१ ५० १	१ १७ ४२	१ १८ ६	१ ५३ ५२	१ २२ ५४	१ ३० ३३	१ ५१ २
होरा	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१
द्रेष्काण.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१
सप्तमांश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१
नवमांश.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१
द्वादशांश.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ०	० ५६ ५६	० ४१ ४१	० ४९ १६	० ५५ ३१
त्रिंशांश.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१

वर्गोंशबलसे गुणके ।

ग्र.	सू	च	म	बु	बृ	शु.	श.	लग्न
गृह	१० ११ १०	११ ४ ६	१० ११ ५	९ ५२ ५१	९ ५२ ५६	८ २० २६	७ ५१ ३१	१० १३ ४१
होरा	७ ४३ ५३	६ ४३ २४	५ ५ ३२	५ ७ ७	६ ५७ ३४	५ ४ १	५ ५६ ०	७ १६ ३७
द्रेष्का.	७ ४३ ५३	५ ३२ ०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	४ ५६ २८	३ ४९ ५	४ १० ११	५ ६ ५०
सप्त.	७ १२ ३७	७ १२ ३४	३ ३४ ४३	३ ५५ ४३	४ ५४ ५८	५ २५ ५९	३ ५५ ४३	७ १ २५
नवमां	७ १२ ३७	५ ३२ ०	४ ४४ ५६	३ ५५ ४३	७ १२ १०	३ ३५ ५०	४ ३३ १५	७ १ २५
द्वाद	५ ७ ८	६ ५७ ३०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	७ १२ १०	५ १४ ३८	३ ५४ ३१	५ ३५ ७
त्रिंशा.	७ २७ ४४	४ ४६ २४	४ ५४ ५४	३ ५५ ४३	४ ५६ २८	३ ४९ ५	३ ५४ ३१	५ ३५ ७

गुणाकारका ऐक्यदशाक्रमबलचक्र ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	लग्न	योग
५२	४७	३८	३३	४६	३५	३४	४७	३३५
३९	४७	२०	३१	२८	१९	१५	५०	४१
२	५८	५८	४५	५४	४	५२	१२	३५

यहां सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इसमें लग्न अधिक बल है उसकी द्वितीय दशा, अनंतर चन्द्रकी पणफरमें मंगल शुक्र इसमें मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा आपोक्लिममें बुध, गुरु,शनि हैं, इनमें गुरु अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शनिदशा अनंतर बुधकी दशा

ग्रह और लग्न इनका बलचतुर्थांश गृह और तदर्ध होरादि ६ स्थानमें ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
गृह	१ ५७ ५८	१ ५० १	१ १७ ४२	१ १८ ६	१ ५३ ५२	१ २२ ५४	१ ३० ३३	१ ५१ २
होरा	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
द्रेष्काण.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
सप्तमांश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
नवमांश.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
द्वादशांश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ०	० ५६ ५६	० ४१ ४१	० ४५ १६	० ५५ ३१
त्रिंशांश.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१

ग्रह और लग्न इनका बलचतुर्थांश गृह और तदर्ध होरादि ६ स्थानमें ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
गृह	१ ५७ ५८	१ ५० १	१ १७ ४२	१ १८ ६	१ ५३ ५२	१ २२ ५४	१ ३० ३३	१ ५१ २
होरा	० ५८ ५९	० ५९ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५९ ३१
द्रेष्काण.	० ५८ ५९	० ५९ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५९ ३१
सप्तमांश	० ५८ ५९	० ५९ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५९ ३१
नवमांश.	० ५८ ५९	० ५९ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५९ ३१
द्वादशांश.	० ५८ ५९	० ५९ ०	० ३८ ५१	० ३९ ०	० ५६ ५६	० ४१ ४१	० ४९ १६	० ५९ ३१
त्रिंशांश.	० ५८ ५९	० ५९ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५९ ३१

चेष्टाबलसे गुणके ।

ग्र.	सु	च	म.	बु	बृ	शु.	श.	लग्न
गृह	१० ११ १०	११ ४ ६	१० ११ ९	९ ५२ ५१	९ ५२ ५६	८ २० २६	७ ५१ ३१	१० १३ ४१
होरा	७ ४३ ५३	६ ४३ २४	५ ५ ३२	५ ७ ७	६ ५७ ३४	५ ४ १	५ ५६ ०	७ १६ ३७
द्रेष्का.	७ ४३ ५३	५ ३२ ०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	४ ५६ २८	३ ४९ ५	४ १० ११	५ ६ ५०
सप्त.	७ १२ ३७	७ १२ ३४	३ ३४ ४३	३ ५५ ४३	४ ५४ ५८	५ २५ ५९	३ ५५ ४३	७ १ २५
नवमां	७ १२ ३७	५ ३२ ०	४ ४४ ५६	३ ५५ ४३	७ १२ १०	३ ३५ ५०	४ ३३ १५	७ १ २५
द्वाद.	५ ७ ८	६ ५७ ३०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	७ १२ १०	५ १४ ३८	३ ५४ ३१	५ ३५ ७
त्रिंशा.	७ २७ ४४	४ ४६ २४	४ ५४ ५४	३ ५५ ४३	४ ५६ २८	३ ४९ ५	३ ५४ ३१	५ ३५ ७

गुणाकारका ऐक्यदशाक्रमबलचक्र ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	लग्न	योग
५२	४७	३८	३३	४६	३९	३४	४७	३३९
३९	४७	२०	३१	२८	१९	१५	५०	४१
२	५८	५८	४२	५४	४	५२	१०	०९

यहां सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इसमें लग्न अधिक बल है उसकी द्वितीय दशा, अनंतर चन्द्रकी पणफरमें मंगल शुक्र इसमें मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा आपोक्लिममें बुध, गुरु,शनि हैं. इसमें गुरु अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शनिदशा अनंतर बुधकी दशा

ग्रह और लग्न इनका वटचतुर्थांश गृह और तदर्थ होरादि ६ स्थानमें ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
गृह	१ ५७ ५८	१ ५८ १	१ १७ ४२	१ १८ ६	१ ५३ ५२	१ २२ ५४	१ ३० ३३	१ ५१ २
होरा	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
द्रेष्काण.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
सप्तमांश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
नवमांश.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
द्वादशांश.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ०	० ५६ ५६	० ४१ ४१	० ५५ १६	० ५५ ३१
त्रिंशांश.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१

वर्गाबलसे गुणके ।

ग्र.	सू	च	म	बु	बृ	शु	श.	लग्न
गृह	१० ११ १०	११ ४ ६	१० ११ ५	१ ५२ ५१	१ ५२ ५६	८ २० २६	७ ५१ ३१	१० १३ ४१
होरा	७ ४१ ५३	६ ४३ २४	५ ५ ३२	५ ७ ७	६ ५७ ३४	५ ४ १	५ ५६ ०	७ १६ ३७
द्रेष्का.	७ ४१ ५३	५ ३२ ०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	४ ५६ २८	३ ४९ ५	४ १० ११	५ ६ ५०
सप्त.	७ १२ ३७	७ १२ ३४	३ ३४ ४३	३ ५५ ४३	४ ५४ ५८	५ २५ ५९	३ ५५ ४३	७ १ २५
नवमां	७ १२ ३७	५ ३२ ०	४ ४४ ५६	३ ५५ ४३	७ १२ १०	३ ३५ ५०	४ ३३ १५	७ १ २५
द्वाद.	५ ७ ८	६ ५७ ३०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	७ १२ १०	५ १४ ३८	३ ५४ ३१	५ ३५ ७
त्रिंशा.	७ २७ ४४	४ ४६ २४	४ ५४ ५४	३ ५५ ४३	४ ५६ २८	३ ४९ ५	३ ५४ ३१	५ ३५ ७

गुणाकारका ऐश्यदशाक्रमबलचक्र ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	लग्न	योग
५२ ३९ २	४७ ४७ ५८	३८ २० ५८	३३ ३१ ४२	४६ २८ २४	३५ १९ ५	३४ १५ ५२	४७ ५० १२	३३५ ४३ २८

यहां सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इसमें लग्न अधिक बल है उसकी द्वितीय दशा, अनंतर चन्द्रकी पणफरमें मंगल शुक्र इसमें मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा आपोक्लिममें बुध, गुरु,शनि हैं, इसमें गुरु अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शनिदशा अनंतर बुधकी दशा

ग्रह और लग्न इनका बलचतुर्थांश गृह और तदर्ध होरादि ६ स्थानमें ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
गृह	१ ५७ ५८	१ ५० १	१ १७ ४२	१ १८ ६	१ ५३ ५२	१ २२ ५४	१ ३० ३३	१ ५१ २
होरा	० ५८ ५९	० ५२ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१
द्रेष्काण.	० ५८ ५९	० ५२ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१
सप्तमांश	० ५८ ५९	० ५२ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१
नवमांश	० ५८ ५९	० ५२ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१
द्वादशांश	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ०	० ५६ ५६	० ४१ ४१	० ४९ १६	० ५५ ३१
त्रिंशांश.	० ५८ ५९	० ५२ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४९ १६	० ५५ ३१

वर्गोंबलसे गुणके ।

ग्र.	सू.	च.	म	बु	गु	शु.	श.	लग्न
गृह	१० ११ १०	११ ४ ६	१० ११ ५	९ ५२ ५१	९ ५२ ५६	८ २० २६	७ ५१ ३१	१० १३ ४१
होरा	७ ४३ ५३	६ ४३ २४	५ ५ ३२	५ ७ ७	६ ५७ ३४	५ ४ १	५ ५६ ०	७ १६ ३७
द्रेष्का.	७ ४३ ५३	५ ३२ ०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	४ ५६ २८	३ ४१ ५	४ १० ११	५ ६ ५०
सप्त.	७ १२ ३७	७ १२ ३४	३ ३४ ४३	३ ५५ ४३	४ ५४ ५८	५ २५ ५१	३ ५५ ४३	७ १ २५
नवमां	७ १२ ३७	५ ३२ ०	४ ४४ ५६	३ ५१ ४३	७ १२ १०	३ ३५ ५०	४ ३३ १५	७ १ २५
द्वाद.	५ ७ ८	६ ५७ ३०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	७ १२ १०	५ १४ ३८	३ ५४ ३१	५ ३५ ७
त्रिंशा.	७ २७ ४४	४ ४६ २४	४ ५४ ५४	३ ५५ ४३	४ ५६ २८	३ ४१ ५	३ ५४ ३१	५ ३५ ७

गुणाकारका ऐक्यपदशाक्रमबलचक्र ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	[illegible]	लग्न
५२ ३१ ८ २	४७ ४७ ५८	३८ २८ ५८	३३ ३१ ४९	४६ ३८ १४	३९ १९ ४	३४ १५ ४७	४७ ५० १७?	[illegible] ४०? [illegible]

यहां सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इसमें लग्न अधिक बल है उसकी दीप दशा, अनंतर चन्द्रकी पणफरमें मंगल शुक्र इसमें मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा आपोक्लिममें बुध, गुरु,शनि हैं, इनमें गुरु अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शनिदशा अनंतर बुधकी दशा

यहां मिश्रायुमें सूर्य अधिक बल है इसवास्ते यही दशाक्रम जानना । य
चल पिंडायुमें और निसर्गायुमें लेना । अंशायुमें पहले जो बल किया है उसक
प्रमाणसे दशा रखना ।

पिण्डायुर्दशाचक्रम् ।

सू.	ल	च.	मं.	शु.	बृ.	श.	बु.	यो.	
१९	२	१६	३	११	६	९	६	८०	वर्ष
७	१०	९	११	२	९	७	२	१०	मास
१८	२८	२१	९	२८	२२	१४	१६	१३	दिन
९७	२२	२४	३	३७	१६	८	१०	०	घटी
४०	४८	३९	०	२४	१८	०	३६	२१	पल

उदाहरणकेलिये चंद्रका अधिक बल कल्पना करके निसर्गायुमें दशाक्रम लिखते हैं-प्रथम चन्द्रदशा अनंतर चन्द्रसे केन्द्रस्थानमें लग्न और सूर्य हैं इसमें सूर्य अधिकबल है इसकी द्वितीय दशा अनंतर लग्नकी दशा. चन्द्रसे पणफरमें शुक्र मंगल है । इसमें मंगल अधिकबल है । उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा, चन्द्रसे आपोक्लिमस्थानमें बुध गुरु शनि हैं । इनमें गुरु अधिक बल है इसकी दशा, अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा पिंडायुमें जो बल किया है उसी बलके प्रमाणसे निसर्गायुमेंभी लेना और जीवायुमें भी लेना ।

निसर्गायुचक्रम् ।

चं.	सू.	ल.	मं.	शु.	बृ.	श.	बु.	यो.	
०	१६	२	०	१८	७	२४	४	७२	वर्ष
८	९	१०	६	३	९	०	७	४	मास
२	१९	२८	८	२८	८	२९	२७	११	दिन
२२	१३	२२	४०	४१	४३	२०	७	३१	घटी
३९	२०	४८	२४	२०	३०	०	९७	५५	पल

जीवायुर्दायमें सूर्य, चन्द्र लग्नमें हीन बल होय तथापि जो उसमें अधिक बल होय उसकी प्रथम दशा कल्पना करके अनंतर उससे जो केन्द्रादि स्थानमें होय उनकी दशा इत्यादि क्रम जानना ॥ ३१ ॥

रिष्टभङ्गविचारान्तरे दशाक्रमबलदार्ढ्यं
मतान्तरनिराकरणं च ।

भंक्तू रिष्टकृतो हिताहितशुभासत्त्वं च नीचोच्चभा-
स्ताद्यस्याश्रयतां विचार्य मतिमान् रिष्टस्य भङ्गं वदेत् ॥
श्रेष्ठं रिष्टहृतो दशाक्रम इहौजः श्रीधराद्योदितं
कष्टेष्टमवलान्तरात्क्वच कृतं तद्युक्तिशून्यं त्वसत् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—भंक्तुरिति । रिष्टभंक्तुः रिष्टकृतो रिष्टकारकस्य ग्रहस्य हिताहितं शुभाशुभं विचार्य रिष्टभङ्गं वदेत् हितं इष्टम्, अहितं कष्टं शुभासत्त्वं शुभग्रहं पापग्रहं च उच्चस्थितो नीचस्थितो वा अस्तोदितो वा मित्रगृहे शत्रुगृहे वा स्यादित्यादि सर्वं विचार्य रिष्टस्य भङ्गं वदेत् मतिमान् । इहास्मिन्स्थले दशाक्रमे श्रीधराद्योदितम् ओजो बलश्रेष्ठं इष्टबलेन गुण्यो दशाविधौ बलं स्यात् । अथ परमतम् । कष्टेष्टमेति । क्वच केचनाचार्याः कष्टेष्टाभ्यां गुणिते बले तयोरंतरात्साधितं वीर्यं दृक् पृथगिष्टगुणितमित्यादिना इष्टकष्टगुणितं षड्बलं तयोरन्तरं कार्यं तस्य चतुर्थांशो गृहे, होरादावर्धितः ततः स्वस्ववर्गांशबलैर्हत-स्तैषामैक्यं स्पष्टबलं स्यात्तदसत् युक्तिशून्यत्वात् ॥ ३२ ॥

भाषा—अरिष्टकर्ता ग्रह और अरिष्टभंगकर्ता ग्रह इनके इष्ट कष्ट वह शुभ है किंवा पाप हैं यह और वह नीचमें उच्चमें मित्रगृहमें शत्रुगृहमें और अस्तगत उदित हैं इत्यादि इनका आश्रयत्वका विचार करके बुद्धिमान् गणकने अरिष्ट भङ्ग कहना । यह ग्रंथमें रिष्टभङ्गके विषे और दशाक्रमके विषे श्रीधरादिक आचार्योंने कहे प्रमाण बल लानेकी रीति कही है वही श्रेष्ठ है श्रीपति इत्यादि ग्रंथकारने इष्टसे वा कष्टसे षड्बल गुणके उसके अन्तरसे जो बल साधन कथित किया वह अयुक्त है इसवास्ते असत् है ॥ ३२ ॥

अन्तर्दशाकरणम् ।

अर्धस्यैकभगस्त्रिकोणगृहगस्त्र्यंशस्य चास्ते नगां-
शस्यांघ्रिश्चतुरस्रगो निजगुणैः पङ्क्तिभे स्याद्बली ॥

अंशादौ कुरु रूपमत्र समतां कृत्वा च नाशं छिदा-
मंशघ्नाः स्वदशाः पृथक् खलु लवैक्याप्ताः स्युरन्तर्दशाः ॥ ३३ ॥

अन्वयः--मूलदशेशगृहस्थो ग्रहो निजगुणैरर्धपक्का पाचको भवति निजगुणैरित्यस्यार्थस्त्वारोहावरोह उच्चनीचकष्टादिभिरित्यर्थः । त्रिकोणगो नवमपञ्चमस्थानगत्र्यंशस्य अस्ते सप्तमस्ते नगांशस्य सप्तमांशस्य चतुरस्रश्चतुर्थाष्टमस्थानगोऽग्रेश्चतुर्थांशस्य पक्का पाचको भवति लग्नस्याप्येवम् । एकभे द्विबहुषु सत्सु बली एक एव ग्रहःपाचयति न सर्वे,अत्रापि दशाक्रमबलं ज्ञेयम् । अंशादौ रूपं कृत्वा ततः प्रथममेकगृहस्थितस्य, ततस्त्रिकोणस्थग्रहस्य, ततः अस्तगतस्य, ततश्चतुरस्रगतस्य ग्रहस्य भागाः स्थाप्याः । ततः समच्छिदीकृत्य छेदगमं च कृत्वा पृथक् तेषामंशानां योगः कार्यः ग्रहदशा पृथग्लवैर्गुण्या अंशयोगेन भाज्याः अन्तर्दशाः स्युः ॥ ३३ ॥

भाषा--मूलदशापति अर्थात् महादशापति जिस राशिमें होय उसी राशिमें जो ग्रह होय वह दशापतिके संबंधसे दशापतिके अर्धफलका पाचक होता है दशापतिसे ५।९ स्थानमेंका रहणेवाला ग्रह दशापतिके तृतीयांश कालका पाचक होता है और दशापतिसे सप्तम (७) स्थानमेंका ग्रह दशापतिके सप्तमांशका पाचक होता है और दशापतिसे ४।८ स्थानमेंका ग्रह दशापतिके चतुर्थांश कालका पाचक होता है, सर्वत्र ग्रह आरोहावरोह उच्चनीचादि पूर्वोक्त स्वगुणसे शुभाशुभफलका पाचक होता है कहिये अन्य दशामें भी अपणे पाककालमें शुभाशुभ फल देता है एकराशिमें एकसे ज्यादा ग्रह होय तो उनमें जो बलिष्ठग्रह होय उसीको लेना । यहां अंशस्थानमें १ लेके उसके नीचे छेद लिखना अनन्तर समच्छेद करके छेदांक त्याग करना अंशांकसे स्वकीय स्वकीय वर्षादि दशा अलग अलग गुणके गुणाकारका अंशांकके मिलानेसे जुदा जुदा भाग देना तो अन्तर्दशा होती है ।

अन्तर्दशाक्रमः ।

प्रथम दशापतिकी अंतर्दशा अनंतर दशापतिके राशिमें रहनेवाले ग्रहका अन्तर, फिर दशापतिसे ९।५स्थानमें रहनेवालेका अन्तर, फिर सप्तमस्थानके

ग्रहका अंतर, अनन्तर ४ । ८ स्थानके ग्रहका अंतर, कदाचित् पूर्वोक्त स्थानोंमें दो तीन ग्रह होय तो बलके वशसे क्रम जानना । जो दशाक्रमके विषे बल है वही अन्तर्दशामें भी बल जानना ।

समच्छेद करनेकी रीति ।

जिन संख्याओंका समच्छेद करना होय उनको बराबरसे रखकर एकके हरसे दूसरेके हर अंशको गुण देना और दूसरेके हरसे और सबके हर अंशको गुणना ऐसा परस्पर गुणनेसे समानच्छेद होता है ।

उदाहरण—जैसे लग्नदशामें अन्तर करना है. ल. [illegible] शु. [illegible] श. [illegible] सू. [illegible] चं. [illegible] इनको समच्छेद करके २५२ । ८४ । ८४ । ३६ । ६३ अं.
२५२।२५२।२५२।२५२।२५२ ह.

इन अंशोंकी मिलान ५१९ इसको ३ से भागके १७३ अंशोंमें ३ से भाग देनेसे ८४।२८।२८।१२।२१ इसी प्रकार जहां अधिक अंक होय उसको अपवर्तन देके सूक्ष्म अंक करलेना जो काम उस अंकसे होता था वह काम इस अंकसे हो जायगा ॥ ३३ ॥

उदाहरण—यहां सूर्यबल अधिक है इसवास्ते मिश्रायुमें प्रथम सूर्यदशा १३।७।२७।१३।२८ अब सूर्यदशामें अन्तर्दशा विचार, यहां कुण्डलीमें सूर्यके साथ कोई ग्रह नहीं सूर्यसे त्रिकोणमें मङ्गल है सो [illegible] पाचक है और सूर्यसे सप्तममें लग्न है सो [illegible] पाचक, तब सूर्यदशामें मंगल और लग्न पाचक है सूर्य [illegible] मं. [illegible] ल. [illegible] समच्छेद करके सू. [illegible] मं. [illegible] ल. [illegible] इसके छेद त्याग करके सू. २१ मं. ७ ल. ३ यह अंशांक भया । यहां सूर्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इसको सूर्यके अंश २१ से गुणके २८६।१०।१।४२।४८ इसको अंशांककी मिलान ३१ से भागके ९।३।१।१।२२ यह सूर्यमें सूर्यकी दशा, सूर्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इसको मंगलके अंश ७ से गुणके ९५।७।१०।३४।१६ इसको अंशांककी मिलान ३१ से भागके ३।१।०।२०।२८ यह सूर्यदशामें मंग-

लकी अंतर्दशा, सूर्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इसको लग्नके अंश ३ से गुणके ४०।११।२१।४०।२४ इसको अंशांककी मिलान ३१से भागके १।३।२५।५१।३८ यह सूर्यदशामें लग्नकी अन्तर्दशाका यह तीनों अन्तर्दशाका योग १३।७।२७।१३।२८ यह सूर्यकी मूलदशा इसी रीतिसे लग्नादिदशामें अन्तर्दशा करना ॥ ३३ ॥

अंशच्छेदचक्रम् ।

मू.	म	ल.	ल	शु	श	मू	च	च	बृ	मू	म	म	मू	श	बु.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	७	१	३	३	७	४	१	३	४	४	१	३	७	४

शु.	ल.	श.	म	बृ	बृ	च	बु.	मू	श	ल.	शु.	च	बृ.	बु.	बृ	ल.	श
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	३	७	४	१	३	७	४	१	३	३	७	४	१	७	४	४

समच्छेदचक्रम् ।

सू	म	ल	ल	शु	श	मू	च	च	बृ	मू	म	म.	सू	श.	बु.

सूर्यदशामे अन्तरदशा.				लग्नदशामें अन्तरदशा						चन्द्रदशामें अतर्दशा					भौममें अतरदशा				
सू.	म	ल.	यो.	ल.	शु	श.	पू.	च	यो.	च	बृ.	पू.	म.	ये.	म.	सू	शु.	बु.	यो.
९	३	१	१३	३	१	१	०	०	७	४	१	१	१	९	१	०	०	०	२
३	१	३	७	५	१	१	५	१०	०	११	७	२	२	१	२	४	२	३	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	३	२१	१७

चन्द्रदशामें अंतरदशा						गुरुदशामें अन्तरदशा					शनिदशामें अंतरदशा						बुधदशामें अंतरदशा				
र	रा.	श.	म.	बृ	यो	बु	के	शु.	सू.	चं	रा	[illegible]	श.	ध.	बृ	यो	बु	बृ.	[illegible]	श.	यो
६	२	२	०	१	१३	४	१	०	१	८	७	२	२	१	१	१६	३	०	०	०	६
१	१	१	११	८	११	१०	७	८	२	९	७	६	६	१	१०	८	१०	६	११	११	४
९	१४	१	१७	८	६	२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इदानीं सूक्ष्मफलज्ञानार्थं विदशादिसाधनमाह.

इत्याभ्यो विदशास्ततोऽप्युपदशास्ताभ्यश्च सूक्ष्मं फलं
पञ्चांशोनदिनद्वयं तु कलयेत्यायुः कृतं दृश्यते ॥
पक्षैः खेटलवान्तरेण च भवेन्मासान्तरं चायुषः
प्रोक्तं यैस्तु दशादिलग्नफलं तेभ्योऽतिदृग्भ्यो नमः ॥ ३४ ॥

अन्वयः—इत्यनया रीत्या आभ्यो अंतर्दशाभ्यो विदशाः साध्याः परं-त्वत्र दशास्थानेऽन्तर्दशा स्थाप्याः तत उपदशा साध्या विदशा दशा प्रकल्प्य ताभ्यो दशान्तर्दशाविदशोपदशाभ्योऽतिसूक्ष्मं फलं वदेत् गणक इति । अनया रीत्या कृतमेवायुः कलया एककलया पंचांशोनदिनद्वयमायुर्दृश्यते । एक-कलातुल्येन ग्रहान्तरेणैव भवति यदि नवांशकलाभि २०० रेकं वर्षं तदैक-कलया किमितयनेनायुप एकदिनमष्टचत्वारिंशद्घटिका चान्तरं पतति ग्रह-संराप्यभट्टादिपक्षैः ग्रहाणामंशाद्यमन्तरं भवति तेनायुषा मासाद्यमन्तरं भवति । अपि च जन्मकालस्य पलमात्रान्तरे लग्नस्य कलाद्यन्तरपान्तरं स्यात्तेन दशाविभागे आयुर्दायेऽप्यन्तरं स्यात् । एवं यैराचार्यैर्दशादिलग्नफलं दशाप्रवेशे लग्नफलमुक्तं तेभ्योऽतिदृग्भ्यो नम इति वक्रोक्तिः ॥ ३४ ॥

भाषा–जिस प्रकार दशासे अंतर्दशा किया है उसी रीतिसे अन्तर्दशासे विदशा करना वहां अन्तर्दशाको दशा कल्पना करना और अन्तर्दशाप-तिको दशापति कल्पना करना, अनन्तर पूर्वश्लोकमें कथित रीति प्रमाण पञ्चकांशको समच्छेदादि विधि करके विदशा लाना, तैसे ही विदशाको दशा कल्पना करना और विदशापतिको दशापति कल्पना करके विदशामें

उपदशा ल्यावना । यही रीतिसे दशामें अन्तर्दशापति अपने गुण प्रमाण फल देते हैं और अन्तर्दशामें विदशापति अपने गुणप्रमाण फल देते हैं और विदशामें उपदशापति अपने गुण प्रमाण फल देते हैं ऐसे उपदशासूक्ष्मकालिक फल जानना ।

यहां १ कलाका अंशायुर्दाय लानेकी रीति प्रमाण आयुर्दाय किया तो १ दिन ४८ घटी आया ऐसा दीखता है । ब्रह्म सौर आर्यभट्टादि पक्षसे ग्रहका भागादि अन्तर आता है इसवास्ते आयुर्दायमें मासादि अन्तर आवेगा।

जब जन्मकालमें पलमात्र अन्तर आता है तब लग्नमें ६ कलाका अन्तर आता है और ६ कलासे आयुर्दायमें १० दिनका अन्तर आवेगा। ऐसा अन्तर देखकर भी जो ग्रह दशा प्रवेशादि लग्नफल कथित किया है उस दूरदर्शीको दण्डवत् है ॥ ३४ ॥

सूर्यमहादशांतर्गतसूर्यांतर्दशामध्ये विदशाच				सूर्यमहादशांतर्गतमंगलांतर्दशा मध्ये विदशाचक्रम्.					सूर्यमहादशांतर्गतलग्नांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					
सू	म	बु.	थो	म	सू	गु	शु	थो	ल	शु.	श	सु	च	या
६	२	०	९	१	०	०	०	३	०	०	०	०	०	१
३	१	१०	३	९	७	३	५	१	७	२	२	१	१	३
६	२	२२	१	१३	४	१	१०	०	२१	१७	१७	३	२७	२६
२९	९	२१	१	१३	२४	२२	५८	१०	३	१	१	०	५५	२१
२७	११	२६	२२	२६	३८	२७	२९	२८	१४	५	५	२८	५८	३८

लग्नमहादशांतर्गतलग्नांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम.						लग्नमहादशांतर्गतशुक्रांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम.						लग्नमहादशांतर्गतशनैश्चरांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम.					
ल.	शु.	श.	सू.	च.	यो	शु	ल	श	म.	बृ.	या.	श	ल.	शु	च	सू	या
१	०	०	०	०	३	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	१
७	६	६	२	४	४	६	२	२	०	१	१	६	२	२	१	१	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	११	८	२	२	१७	१७	१९
											१	४६	२५	५५	११	११	१
											१	४५	३२	३९	४४	४४	४७

भौममहादशांतर्गत-बुधांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					शुक्रमहादशांतर्गत-शुक्रांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.						शुक्रमहादशांतर्गत-लग्नांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					
बु.	बृ.	ल.	श.	यो.	शु.	ल.	श.	म.	बृ.	यो	ल.	शु.	श.	सू.	च	यो.
०	०	०	०	०	३	१	१	०	०	६	१	०	०	०	०	२
२	०	०	०	३	३	१	१	५	९	९	१	४	४	१	३	३
७	९	१६	१६	२१	१२	४	४	१८	२५	५	४	११	११	२६	८	१
३७	३९	५४	५४	५	४६	१५	१५	५८	४१	५७	१५	२५	२५	१९	३३	५०
१	३५	१५	१५	५	३९	३३	३३	६	३९	३०	३३	११	११	२२	५३	१०

शुक्रमहादशांतर्गत-शनेरंतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.						शुक्रमहादशांतर्गतमंगलांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					शुक्रमहादशांतर्गत-गुर्वन्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.				
श	ल	शु	चं.	बृ.	यो.	म	सू.	शु.	बु.	यो.	बृ.	चं.	बु.	सू.	यो.
१	०	०	०	०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
०	४	४	१	३	३	६	२	०	१	११	११	३	१	२	८
१४	४	४	३	३	१	२१	७	२८	२०	१७	२२	२७	२०	२८	८
४५	५५	५५	४१	४१	५०	३५	११	४७	२३	५९	४७	३५	२३	११	५९
४३	१५	१५	२७	२७	१०	४८	५६	५८	५७	३२	३८	४३	२७	५४	२२

गुरुमहादशांतर्गत गुर्वन्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्					गुरुमहादशांतर्गत-चन्द्रांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					गुरुमहादशांतर्गत-बुधान्तर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.					
बृ.	च.	बु.	सू.	यो.	चं.	बृ.	सू.	मं.	यो.	बु.	बृ	ल.	श.	यो.	
२	०	०	०	४	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	व.
१०	११	४	८	१०	१०	३	२	२	७	५	०	१	१	८	मा.
३	११	२६	१५	२७	२१	१७	२०	२०	१९	३	२१	८	८	१२	दि.
४९	१६	१५	५७	१९	१९	६	१९	१९	६	४०	५७	२५	२५	२८	घ.
३८	३३	३९	२४	१४	५२	३७	५८	५८	२५	४९	१५	१२	१२	२८	प.

बुधमहादशांतर्गतशन्यंतर्दशामध्ये विदशा ।

श.	ल.	शु.	चं.	बृ.	यो.
०	०	०	०	०	०
९	१	१	१	१	११
१०	२३	२३	१०	१०	१८
५६	३९	३९	११	११	२०
१७	२६	२६	३३	३३	१९

इति विदशा संपूर्ण ।

जिस प्रकारसे विदशा करी है उसी प्रकार उपदशा करना, किंचित् उपदशा आगे कहते हैं ।

उपदशा चक्रम् ।

मु. म. द. मु. र्तगत् विदशामें उपदशा चक्रम्			
मु	म	ल	पा
४	१	०	६
२	४	७	३
२८	२९	८	६
३६	३१	२२	२१
५६	६६	१६	२७

मु. म. द. सूर्यंत मंगल विद उपदशा चक्रम्.				
म	मु	शु	बु	यो
१	०	०	०	२
२	४	२	३	१
१५	२५	२	१८	२
४४	१४	२४	२६	९
१६	५२	५४	५	५१

सू. म. दशा० लग्नांत० मध्ये विदशामें उपदशा चक्रम्					
ल	श.	श	मु	च	यो
०	०	०	०	०	०
९	१	१	०	१	१०
६	२२	२२	२२	९	२२
३१	१०	१०	०१	७	२१
१३	२४	२४	३६	४२	२६

इसी प्रकारसे उपदशा सब करना, यहां ग्रन्थके बढ़नेके भयसे तीन ही लिखा ।

जगदीशेन रचिते केशवीग्रन्थटिप्पणे ॥
दशाधिकारः पूर्णोऽयं तद्भाषार्थप्रकाशकः ॥ ७ ॥

इति दशाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

अथ दशाकलाध्यायः ॥ ८ ॥

दशाप्रवेशकालसावनाहर्गणसाधनम् ।

शाकोऽब्दा जनिमध्यमार्कभयुतं मासादि तद्युग्दशा-
ऽब्दाद्यं तत्र शके सभादितरणिर्मध्यो दशादौ भवेत् ॥
षष्ठीभूतदशा पृथक् त्रिकुहता खांकाष्टहृत्तद्युतो
सा स्यात्सावनिकादशाऽब्दपलयुक्तद्युग् जनिद्युव्रजः ॥३५॥

अन्वयः—शाकोऽब्दा जनिशाक एवाब्दा वत्सरा कल्प्याः, जनिमध्यमार्कभयुतं मासादि जन्मकालिकमध्यमार्कस्य राश्यादिकं मासादिः कल्प्यः, जन्मशके एवं प्रथमदशाप्रवेशो ज्ञेयः, द्वितीयस्तु तेन वर्षादिना युक्तं दशाब्दाद्यं कार्यम्, दशाब्दा शाकेषु योज्या अथ मासाद्ये दशामासाद्यं योज्यम् एवं तत्र शके अधस्थमासाद्यं, सभादितरणिर्मध्यमो दशादौ भवेत् एवं तृतीयादि दशादौ मध्यमो रविर्ज्ञेयः । तात्कालिकमासाद्यानयनं षष्ठीभूतदशेति दिनीकृतदशा पृथक्स्थाप्या एकत्र त्रयोदश १३ भिर्गुण्या खांकाष्ट ८९० भिर्भक्ता लब्धेन दिनाद्येन पृथक्स्था युक्ता कार्या तदा सावना दशा स्यात् । यदा दशाब्दपलयुक्ता तदा तद्युग् जनिद्युव्रज इति तया दशया युक् जनिद्युव्रजो जन्मकालिकाहर्गणः सावयवः सूर्योदयकालिकोऽहर्गणः सूर्योदयादिष्टेन घटीपलेन युक्तस्तदा सावयवः स्यादिति भावः । स एव दशाऽहर्गणः पूर्वोक्तप्रकारेण युतो वर्षादौ द्वितीयादिदशाप्रवेशकालिकोऽहर्गणो भवति । एवं तृतीयादि ज्ञेया ॥ ३५ ॥

भाषाः—जन्मकालीन शकको प्रथम दशावर्ष युक्त करना और जन्मकालिक मध्यमराश्यादि सूर्यको प्रथमदशाका मासादि राश्यादि मानके युक्त करना तो वह दशावर्षयुक्त किया भया शकमें द्वितीयदशारम्भमें मध्यम सूर्य होता है । प्रथमदशादिवसादि करके पृथक् रखके एक ठिकाने उसको १३ से गुणके ८९० से भागके जो दिवसादिफल आवेगा सो और दशावर्षतुल्य फल पृथक् रखे अंकमें युक्त करना तो वह प्रथम सावन दशा

होती है, अनंतर वह जन्मकालीन सावयव अहर्गणमें युक्त करना तो द्वितीय दशारंभका अहर्गण होता है ।

शकको दशावर्ष युक्त करनेके कालमें सर्वदशा वर्षादि रखना, प्रथमदशाके नीचे शक रखना और शकके नीचे जन्मकालीन मध्यम सूर्य रखना, अनंतर सूर्यमें प्रथम दशामासादि युक्त करके वर्षशकमें युक्त करना ॥ ३५ ॥

उदाहरण—प्रथम सूर्यदशा वर्षादि १३।७।२७।१३।२८ इसके नीचे जन्मकालीन शक १८०८ यह वर्षमें मध्यम सूर्य ०।११।११।५६ इसके प्रथम दशामासादि युक्त करके ८।८।२५।२४ और शकमें वर्ष युक्त करके १८२१ यह शकमें ८।८।२५।२४ मध्यम सूर्य रहते सूर्यदशा पूर्ण होयके लग्नदशा प्रवेश भयी। इसी रीतिसे सर्वदशा प्रवेश करना और इसी प्रकारसे विदशा और उपदशा प्रवेश करना. अथवा स्पष्ट सूर्य और संवत् युक्त करना ।

दशाप्रवेशचक्रम् ।

सू.	ल.	चं.	म.	शु.	बृ.	श.	बु.	यो.
१३	७	९	२	१३	८	१५	४	७६
७	०	१	१	११	९	८	६	४
२७	७	२४	१७	६	२०	४	९	२७
१३	१२	५४	०	५४	४३	२०	४	२५
२८	३२	१९	५२	५१	५५	५६	३२	०६
१८०८	१८२१	१८२८	१८३७	१८३२	१८५३	१८६२	१८७८	१८८५
९	८	८	१०	११	११	४	०	५
११	८	१५	१०	२७	४	२५	२१	[illegible]
११	२५	३७	३२	३३	२७	११	३२	३७
५६	२४	५६	१५	०७	५८	५५	५०	२२

अहर्गण करनेकी रीति.

प्रथम सूर्यदशा १३।७।२७।१३।२८ यह दिवसादि करके ४९१७। १३।२८ यह पृथक् १३ से गुणके ६३९२३।५५।४ इसके ८९० से भागके लब्धि दिवस ७१, शेष ७३३।५५।४ इसको ६० से गुणके ४४०३५। ५ इसको ८९० से भागके लब्ध घटिका ४९ शेष ४२५ । ४ इसको

६० से गुणके २५५०४ इसको ८९० से भाग देके लब्धि पल २८ और दशावर्षतुल्य पल १३ युक्त करके लब्ध दिवसादि ७३।४९।४१ यह पृथक् रक्खा जो दिवसादि दशा ४९१७।१३।२८ इसमें युक्त करके ४९८९।३।९ यह प्रथम सावन दशा भई जन्मकालिक अहर्गण जन्मकालीन इष्टघटीसहित ११७८।३२।१ यह सावयव अहर्गण इसके सावनदशा ४९८९।३।९ युक्त करके ६१६७।३५।१० यह बुधदशारंभ समयमें सावयव अहर्गण भया । परंतु जब यह अहर्गण ४०१६ से ज्यादा आवे तब ४०१६ से भागके शेष रहे सो अहर्गण जानना और लब्धि आवे सो पूर्वमें आया जो चक्र उसमें युक्त करना । अब यहां अहर्गण ६१६७।३५।१० यह ४०१६ से अधिक है इसको ४०१६ से भागके लब्ध १ शेष २१५१। ३५।१० यह अहर्गण भया । पूर्वोक्त चक्र ३३ लब्ध १ युक्त करके ३४ चक्र भया ॥ ३५ ॥

अहर्गणप्रयोजनमाह ।

तस्मात्सावयवाद्गणात्स्वकरणात्साध्या दशादौ खगाः
क्षेपाञ्जन्मखगान्प्रकल्प्य यदि वा साध्या दशा सावनात् ॥
ते स्पष्टाश्च तिथिश्च संक्रमवशान्मासो दशादौ ततः
पूर्वोक्तं जडकर्म चात्र तु मया तद्भापयं दर्शितम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—तस्मात्सावयवादहर्गणाद्दशादौ स्वकरणाज्जन्मकाले दशमात्क-रणाद्ग्रहाः साधितास्तेन करणेन दशाप्रवेशाऽहर्गणाद्ग्रहाः साध्याः । यदि जन्म-लग्नात्क्षेपान्प्रकल्प्य दशादौ सावयवात्सावनाऽहर्गणात्साधिता यदा जन्मका-लजनितग्रहे क्षेप्यास्तदा ते दशादौ खगा भवंति एवं ते स्पष्टा भवंति । अस्मादहर्गणादानीतोऽर्कः प्रमाणेन दशाप्रवेशसमयमुखेण स्पष्टस्तदार्कः शुद्धो येषो नान्यथा । ततो दशादौ साधिता चन्द्रार्कांशो भवेत् स्पष्टकेंद्रदे-शेवा इत्यादिना विधिः साध्या, अंशपरत्वान्मासो ज्ञेयः । शुक्लादितोऽत्र दर्शा-न्मासे मेषसंक्रांतिर्भवति स चैत्रो मासो ज्ञेय इत्यादि इत्यादयो ज्ञेयाः ।

दशामेवेशे लग्नमपि साध्यं, स्वेष्टे पूर्वैः पूर्वाचार्यैः श्रीधराद्यैः सावनीदशानयने जडकर्म महतायासेन कृतमित्यर्थः । अतो मया लाघवं दर्शितम् ॥ ३६ ॥

भाषा—पूर्वकथित सावयव अहर्गणसे जन्मकालमें जिस पक्षका ग्रह किया होय उसी पक्षसे दशारंभमें ग्रह करना अथवा सावनदशातुल्य अहर्गणसे ग्रह करके उसमें जन्मकालीन ग्रहक्षेपक कलना करके युक्त करना तो यह दशारंभमें ग्रह होते हैं, अनंतर वह स्पष्ट करना और सूर्य चन्द्रसे तिथि लाना । यह केवल पांडित्य सावनीकरण पूर्वाचार्यने महान् प्रयाससे किया इसवास्ते वह जड कर्म है, हमने तो उसकी यहां लाघवता कथन की है॥३६॥

उदाहरणः—लग्नदशारंभमें १८२१ शकमें सावयव अहर्गण २१५१। ३५।१० इससे जो मध्यम सूर्य आवे सो पूर्व सिद्ध दशारंभका कालिक मध्यमसूर्य ८।८।२५।२४ के बराबर होय तो यह अहर्गण शुद्ध है अन्यथा अशुद्ध। यह समझनेके वास्ते पूर्वोक्त रीति प्रमाण सारणीपरसे मध्यम सूर्य करते हैं:—अहर्गण २१५१ इसको ६० से भागके लब्धि ३५ और शेष ५१ यह शेष कोष्टकके नीचेका सारणीमेंका अंक १।२०।१५।२७ इसको लब्ध्यंक ३५ इसके नीचेका राशि छोडके भागादि अंक ४।२९।४६।० इसमें चक्रांकको ६ से भागके बाकी ४ इसका दूना ८ यह राश्यंक इसमें ८।२९।४६।० यह लब्धि कोष्टकफल और चक्र ३४ के नीचेका सारणीमेंका अंक १।११।७।४८।४६ और घटीकोष्टक ३५ और पलकोष्टक १० इसके नीचेका अंक ०।०।३४।३० और ०।०।० १० यह युक्त करके ८।८।२५।२३ यह मध्यम सूर्य पूर्वमध्यमसूर्यके बराबर है। अथवा दशासावनाऽहर्गण ४१८११३१९ इसमें शकोत्कल मिलाके लिया मध्यम सूर्य ७।२५।११।२७ इसको जन्मकालीन मध्यम सूर्य ०।११। ११।५६ युक्त करके ८।८।२५।२३ यह वही मध्यमसूर्य आया। इसी रीतिसे चन्द्रादि मध्यम करना।

दशासाधनाहर्गणसे मध्यम ग्रह करते वक्त उसको सारणीमें चक्रके नीचेके अंक युक्त नहीं करना, कारण उसको चक्रसंस्कृत जन्मकालीन ग्रह युक्त करना होता है। सूर्य मीनराशिके होयके जो सूर्यचन्द्रसे चैत्रमासांतकी तिथि आवे तो शकमें एक युक्त करना तो अहर्गण बराबर आवेगा।

दशारंभसमये स्पष्टसूर्यादि।

यहां पूर्वकथितप्रमाण सारणीपरसे दशारंभदिवसमें प्रातःकालीन स्पष्ट सूर्य ८।७।२७।२८। गति ६१।१७। चन्द्र ४।४।१०।२। गति ७३१।२३। इससे आई गततिथि ०।४ इसवास्ते धनका सूर्य रहते पौषकृष्णपक्ष भया।

अब दशारंभसमय लिखते हैं।

संवत् १८५६ शके १८२१ पौष कृष्ण पंचमी शुक्रवार १५ यहां अहर्गण २१५१ इस दिन सूर्योदयके अनंतर घटी ३५ पल १० इस समयमें स्पष्ट सूर्य ८।८।०।२।०।८। चन्द्र४।११।५३।२२ लग्न ३।२६।२२।१२। कहिये कर्कलग्नमें रविदशा निवृत्ति (समाप्ति) और लग्नदशा प्रवृत्ति (प्रारंभ) भई। इसी रीतिसे सर्वग्रहोंकी दशा, अंतर्दशा, विदशा, उपदशा प्रवृत्ति समयमें स्पष्ट सब ग्रह और लग्न करके दशापतिसे फलका विचार करना।

सूर्यचन्द्रसे तिथि करण नक्षत्र और योग लानेका प्रकार।

स्पष्ट चन्द्रमेंसे स्पष्ट रवि कम करके जो बाकी रहे उनका अंश करके उसको १२ से भागके जो भागाकार आवे वह गततिथि जानना और जो अंशादिक बाकी रहेगा वह भुक्त तिथि होगी। वह १२ अंशमेंसे कम करके जो बाकी रहे सो भोग्य तिथि जानना, अनंतर भुक्त तिथि और भोग्य तिथि इनकी विकला करके उसको क्रमसे ६० से गुनके जो गुणाकार आवे उसको क्रमसे रविचन्द्रस्पष्टगतिके अंतरके विकलामें भागके जो भागाकार घटिकादि आवेगा वही क्रमसे भुक्ततिथि और भोग्यतिथिकी घटी जानना।

गततिथि जो होय उसको २ से गुणके ७ से भाग देना और बाकी मात्र लेना, वह ववकरणसे तिथिके पूर्वार्धमें करण होते हैं। उसमें १ युक्त करे तो तिथिके उत्तरार्धमें करण होते हैं। अनंतर तिथिकी भुक्तभोग्यकी घटीका योग करके उसका अर्ध करना और उसमेंसे भुक्तघटी कम करना तो करणकी घटिका होती है। जो तिथिकी भुक्तघटी सुमार ३० से घटिका ऊपर होय तो तिथिकी भुक्तभोग्यघटीमेंसे भुक्तघटी कम करना तो करणकी घटिका होती है, कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्धमें शकुनी करण और कृष्णपक्षकी अमावास्याको पूर्वार्द्धमें चतुष्पद करण, उत्तरार्धमें नाग करण और शुद्धप्रतिपदाको पूर्वार्धमें किंस्तुघ्न करण यह स्थिर करण हैं, करणोंके नामः—वव १, बालव २, कौलव ३, तैतल ४, गर ५, वणिज ६, भद्रा ७ अथवा विष्टि अथवा कल्याणी नाम है ।

स्पष्ट चन्द्रकी कला करके उसको ८०० से भागके जो भागाकार आवे सो गत नक्षत्र जानना और जो बाकी कलादि रहैगा वह गत नक्षत्रके आगेका भुक्त नक्षत्र होता है। वह८०० कलामेंसे कम करके जो बाकी रहैगा वह भोग्य नक्षत्र जानना. अनंतर भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी विकला करके उसको ६० से क्रमसे गुणना, उसको क्रमसे चन्द्रस्पष्टगति विकलासे भाग देना, जो क्रमसे भागाकार आवे सो घटिकादि आवे यह क्रमसे भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी घटिका जानना ।

४ स्पष्ट सूर्य चन्द्रके योगकी कला करके उसको ८०० से भागके जो भागाकार आवे सो गत योग जानना और जो बाकी कलादि रहैगा सो भुक्त योग भया सो ८०० कलामेंसे कम करके जो बाकी रहैगा सो गत योगके आगेका भोग्य योग जानना। अनंतर भुक्त योग और भोग्य योग इनकी विकला करके उसको क्रमसे ६० से गुणना और जो अनुक्रमसे गुणाकार आवे उसको सूर्यचन्द्रके स्पष्टगतिके अंक विकलामें भाग देना, जो अनुक्रमसे भागाकार आवे वह घटिकादि आवेगे वह क्रमसे भुक्त योग और भोग्य इनकी घटिका जानना ।

उदाहरण—जन्मकालीन स्पष्ट चन्द्र ९।५।२२।३५ इसमेंसे स्पष्टरवि ०।१३।१०।४२ कम करके ९।२२।११।५३ इसके अंश२६२।११५३ इसमें अंशको १२से भागके २१ गत तिथि शेष १०।११।५३ यह भुक्त तिथि ७ शेषको १२मेंसे कम करके १।४८।७ यह भोग्य तिथि सप्तमी और भुक्त तिथिकी विकला ३६७१३ इसको ६०से गुणके२२०२७८० इसको चन्द्रगति ७३१।४३ रविगति ५८।१४ का अंतर ६७३।२९ की विकला ४०४०९ से भागके ५४ घटी ३० पल यह सप्तमीकी भुक्त घटिका भई । अनंतर भोग्य तिथिकी विकला ६४८७ को ६० से गुणके ३८९२२० स्पष्ट रविचंद्र गतिके अंतरकी विकला ४०४०९ से भागके ९ घटी ३८ पल यह सप्तमीकी भोग्य घटिका भई ।

गत तिथि ६ को २से गुणके१२ इसको ७ से भागके शेष ५ इसवास्ते सप्तमीके पूर्वार्द्धमें गरकरण और उत्तरार्धमें वणिजकरण । अब तिथिकी भुक्त घटी ५४।३० और भोग्य घटी ९।३८ युक्त करके ६४।८ इसमें भुक्त घटी ५४।३० कम करके ९।३८ यह गर करणकी घटिका भई ।

चन्द्र ९।५।२२।३५ इसकी कला १६५२२ विकला ३५ इसको८०० से भागके २० गत नक्षत्र बाकी ५२२ । ३५ यह भुक्त नक्षत्र उत्तराषाढ, बाकीके अंकको ८०० आठ सौ कलामेंसे कम करके शेष २७७ । २५ यह भोग्य नक्षत्र उत्तराषाढ भया ।

अब भुक्त नक्षत्रकी विकला ३१३५५ इसको ६० से गुणके१८८१ ३०० इसको चन्द्रगति विकला ४३९०३ इससे भागके ४२घटी ५१ पल यह उत्तराषाढ नक्षत्रकी भुक्त घटिका भई । अनंतर भोग्य नक्षत्रकी विकला १६६४५ इसको ६० से गुणके ९९८७०० इसको चन्द्र-गतिकी विकला ६३९०३ से भागके २२ घटी ४५ पल यह उत्तरा-षाढकी भोग्य घटिका भई ।

स्पष्ट सूर्य०।१३।१०।४२ चन्द्र ९।५।२२।३५ इनका योग ९।१८। ३३। १७ इसकी कला१७३१३।१७ इसको ८०० से भागके २१गत-योग बाकी ५१३।१७साध्य भुक्त योग शेष ८०० आठसौमेंसे कम करके २८६।४३ यह साध्य योग भोग्य। अब भुक्त योगकी विकला ३०७९७ इसको ६० से गुणके १८४७८२० इसको रविगति ५८।१४ चन्द्रगति ७३१।४३ इनका योग ७८९।५७इसकी विकला ४७३९७इससे भागके ३८ घटी ५९ पल यह साध्ययोगकी भुक्त घटिका भई ।

अनंतर भोग्य योगकी विकला १७२०३ इसको ६० से गुणके १०३२१८० इसको रविचन्द्रकी स्पष्टगतिकी विकला ४७३९७ इससे भागके २१ घटी ४७ पल यह साध्य योगकी भोग्य घटिका भई। इस प्रकारसे तिथि, नक्षत्र, योग और करणकी भुक्त भोग्य घटी करना।

यहां जन्मदिनमें भोग्य तिथि, नक्षत्र योग इनकी घटिका और जन्म-कालिक भुक्त नक्षत्रयोग इनकी घटिका युक्त करके जन्म समय ३२ घटिका बराबर मिलते हैं ॥ ३६ ॥

ग्रहदशायां प्रतिदिनचन्द्रफलम् ।

चन्द्रः प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृदुच्चस्वर्क्षसंस्थो दशा-
नाथो धीनवसप्तमोपचयगो दद्याच्छुभानीति च ॥
यस्मिन् भेऽत्र विधुः स जन्मनि तनुस्थायादिभावो यदा
तत्तद्वृद्धिकरोऽथ तत्क्षयकरः प्रोक्तेतरस्थानगः ॥ ३७ ॥

अन्वयः—प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृचे तदुच्चे तत्स्वांशे भवति चन्द्रस्तदा च पुनर्दशेशात्पंचमनवमसप्तमतृतीयषष्ठदशैकादशस्थानस्थचन्द्रो भवति । तदा चन्द्रः शुभानि दद्यात्। एवं शुभफलप्रदश्चन्द्रो दशायां यस्मिन् भावे वर्तते स राशिर्जन्मकाले यस्मिन् भावे वर्तते तद्भावं शुभं करोति। यदि चन्द्राशिस्तनु-भावे स्यात् तदा तनुसौख्यकरः स्यादेवं धनादिभावेऽपि। यदि कथितेतरस्था-

नगस्तदा क्षयकरो हानिकरः स्यात् । प्रोक्तेतरस्थानस्यायमर्थः—चन्द्रः प्राप्त-दशेश्वरस्य सुहृदादिस्थानादितरस्थानगः वैरिनीचादिस्थित इति ॥ ३७ ॥

भाषा–जिस ग्रहकी दशा होय उस ग्रहके मित्रगृहमें उच्चगृहमें वा स्वगृहमें होकर दशापतिसे ५।९।७।३।६।१०।११ इन स्थानमें चन्द्र होय तो शुभफल देता है । सो दशामें जिस राशिका चन्द्र होय वह राशि जन्मकालमें तनुभाव होय तो शरीरवृद्धिकारक, वह राशि धनभाव होय तो धन-वृद्धिकारक, आयभाव होय तो लाभकारक और आदि शब्दसे सहज भाव होय तो भ्रातृसुख, सुहृद्भाव होय तो मित्रसुख, सुतभाव होय तो पुत्रसुख, रिपुभाव होय तो वैरिनाशकारक, जायाभाव होय तो स्त्रीसुख, मृत्युभाव होय तो मृत्युनाशकारक, धर्मभाव होय तो धर्मभाग्यकारक, दशम भाव होय तो कर्मफलकारक, व्ययभाव होय तो व्ययनाशकारक जैसे सहजादि-भावोंका भ्रातृसुखादि फल कथन किया है तैसाही पराक्रमादि सुख भी जानना । यहां शुभसूचन कथित है, इसवास्ते और मृत्यु व्यय इन भावोंके फल विपरीत जानना । पूर्वकथित स्थानसे इतर स्थानमें कहिये दशेश्वरके शत्रुगृहमें किंवा नीचमें चन्द्र होयके दशापतिसे १।२।४।८।१२ इन स्थानोंमें होय तो भावक्षय फलकारक होता है, कहिये दशामें जिस राशिको ऐसा चन्द्र है वह राशि जन्मकालमें तनुभाव होय तो शरीरक्लेशकारक, धन-भाव होय तो धनहानिकारक, इसी प्रमाण सहजादि भावफल योजना करना । यहां विपरीत शत्रु, मित्र, व्ययभाव होय तो वह भाव शत्रु मृत्यु व्ययकारक ही होता है ॥ ३७ ॥

दशाफलदशारिष्टदशारिष्टभङ्गः ।
यद्दृश्यं खचरस्य भावगृहदृग्योगादि सर्वं फलं
याम्यं वृत्तिकृतिर्बलादिह दशायां याप यो वैरिपुः ॥
पापः पापदशा विशत्स च विपत्कर्ताप तद्भङ्गद-
स्तत्काले बलवान् खगः शुभसुहृद्दृष्टेष्टसद्वर्गगः ॥ ३८ ॥

अन्वयः–यस्य ग्रहस्य यद्द्रव्यं ताम्रं स्यादित्यादि भावफलं राशिफल दृष्टिफलं योगफलम्आदि शब्दाद्दुच्चनीचमूलत्रिकोणम्, वृत्तिकृतिर्जीविक इति सर्वं तस्य ग्रहस्य दशायां वाच्यं बलादिति सबले यथोक्तं पूर्णफलं भवति मध्ये मध्यं, हीनबले हीनं फलम् । अथो यो ग्रहो वैरियुक् शत्रुयुगित्यर्थः पापग्रहः पापदशायां विशति अर्थात्पापदशायां पापस्यांतरे याति स पापो विपत्कर्ता हानिकर्ता स्यात् । यदि कश्चिद्ग्रहो बलवान् शुभमित्रेण दृष्टेऽथवा मित्रषड्वर्गगो वा इष्टाधिकः स तद्भंगदः स्यात् ॥ ३८ ॥

भाषा–जिस ग्रहका जो ताम्रादि द्रव्य और भावफल राशिफल, शत्रु मूलत्रिकोणादि, जीविकाकर्म इत्यादि सब फल दशामें वह ग्रह देता है । बल-सदृश अधिक बली होय तो पूर्णफल, मध्यममें मध्य फल, हीनबलमें न्यून फल होता है । पापग्रहोंके दशामें शत्रुयुक्त पापग्रहका अंतर आवे तो विपत्कर्ता मरण जानना, परंतु यदि उस समय कोई शुभग्रह बली होयके देखता होय या मित्रग्रह देखता होय वा शुभ मित्रोंके गृहादि वर्गोंमें रहनेवाला ग्रह देखता होय तो भंगकर्ता होता है ॥ ३८ ॥

अथाष्टकवर्गफलमाह ।

खेटस्तस्य यदष्टवर्गजफलं पूर्णं शुभं जन्मत-
न्विन्द्वोर्वृद्धिषु च स्वभोच्चभसुहृद्भे स्वत्रिकोणेऽस्ति यः ॥
दुष्टं मध्यफलं विपर्ययगतस्थानिष्टमप्युत्कटं
शस्तं स्वल्पतरं खगस्य च वदेज्ज्ञात्वा बलं तत्त्वतः ॥ ३९ ॥

अन्वयः–जन्मनि तन्विन्द्वोर्लग्नचन्द्राभ्यामित्यर्थः । वृद्धिषु उपचयस्थानेषु ३।६।१०।११ स्वभे स्वोच्चे सुहृद्भे स्वमूलत्रिकोणेऽस्ति यो ग्रहस्तस्य यदष्टकवर्गजफलं शुभं तत्संपूर्णं दुष्टं फलं मध्यमम् । एवमनुपचयस्थानगो ग्रहः [illegible] स्यात्तथा शुभं फलं स्वल्पतरं स्यादि-
[illegible]ि सर्वग्रहस्य षड्वर्गबलं ज्ञात्वा तत्त्वतः फलं वदेत् । यथा पूर्णबले ग्रहे शुभाशुभफलं मध्ये मध्यं हीने हीनमित्यर्थः ॥ ३९ ॥

भाषा—जो ग्रह जन्मलग्न और जन्मके चन्द्रसे ३।६।१०।११ इन स्थानोंमें होकर स्वगृहमें स्वोच्चमें या स्वमूलत्रिकोणमें होता है उसका अष्टवर्गजफल शुभ जानना, अशुभफल स्वल्प जानना और पूर्वस्थानसे भिन्न स्थानोंमें अर्थात् १।२।४।५।७।८।९।१२ इन स्थानोंमें होकर शत्रुगृहमें या नीच राशिमें रहता है, उसको अष्टवर्गजफल अशुभफल पूर्ण जानना और शुभफल स्वल्प जानना। जन्मलग्नसे और जन्मराशिसे उपचयस्थानमें और शत्रुगृहमें या नीचमें जो ग्रह रहता है उसका अष्टवर्गज शुभफल मध्यम और अशुभ फल किंचित् न्यून जानना। अथवा इतर स्थानमें होके स्वगृहोच्चादिस्थित रहते अशुभ फल मध्यम और शुभफल किंचित् न्यून जानना यह अष्टवर्गजफल ग्रहोंके षड्बल प्रमाण जानना, ग्रह पूर्ण बल होय तो यथोक्त फल न्यून बल होय तो न्यून फल और अस्तंगत होय तो फल नहीं ऐसा जानना ३९

अथ कचिज्जातकफलव्यभिचारे कर्तव्यतामाह।

जीवेत्क्वापि विभङ्गरिष्टजशिशू रिष्टं विना मीयते-
ऽथाद्योऽब्दः शिशुदुस्तरोऽपि च परौ कार्येषु नो पत्रिका॥
कार्या प्रश्ननिमित्तपूर्वशकुनै रक्षन् स्वमानं धिया
होराज्ञेन सुबुद्धिना हि बहुधोदर्कश्च कालो बली॥ ४०॥

अन्वयः—क्वापि कचित्स्थले विभङ्गजो रिष्टभङ्गरहित इत्यर्थः। जीवेत्। क्वापि रिष्टं विना मीयते म्रियते इति व्यभिचारः। चाद्योऽब्दः प्रथमोऽब्दः शिशोर्दुस्तरः मसूवज्वरादिभयादित्यर्थः। तथाऽपरौ द्वितीयतृतीयाब्दौ दुस्तरौ दन्तजननं यावत् अत एषु त्रिषु वर्षेषु पत्रिका नो कार्या भङ्गादिकं विचारयित्वा वर्षत्रयमध्येऽपि पत्रिका कार्या। कैः प्रश्ननिमित्तपूर्वशकुनैः प्रश्ने निमित्तपूर्वलमैः वैद्योपश्रुतादिस्तथा शकुनैः शुभशकुनैः शुभवस्तु यदि श्रुतिदर्शनगम इत्यादिभिः शुभं ज्ञात्वा पत्रिका कार्या। किं कुर्वन्स्वमानं रक्षन् गणकेनेत्यध्याहारः। किं विशिष्टेन होराविज्ञेन पुनः सुबुद्धिना हि यस्मात् उदर्को भावी कालो बली स्यात्॥ ४०॥

भाषा—कभी कभी अरिष्ट भंग रहते बिना बालक जीता है और कभी कभी अरिष्टयोग न रहते भी मरण पाता है ऐसा जातकफलमें व्यभिचार

देखते हैं । तैसाही प्रथमवर्ष बालकको दुस्तर है और आगेको दो वर्ष इस बालकके दुस्तर हैं इसवास्ते ३ वर्षतक पत्रिका नहीं करना कारण भावी फल बहुत प्रकारका है और कालभी दुर्विज्ञेय है, बुद्धिमान् गणकने तात्कालिक लग्नबलोपश्रुत्यादि शकुनसे शुभफल जानके बुद्धिके योगसे अपनी प्रतिष्ठा रखके सर्वदा यह तीन वर्षमें और आगे भी जन्मपत्रिका करना॥ ४०॥

ग्रन्थोपसंहारः ।

नन्दिग्रामे केशवो विप्रवर्यो योऽभूद्धोराशास्त्रसङ्घं विलोक्य ॥
तेनोक्तेयं पद्धतिर्जातकीया चत्वारिंशद्वृत्तबद्धा सुबोधा ॥ ४१ ॥

अन्वयः–यः केशवो विप्रवर्यो नन्दिग्रामे आसीत् तेन होराशास्त्रसङ्घं विलोक्य होरा एव शास्त्रं होराशास्त्रं होराशास्त्रसमूहं विलोक्य जातकीया पद्धतिरुक्ता किं विशिष्टा चत्वारिंशद्वृत्तबद्धा पुनः कथंभूता सुबोधा ॥ ४१ ॥

भाषा–दक्षिणदेशप्रसिद्ध नन्दिग्राममें केशव यह नाम करके ब्राह्मणश्रेष्ठ रहता रहा उसने जातकशास्त्रसमूह देखकर उसमें सदुक्त असदुक्त भ्रांत्युक्त बहुमत अल्पमत क्या है इसका विचार करके चालीस श्लोककी सुगम ऐसी यह जातकपद्धति रचना किया ॥ ४१ ॥

ग्रन्थप्रशंसामाह ।

ये सुबोधां पठन्तीमामग्र्यां जातकपद्धतिम् ॥
होरावित्पदवीं यान्ति लोके मानं यशश्च ते ॥ ४२ ॥

अन्वयः–ये गणका इमां सुबोधां जातकपद्धतिं पठन्ति किंभूतामग्र्यां ते लोके होरावित्पदवीं यान्ति मान यशश्च लभन्ते ॥ ४२ ॥

भाषा–जो ज्योतिषी इस जातकपद्धतिको अध्ययन करेंगे वह लोकमें दैवज्ञपदवी और गौरव कीर्ति यशको प्राप्त होवेंगे ॥ ४२ ॥

जगदीशेन विदुषा नारनौलनिवासिना ।
नृगिरा केशवीं कृत्वा केशवायार्पिता मुदा ॥ ८ ॥

इति दशाफलाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥

इति केशवीजातकं समाप्तम् ।

चरांशस्पष्टसारिणी ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गुण १०
० ०	२ २०	४ ४०	७ ०	९ २०	११ ४०	१४ ०	१६ २०	१८ ४०	२१ ०	२३ २०	२५ ४०	२८ ०	३० २०	३२ ४०	हर ३
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३० गुण १०
३५ ०	३७ २०	३९ ४०	४२ ०	४४ २०	४६ ४०	४९ ०	५१ २०	५३ ४०	५६ ०	५८ २०	६० ४०	६३ ०	६५ २०	६७ ४०	७० ० हर ३
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	गुण २८
७१ ५२	७३ ४४	७५ ३६	७७ २८	७९ २०	८१ १२	८३ ४	८४ ५६	८६ ४८	८८ ४०	९० ३२	९२ २४	९४ १६	९६ ८	९८ ०	हर १५
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	गुण २८
९९ ५२	१०१ ४४	१०३ ३६	१०५ २८	१०७ २०	१०९ १२	१११ ४	११२ ५६	११४ ४८	११६ ४०	११८ ३२	१२० २४	१२२ १६	१२४ ८	१२६ ०	हर १५
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	गुण २३
१२६ ४६	१२७ ३२	१२८ १८	१२९ ४	१२९ ५०	१३० ३६	१३१ २२	१३२ ८	१३२ ५४	१३३ ४०	१३४ २६	१३५ १२	१३५ ५८	१३६ ४४	१३७ ३०	हर ३०
७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	गुण २३
१३८ १६	१३९ २	१३९ ४८	१४० ३४	१४१ २०	१४२ ६	१४२ ५२	१४३ ३८	१४४ २४	१४५ १०	१४५ ५६	१४६ ४२	१४७ २८	१४८ १४	१४९ ०	हर ३०

चरसारिणीप्रवेशपलभा ।

मंदस्पष्ट सूर्यको अयनांश युक्त करके उसका भुज करके भुजका भाग करना यहां सारणीमें ३० अंशके अंतरसे ३ ठिकाने ९० अंशकोष्ठक लिखके यह कोष्ठकके नीचे प्रत्येक अंशका फल विकलादि लिखा है उसमेंसे जो अभीष्ट अंश होय उसके नीचेका फल लेके इष्टांशके नीचे जो कला विकल होय उसको अंशकोष्ठकके सामने दहने तरफ जो गुण लिखा है उसमें गुणके जो गुणाकार आवे उसको गुणके नीचे जो हर लिखा है उससे भागके जो फल प्रतिकलात्मक आवे वह लेके पूर्वफलमें युक्त करना तो चर होता है वह चरसायनसूर्य मेषादि ६ राशिको होय तो ऋण और तुलादि ६ राशिको होय तो धन जानना ।

उदाहरण—जन्मकालिक मन्दस्पष्ट रवि ०।१३।१२।३ इसमें अयनांश २२।४४।३ यह युक्त करके १।५।५६।६ यह सायन रवि, इसका भुज १।५।५६।६ इसके अंश ३५।५६।६ यहां ३५ अंश हैं इसवास्ते ३५ अंशकोष्ठकका नीचेका विकलादिफल ७९।२० इसको अंशके नीचे कला ५६ और विकला ६ है इसको अंशकोष्ठकके सामने गुण २८ है इससे गुनके १५७०।४८ इसको गुणके नीचे हर १५ इससे भागके १०४ प्रति कलायुक्त करके ८३।४ यह सायन सूर्य वृषराशिका है इसवास्ते ऋण जानना ।

चरसारिणीप्रवेशपलभा ।

मंदस्पष्ट सूर्यको अयनांश युक्त करके उसका भुज करके भुजका भाग करना यहां सारणीमें ३० अंशके अंतरसे ३ ठिकाने ९० अंशकोष्ठक लिखके यह कोष्ठकके नीचे प्रत्येक अंशका फल विकलादि लिखा है उसमेंसे जो अभीष्ट अंश होय उसके नीचेका फल लेके इष्टांशके नीचे जो कला विकल होय उसको अंशकोष्ठकके सामने दहने तरफ जो गुण लिखा है उसमें गुणके जो गुणाकार आवे उसको गुणके नीचे जो हर लिखा है उससे भागके जो फल प्रतिकलात्मक आवे वह लेके पूर्वफलमें युक्त करना तो चर होता है वह चरसायनसूर्य मेषादि ६ राशिको होय तो ऋण और तुलादि ६ राशिको होय तो धन जानना ।

उदाहरण—जन्मकालिक मन्दस्पष्ट रवि ०।१३।१२।३ इसमें अयनांश २२।४४।३ यह युक्त करके १।५।५६।६ यह सायन रवि, इसका भुज १।५।५६।६ इसके अंश ३५।५६।६ यहां ३५ अंश हैं इसवास्ते ३५, अंशकोष्ठकका नीचेका विकलादिफल ७९।२० इसको अंशके नीचे कला ५६ और विकला ६ है इसको अंशकोष्ठकके सामने गुण २८ है इससे गुनके १५७०।४८ इसको गुणके नीचे हर १५ इससे भागके १०४ प्रतिकलायुक्त करके ८३।४ यह सायन सूर्य वृषराशिका है इसवास्ते ऋण जानना

दशमभावमारिणीचक्र ।

भा	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
२९	८ ७	१३ २३	१८ ४६	२३ ५२	२८ ३७	३३ १५	३८ ७	४३ २३	४८ ४६	५३ ५२	५८ ३७	३ १५
२८	७ ५७	१३ १२	१८ ३५	२३ ४२	२८ २७	३३ ५	३७ ५७	४३ १२	४८ ३५	५३ ४२	५८ २७	३ ५
२७	७ ४७	१३ २	१८ २५	२३ ३२	२८ १८	३२ ५६	३७ ४७	४३ २	४८ २५	५३ ३२	५८ १८	२ ५६
२६	७ ३७	१२ ५१	१८ १४	२३ २२	२८ ९	३२ ४७	३७ ३७	४२ ५१	४८ १४	५३ २२	५८ ९	२ ४७
२५	७ २७	१२ ४०	१८ ३	२३ १२	२८ ०	३२ ३८	३७ २७	४२ ४०	४८ ३	५३ १२	५८ ०	२ ३८
२४	७ १८	१२ २९	१७ ५२	२३ २	२७ ५०	३२ २८	३७ १७	४२ २९	४७ ५२	५३ २	५७ ५०	२ २८
२३	७ ८	१२ १९	१७ ४२	२२ ५३	२७ ४१	३२ १९	३७ ८	४२ १९	४७ ४२	५२ ५३	५७ ४१	२ १९
२२	६ ५८	१२ ८	१७ ३१	२२ ४३	२७ ३३	३२ १०	३६ ५८	४२ ८	४७ ३१	५२ ४३	५७ ३२	२ १०
२१	६ ४८	११ ५७	१७ २०	२२ ३३	२७ २२	३२ ०	३६ ४८	४१ ५७	४७ २०	५२ ३३	५७ २२	२ ०
२०	६ ३८	११ ४६	१७ ९	२२ २३	२७ १३	३१ ५१	३६ ३८	४१ ४६	४७ ९	५२ २३	५७ १३	१ ५१
१९	६ २८	११ ३५	१६ ५८	२२ १३	२७ ४	३१ ४२	३६ २८	४१ ३५	४६ ५८	५२ १३	५७ ३	१ ४१
१८	६ १८	११ २५	१६ ४८	२२ ३	२६ ५५	३१ ३३	३६ १८	४१ २५	४६ ४८	५२ ३	५६ ५५	१ ३३
१७	६ ८	११ १४	१६ ३७	२१ ५३	२६ ४५	३१ २३	३६ ८	४१ १४	४६ ३७	५१ ५३	५६ ४५	१ २३
१६	५ ५८	११ ३	१६ २६	२१ ४३	२६ ३६	३१ १४	३५ ५८	४१ ३	४६ २६	५१ ४३	५६ ३६	१ १८
१५	५ ४८	१० ५२	१६ १५	२१ ३३	२६ २७	३१ ५	३५ ४८	४० ५२	४६ १५	५१ ४२	५६ २७	१ ५
१४	५ ३८	१० ४२	१६ ५	२१ २३	२६ १८	३० ५६	३५ ३८	४० ४२	४६ ५	५१ ३३	५६ १८	० ५६
१३	५ २८	१० ३१	१५ ५४	२१ १३	२६ ८	३० ४६	३५ २८	४० ३१	४५ ५४	५१ १३	५६ ८	० ४६
१२	५ १८	१० २०	१५ ४३	२१ ३	२५ ५९	३० ३७	३५ १८	४० २०	४५ ४३	५१ ३	५५ ५९	० ३७
११	५ ८	१० ९	१५ ३२	२० ५३	२५ ५०	३० २८	३५ ८	४० ९	४५ ३३	५० ५३	५५ ५०	० २८
१०	४ ५८	९ ५७	१५ २२	२० ४३	२५ ४१	३० १९	३४ ५८	३९ ५९	४५ २२	५० ४३	५५ ४१	० १९
९	४ ४८	९ ४७	१५ ११	२० ३३	२५ ३१	३० ९	३४ ४८	३९ ४८	४५ ११	५० ३३	५५ ३१	० ९
८	४ ३८	९ ३७	१५ ०	२० २३	२५ २२	३० ०	३४ ३८	३९ ३७	४५ ०	५० २३	५५ २२	० ०
७	४ २९	९ २७	१४ ४९	२० १२	२५ १२	२९ ५१	३४ २९	३९ २७	४४ ४९	५० १२	५५ १२	५९ ५१
६	४ १९	९ १७	१४ ३८	२० १	२५ २	२९ ४१	३४ १९	३९ १७	४४ ३८	५० २	५५ २	५९ ४१
५	४ १०	९ ७	१४ २८	१९ ५२	२४ ५२	२९ ३२	३४ १०	३९ ७	४४ २८	४९ ५१	५४ ५२	५९ ३२
४	४ १	८ ५७	१४ १७	१९ ४०	२४ ४२	२९ २३	३४ १	३८ ५७	४४ १७	४९ ४०	५४ ४२	५९ २३
३	३ ५२	८ ४७	१४ ६	१९ २९	२४ ३२	२९ १४	३३ ५२	३८ ४७	४४ ६	४९ २९	५४ ३२	५९ १४
२	३ ४२	८ ३७	१३								५४ २२	५९ ४
१	३ ३३	८ २७	१३								५४ १२	५८ ५५
०	३ २४	८ १७	१३								५४ २	५८ ४६

लग्नसारणीप्रवेश अयनांशाः २२.

सारणीमें दहने तरफ मेषादि मीनतक १२ राशि लिखी हैं और ऊपरके तरफ ३० अंशकोष्ठक लिखा है, उसमेंसे तत्कालस्पष्टसूर्य जिस राशिका होय उस राशिके सामने सूर्यके इष्टांशकोष्ठकके नीचे अंककलादि फल लेके उसको इष्ट घटी पल युक्त करना वह युक्त करनेके अनंतर घटी६० से ज्यादा होय तो ६० में कम करना । अनंतर जो घटी पल बाकी रहे वह कला विकला भया अनंतर तन्मित कला विकला सारणीमें जिस अंशकोष्ठकके नीचे होंगे वह अंश और वह कला विकलाके दहने तरफ जो राशि होय सो लग्नकी राशि जानना, यह स्थूल मान है परंतु स्वस्वदेशीय देशांतर रेखा धन ऋणादि देखके सारणीसे लग्न करना ।

उदाहरण—तात्कालिक सूर्य ०।११।११।५६ यहां सूर्य मेषराशिका है इसवास्ते मेषराशिके ११ अंश कोष्ठकका फल ४।१३ इसके इष्टघटी ३२ पल १ युक्त करके ३६।१४ यहां ३६।१ कला विकला यह तुलाराशिके १० अंशकोष्ठकके नीचे लिखा है इसवास्ते लग्न ६।१०।३६।१ यह स्थूल मानका लग्न जानना ।

दशमभावसारणीप्रवेश ।

केशवीमें कथित प्रमाण नतसाधनकरके सारणीमें बायें तरफ मेषादि राशिसे मीनतक १२ राशि लिखी हैं और ऊपरके तरफ ३० अंशकोष्ठक लिखे हैं उसमेंसे स्पष्ट सूर्य जिस राशिका होय उस राशिके सामने सूर्यके इष्टांशकोष्ठकके नीचेका कलादि फल लेके उसको नतघटी और पल पश्चिम होय तो युक्त करना और यह घटी ६० से अधिक होय तो उसमेंसे ६० कम करना और नतघटी और पल पूर्व होय तो लिया जो अंक फल उसमेंसे कमती करना और यह अंकफलसे अधिक होय तो अंकफलके कलामें ६० युक्त करके उसमें पूर्वनतघटी पल कमती करना अनंतर जो घटी पल बाकी रहे वह कला और विकला भई अनंतर तन्मित कला विकला सारणीमें जिस अंशकोष्ठकके नीचे होय वह अंश और कला

विकलाके बायें तरफ जो राशि होय वह दशम भावकी राशि जानना यह सर्वदेशोंका मध्यम मान है ।

उदाहरण—जन्मकालिक स्पष्ट रवि ०।१३।१०।४२ यह सूर्य मेष राशिका है इसवास्ते मेषराशिके १३ अंशकोष्ठकका फल ५।२८ इसमें जन्मकालिक पाश्चिम नतघटी १५ फल ४० युक्त करके २१।८ यहां कला विकला २१।३ यह कर्क राशिके १२ अंशके नीचे लिखा है इसवास्ते दशम यह ३।१२।२१।८ भया इसमें ६ राशि युक्त करी तो ९।१२। २१।८ यह चतुर्थ भाव भया ।

अष्टोत्तरीमहादशा ।

आर्द्रासे प्रारंभ करके मृगशिरतक २८ नक्षत्र और सूर्य, चंद्र, भौम, बुध, शनि, गुरु, राहु, शुक्र यह ८ ग्रहोंका कोष्ठक पृथक् पृथक् किया है उसमें महादशाकी वर्षसंख्या पापग्रहनक्षत्र ४ और शुभग्रहनक्षत्र ३ जानना दशाकी वर्षसंख्या नक्षत्रोंके विभागसे सो यह सूर्य ४ नक्षत्रोंका ६ वर्ष, इसवास्ते १नक्षत्रका १ वर्ष ६महीने इस प्रकारका जानना और जन्मकालिक जो दशा सो प्रथम मानके जन्मनक्षत्रकी जन्मकालतक भुक्त घटिका जो होय उसको नक्षत्रके वर्षसे गुणके गुणाकारको जन्मनक्षत्रका भुक्त भोग्य युक्त करके सर्वघटीसे भागके जो भागाकार आवे सो वर्ष और शेष रहै सो १२ से गुणके पूर्ववत् भागके भागाकार आवे सो मास और शेष रहै सो ३० से गुणके पूर्वप्रमाण भागके भागाकार आवे सो दिवस और शेष रहै सो ६० से गुणके पूर्ववत् भागके भागाकार आवे सो घटी जानना अनंतर आया जो वर्षादि भुक्तकाल और जन्मनक्षत्रके पूर्वके दशापतिके गतनक्षत्र होय तो उसकाभी भुक्तकालदशापतिके दशावर्षमेंसे कम करके शेष रहै सो वर्षादि भोग्यदशा है ऐसा जानना ।

अंतर्दशा बनानेका क्रम ।

जिस ग्रहके दशामें अन्य ग्रहकी अंतर्दशा करना है उन दोनोंके परस्पर दशावर्षोंके गुणाकारको ९ से भागके जो भागाकार आवे सो मास जानना

और शेष रहे उसको पूर्व लिखे प्रमाण उत्तरोत्तर गुणके ९ से भाग देना दिन घटिका आवी है इसी रीतिसे महादशामेंकी अंतर्दशा जानना और १० का भाग विंशोत्तरीका लेना ।

अष्टोत्तरीमहादशाचक्र ।

सूर्यकी महादशा वर्ष ६ अंतर्दशा आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा.									चंद्रकी महादशा वर्ष १५ अंतर्दशा मघा, पूर्वाफल्गुनी, उत्तराफल्गुनी								
सू.	चं	मं	बु	श	बृ	रा	शु	यो	चं	मं.	बु.	श.	बृ.	रा.	शु.	सू.	यो.
०	०	०	०	०	१	०	१	६	२	१	२	१	२	१	२	०	१५
०	१०	५	११	६	०	८	२	०	१	१	४	५	७	८	११	१०	०
०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौमकी महादशा वर्ष ८ अंतर्दशा हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा.									बुधकी महादशा वर्ष १७ अंतर्दशा अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल.								
मं.	बु.	श	बृ	रा.	शु	सू.	चं.	यो	बु.	श.	बृ	रा.	शु	सू.	चं	मं	यो.
०	१	०	१	१	१	०	१	८	२	१	२	१	३	०	२	१	१७
७	३	८	४	१०	६	५	१	०	८	६	११	१०	३	११	४	३	०
३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	०	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३	०
२०	२०	४०	४०	०	०	०	०	०	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	०

शनिकी महादशा वर्ष १० अंतर्दशा पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित्, श्रवण.									गुरुकी महादशा वर्ष १८ अंतर्दशा धनिष्ठा, शततारका, पूर्वाभाद्रपदा.								
श	बृ.	रा.	शु.	सू.	चं.	मं	बु	यो	बृ	रा	शु	सू	चं	मं	बु	श	यो.
०	१	१	१	०	२	०	१	१०	३	२	३	१	२	१	२	१	१९
११	९																
३																	
२०	२																

राहुकी महादशा वर्ष १२ अंतर्देशा उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी.									शुक्रकी महादशा वर्ष २१ अंतर्देशा कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर.								
रा.	शु.	सू.	चं.	मं.	बु	श	बृ	यो.	शु	सू	च.	मं.	बु.	श.	बृ	रा.	यो.
१	२	०	१	०	१	१	२	१२	४	१	२	१	३	१	३	२	२१
४	६	८	८	१०	१०	१	१	०	१	२	११	६	३	११	८	४	०
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

इत्यष्टोत्तरीदशान्तर्दशाचक्रम् ।

विंशोत्तरीमहादशाकरणम् ।

जन्मनक्षत्र जो होय उसकी संख्यामें २ कम करके ९ से भाग लेना शेष १।२।३।४।५।६।७।८।० तक रहेगा तब क्रमसे सूर्य, चंद्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र यह दशापति जानना और उनकी क्रमसे ६-१०-७-१८-१६-१९-१७-७-२० यह दशाकी वर्षसंख्या जानना । जन्मनक्षत्रकी जन्मकालतक जो भुक्त घटी होय उसको अष्टोत्तरीमें कथित रीतिसे दशापतिके वर्षसंख्यासे गुणके और नक्षत्रका भुक्त भोग्य युक्त करके सर्वघटीसे भागके भागाकार वर्ष मास दिन घटी पल आवेगा । सो दशापतिके वर्षसंख्यामेंसे कम करके शेष रहे सो वर्षादिकसंख्या भोग्य है ऐसा जानना । इसमें अन्तर्दशा बतानेका प्रकार अष्टोत्तरीमें कहा है सो जानना । कृत्तिकासे भरणीतक २७ नक्षत्र और दशा अन्तर्देशा और प्रत्यन्तर्दशाके अधिपतिके नाम और उनकी वर्षादि संख्या इनके जुदे जुदे कोष्टक आगे लिखे हैं ।

उदाहरण—जन्मनक्षत्र यहां उत्तराषाढा है इसकी संख्या २१ इसमें २ कम करके शेष १९ इसमें ९ से भागके शेष १ इसप्रकारसे सूर्यकी दशा भई । अब पूर्वाषाढ नक्षत्रकी घटी ४७।३६ इसको ६० में कम करके १२।२४ यह इसमें इष्टघटी ३२, पल १ युक्त करके ४४।२५ यह भुक्त घटी भई और अपना नक्षत्र उत्तराषाढ नक्षत्रकी घटी ५३ । ३३ इसमें १२ । २४ यह

युक्त करके ६५।५७ यह भोग्य भया। अब भुक्त और भोग्यकी पल क्रमसे २६६५।३९५७ भुक्त पलको सूर्यका वर्ष ६ इससे गुणके १५९९० इसमें भोग्यकी पलसे भागके लब्धि ४ वर्ष, शेष १६२ इसको १२ से गुणके १९४४ यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके लब्धि ० मास, शेष १९४४ इसको ३० से गुणके ५८३२० यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके लब्धि दिन१४, शेष २८२२ इसको ६०से गुणके १७५३२० इसमें भोग्यपलसे भागके लब्धि घटी ४४, शेष १२१२ इसको ६० से गुणके ७२७२० इसमें भोग्यपलसे भागके लब्धिपल १८, एवं वर्षादि रविदशा ४।०।१४। ४४।१८ भुक्त भई। अब इसको सूर्यका वर्ष ६ में कम किया तो १।११। १५।१५।४२ यह भोग्यदशा भई इसी प्रकारसे विंशोत्तरी दशा करना।

टिप्पण–जिस दिन जन्म होय उस दिन अथवा वर्षप्रवेश होय उस दिन जो नक्षत्रकी घटी पल अभीष्ट घटी पलसे कमती होय तो उसी नक्षत्रकी घटी पलको ६० में कम करके दो जगह रखना, एक स्थानमें इष्ट घटीपल युक्त करना तो भुक्त घटी हो जाय, दूसरी जगह अगले नक्षत्रकी घटीपल युक्त करे तो भोग्य होता है।

दशाका उदाहरण।

प्रथम रविदशा वर्षादि भोग्य १।११।१५।१५।४२ इसके नीचे जन्मकालीन संवत् १९४३ यह वर्षमें स्पष्ट सूर्य ०।१३।१०।४२ इसको प्रथमदशा मासादि युक्त करके ११।२८।२६।२४ और संवत्में वर्ष युक्त करके १९४४ यह संवत्में ११।२८।२६।२४ यह स्पष्ट सूर्य रहते रविदशा पूर्ण होयके चन्द्रदशा प्रवेश भई, इसी रीतिसे सब दशा प्रवेश करना तथा अन्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा करना।

विंशोत्तरीदशाचक्रम् ।

०	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्र.
०	१ ११ १९ १९ ४२	१० ० ० ० ०	७ ० ० ० ०	१८ ० ० ० ०	१६ ० ० ० ०	१९ ० ० ० ०	१७ ० ० ० ०	७ ० ० ० ०	२० ० ० ० ०	व. मा. दि. घ. प.
१९ ४३	१९ ४४	१९ ५४	१९ ६१	२२ ७४	१९ ९५	२० १४	२० ३१	२० ३८	२० ५८	सं.
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.
० १३ १० ४२	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	रा. अं. क. वि.

सूर्यमध्येऽन्तर्दशाचक्रम्.									सूर्यमध्ये सूर्यस्तन्मध्ये विदशाचक्रम्.								
सू	चं	म.	रा	बृ	श.	बु.	के	शु.	सू	च	म.	रा.	बृ	श	बु	के	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	०	६	१४	१८	१२	६	६	०	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये विदशाचक्रम्.									रविमध्ये भौमस्तन्मध्ये विदशाचक्रम्.								
च.	म.	रा.	बृ	श	बु	के.	शु.	सू.	म	रा.	बृ	श.	बु.	के.	शु.	सू	च.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	२१	५४	४८	५७	२१	०	१८	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्ये राहुस्तन्मध्ये विंशाचक्रम्.									रविमध्ये गुरुस्तन्मध्ये विंशाचक्रम्.								
रा.	बु.	शा.	बृ.	क.	गु.	सू.	च.	म.	बृ.	शा.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	१	०	०	०	१
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	८	१२	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
२६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	२४	३६	२८	२८	०	२४	०	२८	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्ये शनिस्तन्मध्ये विंशाचक्रम्.									रविमध्ये बुधस्तन्मध्ये विंशाचक्रम्.								
शा	बु	च	गु	सू	च	म	रा	बृ	बु	क.	शु.	सू.	च	म.	रा.	बृ.	शा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	१	०	०	०	१	१	१
२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१८	१८
९	२७	५७	०	६	३०	५३	१८	३६	२१	२१	०	१८	३०	५१	५४	२८	२७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्ये केतुस्तन्मध्ये विंशाचक्रम्.									रविमध्ये भृगुस्तन्मध्ये विंशाचक्रम्.								
के.	शु.	सू.	च	म.	रा	बृ	शा	बु.	शु	सू	च.	मं	रा	बृ.	शा	बु.	के.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	२	०	१	०	१	१	१	१	०
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	०	१८	०	२१	२९	१८	२७	२१	२१
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

१०	९	६	४	७	४	०	८	६	०	०	१	१	१	१	१	१	०
०	०	२	०	०	०	०	०	०	२५	१५	१०	१०	१५	१२	१७	२०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

[illegible]																	
मं.	श.	[illegible]															
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	१	०	०	१	०	०	२	२	२५	२	१	०	०	१	१
१२	[illegible]	२८	[illegible]	[illegible]	१२	५	१०	१७	२१	११	३०	१६	१	०	२७	१०	१
०	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्ये गुरुस्तन्मध्य वि० च०									चन्द्रमध्य शनिस्तन्मध्य वि० च०								
चू	श.	बु	क	शु	सू	च.	म.	रा.	श	बु.	के.	शु.	सू	च	म	रा.	सू
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	-	२	[illegible]	१	०	२	३	२	१	३	०	१	१	२	२
४	१६	८	२८	२-	२५	१०	२८	१८	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्ये बुधस्तन्मध्य वि० च०									चन्द्रमध्ये केतुस्तन्मध्य त्रिदशा च०								
बु.	क.	शु.	सू	घ	म	रा	बृ.	श	के	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ	श	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	२	०	१	०	२	२	०	०	१	०	०	०	१	०	१	०
१२	२९	२५	२५	११	२९	१६	८	२०	१२	५०	१०	१७	१२	१०	२८	३	२९
१५	४५	३०	३०	३०	४५	३०	०	१५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० च०									चन्द्रमध्ये सूर्यस्तनमध्ये वि० च०								
शु.	सू.	चं	म.	रा.	बृ	श.	बु.	के	सू	च.	म.	रा	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	१	१	१	३	२	३	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौममध्ये रविस्तन्मध्ये त्रि० च०									भौममध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये त्रि०च०								
सू	च	मं	रा	बृ.	श	बु	क	शु	चं.	म	रा.	बृ	श.	बु	के.	शु.	सू
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	०	१	०
६	१०	७	८	१६	१९	१७	७	२१	१७	१२	१	२८	३	२२	१२	५	१०
१८	३०	५१	५४	४८	५७	२१	२१	०	३०	१५	३०	०	१५	४५	१२	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्येऽतर्दशाचक्रम्.									राहुमध्ये राहुस्तन्मध्य विदशा च.								
रा.	बृ	श	बु	के.	शु	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु	के.	शु	सू.	च.	म.
२	२	२	२	१	३	०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	४	४	५	४	१	५	१	२	१
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्य गुरुस्तन्मध्ये विदशाच.									राहुमध्ये शनिस्तन्मध्ये विदशाच								
बृ	श	बु	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	श.	बु	के.	शु.	सू	च	म.	रा.	बृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	४	१	४	१	२	१	४	५	४	१	५	१	२	१	५	४
२५	१६	२	२०	२४	१३	१०	२०	९	१२	२५	२१	२१	२१	२५	२१	३	१६
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	१४	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये बुधस्तन्मध्ये विदशाच.									राहुमध्ये केतुस्तन्मध्ये विदशाच.								
बु	के.	शु.	सू	च.	म	रा	बृ	श.	के	शु.	सू	चं	म	रा	बृ	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	४	४	४	०	२	०	१	०	१	१	१	१
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२४	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२१	२३
३६	३३	०	५४	३०	३३	४२	[illegible]	[illegible]	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये केतुस्तन्मध्ये त्रि० चक्र.									गुरुमध्ये शुक्रस्तन्मध्ये त्रि० चक्र.								
के.	शु.	सू	च	म	रा.	बृ	श	बु.	शु.	सू	चं	मं.	रा.	बृ	श.	बु	के
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	०	०	१	१	१	१	९	१	२	१	४	४	९	४	१
११	२६	१६	२०	११	२०	१४	२३	१७	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	२६	२६
३६	०	०	०	३६	२४	८	१२	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये रविस्तन्मध्ये त्रि० चक्रम्.									गुरुमध्ये चन्द्रस्त० त्रिंशांशचक्रम्.								
सू.	चं	मं.	रा.	बृ	श.	बु.	के	शु	च	मं.	रा	बृ	श	बु.	के.	शु.	सू
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	१	१	१	१	०	१	१	०	२	२	२	२	०	२	०
१४	२४	१६	१३	८	१९	१०	१६	१८	२०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
१४	०	४८	१२	२०	३१	४८	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये भौमस्तन्मध्ये त्रि० चक्रम्.									गुरुमध्ये राहुस्तन्मध्ये त्रि० चक्रम्.								
मं.	रा	बृ	श.	बु	के.	शु	सू	च.	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	०	१	०	०	४	३	४	४	१	४	१	२	१
१०	४८	२४	२३	१७	११	१६	१६	२८	९	२५	१०	२०	२०	२४	१०	१०	२०
३६	२४	४८	४२	३६	३६	०	४०	०	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्ये शनैर्दशाचक्रम्.									शनिमध्ये शनिस्तन्मध्ये त्रिंशांश.								
श.	बु	के	शु	र	च	म	रा	बृ	श	बु	के.	शु	र.	च	म	रा	बृ
३	२	१	३	०	१	१	२	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	९	९	२	६	१	३	२	९	४
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	२८	२९	१०	३०	९	१९	१०	२७	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शनिमध्ये बुधस्तन्मध्ये विदशाच०									शनिमध्ये केतुस्तन्मध्ये विदशाच०								
बु	के.	शु	सू.	च.	मं	रा.	बृ	श.	के.	शु.	सू	च	म.	रा.	बृ	श	बु.
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१	९	१	२	१	४	४	९	०	२	०	१	०	१	१	२	१

शनिमध्ये भृगुस्तन्मध्ये विदशाच०									शनिमध्ये रविस्त० विदशाचक्रम्								
शु	सू	च	म	रा.	बृ.	श	बु.	के	सू	चं	मं.	रा.	बृ.	श	बु	के.	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१	३	२	५	५	६	५	२	०	०	०	१	१	१	१	०	१
१०	२७	९	६	२१	२	०	११	६	१७	२८	११	२१	१५	२४	१८	११	२७
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	२७	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०									शनिमध्ये भौमस्तन्मध्ये वि० च०								
च.	म.	रा.	बृ	श	बु	के.	शु	सू	म	रा	बृ.	श	बु	के.	शु	र.	च.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	३	२	१	३	०	०	१	१	२	१	०	२	०	१
१७	३	२७	१६	०	२०	३	९	२८	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	१६	५१	१२	२०	३१	१६	३०	५७	१९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शनिमध्ये राहुस्तन्मध्ये वि० च०									शनिमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च०								
रा.	बृ	श	बु.	के	शु	सू	च	म.	बृ	श	बु.	के.	शु	सू	च.	मं.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	४	५	४	१	५	१	१	१	४	४	४	१	५	१	१	१	४
३	१६	१०	२९	२९	२१	२१	२९	२१	१	२४	९	२३	२	१७	१६	२३	१६
५४	४८	२७	५१	४०	०	२०	३०	५१	३६	२४	१२	१४	०	३६	०	१३	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० घ०									बुधमध्ये शनिस्तन्मध्ये वि० घ०								
बु.	श.	बृ.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	३	१	४	१	२	१	४	५	४	१	५	१	२	१	४	४
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	२५	१६	३१	३०	२७	४२	३१	२१	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतुमध्येऽन्तर्दशाक्रम.									केतुमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० घ०								
के.	शु.	र.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	२	४	७	४	०	११	१	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

केतुमध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० घ०									केतुमध्ये रविस्तन्मध्ये वि० घ०								
शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	२१	५	२४	३	१६	६	२९	२४	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० घ०									केतुमध्ये भौमस्तन्मध्ये वि० घ०								
च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	०	१	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये भौमान्तर्मध्ये वि० घ०									शुक्रमध्ये राहुरन्तर्मध्ये वि० घ०								
म	रा.	बृ	श	बु	के.	शु	सू	च.	रा.	बृ	श	बु	के.	शु	सू.	च	म.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	१	२	१	०	२	०	१	५	४	५	५	२	६	१	३	२
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये गुरुरन्तर्मध्ये वि० घ०									शुक्रमध्ये शनिरन्तर्मध्ये वि० घ०								
बृ.	श	बु	के.	शु	सू	च	मं.	रा	श.	बु	के.	शु	सू	च	मं.	रा.	बृ
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	५	४	१	५	१	२	१	४	६	५	२	६	१	३	२	५	५
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये बुधरन्तर्मध्ये वि० घ०									शुक्रमध्ये केतुरन्तर्मध्ये वि० घ०								
बु	के.	शु	सू	च	मं	रा.	बृ.	श	के.	शु	सू	च	मं	रा.	बृ	श	बु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	५	४	५	०	२	०	१	०	२	१	२	१
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

योगिनीदशाक्रम ।

जन्मनक्षत्र जो होय उसमें ३ अंक युक्त करके ८ से भाग देना । शेष अंक १। २। ३। ४। ५। ६। ७।० तक रहेगा तब क्रमसे मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा यह योगिनीके क्रम जानना और उनकी क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ यह वर्षसंख्या जानना और जन्मनक्षत्रके भुक्तभोग्यघटीप्रमाण अन्यवर्गादिक दशावर्षसंख्यासे घटीपलोंमें लिखे प्रमाण भुक्त और भोग्य दशा करना ।

लिखना । अनन्तर विंशोत्तरीदशा फलसहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फलसहित लिखना और योगिनीदशा अन्तर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोत्तरी दशा लिखना ।

कविवंशप्रशंसा ।

आदौ ब्रह्मा ततो दिग्द्विजनिकरभवा ब्राह्मणा गौडवर्या-
स्तद्भारद्वाजगोत्रे प्रथितगुणगणः सुन्दरो लालयुक्तः ॥
आसीत्तस्यापि पुत्रो प्रकटसमुदयावासनुर्लब्धकीर्ति
र्यच्छौशील्यादियुक्तं शुभगुणनिचयं भूरि लोका गृणन्ति ॥ १ ॥

भाषा—अब कविके वंशकी प्रशंसा कही जाती है स्रग्धराछन्दसे–पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दश प्रकारके ब्राह्मण भये, तिनमें गौड द्विजश्रेष्ठ भये, तिनके शुभ भारद्वाजगोत्रमें विख्यात गुणगणवान् सुन्दरलालजी भये और तिनके पुत्र जो प्रकटित भाग्योदयवाले और लब्धकीर्तिवान् जिनके सुशीलपन आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतसे लोग गान कर रहे हैं ॥ १ ॥

शिवो दयालुयुक् शिवः सहायवान् सुतावुभौ
तदीयपुत्रतां गतौ सुयुग्मकौ तु पण्डितौ ॥
महद्गरीयगौरवौ त्रिकालवाचकावुभौ
समापतुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिकं यशः ॥ २ ॥

भाषा—ऐसे शिवदयालजी शिवसहायजी दोनों पुत्र, तिनके पुत्र युग्मक जोडीवाले पण्डित प्रसिद्ध भये, जो महाभारी गौरववान् और त्रिकाल-वक्ता ज्योतिर्विद् जिन्होंने पट्टालयाधीश श्रीमन्नरेन्द्रसिंह महाराजके राज्यमें बहुत यश कीर्ति तथा महान् आजीवनोदय पाया ॥ २ ॥

दुर्गाप्रसादश्च तथा भवानीसहाय एतौ महदाप्तकामौ ॥
जनाभिरामौ नृपतिप्रधानौ ज्योतिर्विदावासतुरात्तमानौ ॥ ३ ॥

भाषा—सो दुर्गाप्रसाद और भवानीसहाय ये दोनों परिपूर्णकाम भये जो जनोंको अभिराम आनंद देनेवाला जो राज्यमें प्रधान मुख्य ज्योतिषी मान मान सन्मान अर्थात् भारी प्रतिष्ठित भये ॥ ३ ॥

अथो शिवसहायस्य सुतावेतौ महामती ॥
लक्ष्मीनारायणश्चाथ ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥ ४ ॥

भाषा–फिर तिन शिवसहायजीके महान् बुद्धिमान् लक्ष्मीनारायण और ज्योतिर्वित् जगदीशशर्मा पुत्र हैं ॥ ४ ॥

ज्योतिर्विज्जगदीशोऽसौ जगदीशप्रतोपदम् ॥
केशवायार्पयत्कृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥ ५ ॥

भाषा–ज्योतिर्विद् जगदीशप्रसाद शर्माने जगदीश (नारायण) को तुष्टि (प्रसन्नता) देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्य भाषासे विभूषित करके केशवभगवान्के अर्थ समर्पण किया अथवा केशवदैवज्ञवर्यकी पूजामें अर्पण किया यह भी श्लेष है ॥ ५ ॥

त्रिपञ्चाङ्केन्दुवर्षे सद्विक्रमीये नभस्सिते ॥
नृगिरोदाहृतिः पूर्णा पूर्णिमायां रवेर्दिने ॥ ६ ॥

भाषा–संवत् १९५३ श्रावण शुक्ल पूर्णिमा रविवारको शुभ भारतभूमिमण्डलान्तर्गत प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थ नगरसे पश्चिमकोणस्थ आर्चिक शैलतलवर्तिनन्दग्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्यायकुलोद्भव ज्योतिर्वित् जगदीशप्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण मनुष्य भाषासे विभूषित समाप्त भया सो सबको सदा सुखादि देवो ॥ ६ ॥

मङ्गलं लेखकानां च पाठकानां च मङ्गलम् ॥
मङ्गलं सर्वलोकानां भूयोभूयोऽस्तु मङ्गलम् ॥ ७ ॥
मङ्गलं भगवान् विष्णुर्मङ्गलं गरुडध्वजः ॥
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो मङ्गलायतनो हरिः ॥ ८ ॥

अब सूर्यसे लग्नसे इष्टकाल करनेकी रीति ।

अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो-
युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥ १ ॥

भाषा-स्पष्ट सूर्यमें अयनांश युक्त करके उसको राशि विना ३० अंशमें कम करके जो राशि ऊपर होय उसके प्रमाण स्वदेशीय लग्नमानसे गुणके भोग्य पल करना और लग्नमें अयनांश युक्त करके उसके ऊपर जो राशि होय उसके प्रमाणसे भुक्त पल करके फिर लग्नकी राशिसे सायन-सूर्यकी राशितक स्वदेशीय लग्नमानका ऐक्य करके उसमें भुक्त और भोग्य पल युक्त करके ६० से भाग देना तो इष्टकालघटीपल स्पष्ट होता है।

टिप्पण-जो सायन सूर्यकी राशिसे सायनलग्नकी राशितक स्वदेशीय लग्नका ऐक्य करे तो सूधा लग्न लेना और सायन लग्नकी राशिसे और सायन सूर्यकर राशितक लग्नका ऐक्य करे तो उलट लग्न लेना।

उदाहरण-स्पष्ट सूर्य ० । १३ । १० । ४२ इसमें अयनांशा २२ । ४४ । ३ युक्त करके १ । ५ । ५४ । ४५ इसको ३० अंशमें कम करके १ । २४ । ५ । १५ । इससे ऊपरके कहे प्रमाण भोग्य साधन किया तो १९५ अब लग्न ६ । ९ । ४२ । २६ इसमें अयनांशा २२ । ४४ । ३ युक्त करके ७।२।२६।२९ इससे भुक्त पल साधन किया तो २८, अब सायन सूर्य वृष राशिका है इसवास्ते मिथुन लग्नका ३००, कर्कका ३४६, सिंहका ३५५, कन्याका ३४८, तुलका ३४८ इनका ऐक्य १६९७ इसमें भुक्त भोग्य पल युक्त करी और इसको ६० का भाग दिया तो लब्ध ३२ शेष० यह पल पूर्वतुल्य इष्ट भया। इसी प्रमाणसे सूर्य लग्नसे इष्टकाल करना।

जो सायन सूर्य और सायन लग्न एक राशिमें होय तो इनका अंतर करके उसको सायन सूर्यके उदयसे गुणके ३० से भाग देना । जो भागाकार आवे सो पलात्मक अभीष्टकाल होता है। जो सायनसूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होय तो पूर्वप्रमाण साधन किया जो कला सो ६० में से कम करना तो इष्टकाल होता है।

शनेरष्टवर्गीकाः ३९.								लग्नस्याष्टवर्गीकाः ४८.							
श.	ल.	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	ल.	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
३	३	१	३	३	६	५	६	३	१	३	१	३	५	६	१
५	४	३	६	५	८	६	११	४	२	६	२	५	६	७	२
६	६	४	११	६	९	११	१२	८	४	१०	४	६	९	१२	४
११	९	७	०	१०	१०	१२	०	१०	७	११	७	९	११	०	७
०	१०	८	०	११	१२	०	०	११	८	०	८	१०	०	०	८
०	११	१०	०	१२	०	०	०	१२	९	०	९	११	०	०	९
०	०	११	०	०	०	०	०	०	१०	०	१०	१२	०	०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१२	०	११	०	०	०	११

अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.	आ.
म.	ध.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ	म.
श	ल.	ल.	२	३	४	ल.	भ.	पू.
रे.	च	१	ओ.	न.	औ.	५	ट.	उ.
उ	द	१२	रि.	पू.	म	६	प	ह.
पू	स.	११	अः	ज.	अं	७	र	चि.
श.	ग	ऐ.	१०	९	८	ए.	त.	स्वा.
ध	ख.	ल.	ज.	म.	य.	न.	अ.	वि.
इ.	श्र.	अ.	उ.	पू.	मू	ज्ये.	अ	ई

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ॥ विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्य: प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥ याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठा नवात्र चक्रे सुधिया विधेयाः ॥ स्वरर्क्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धभावाद्य मया निरुक्तम् ॥ २॥ भनो भवेदेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता ॥ राशौ च वेधे भवति विघ्नमेव जन्तुः कथं जीवति पञ्चविद्धे ॥ ३ ॥ भरणप्रकारो वृषभं च नन्दां भद्रां तकारं भवनं विशाखाम् । तुलां च विद्धेन्नलसंमुखस्थो महोग्रचक्रे गदितं स्वरज्ञैः ॥ ४ ॥ वकारमौकारमुकारदाक्षे स्वातीरकारं मिथुनं च कन्यामुत्तरांस्तिज्जन्मतकर्म च विद्धं मनसंमुखस्थो हि नभभोग्रः ॥५॥

कर्कं ककारं च हारं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारम् । अकारकं वेम्भमत्र विद्धेदलं नभोमंडलगो मृगस्यः ॥ ६ ॥ एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वर्क्षस्यचिन्तनीयः सुधीभिः ॥ दद्याद्वेधः सत्फलं सौम्यजातोऽन्यन्तं कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥ यस्मिन्नृक्षे संस्थितो वेधकर्ता पापः खेटः सोऽन्त्यभं याति यस्मिन् ॥ काले तस्मिन् मङ्गले पीडितानां भोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

॥ सूर्यकालानलचक्रम् ॥

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत् ॥ तदहं विशदं वक्ष्ये स्वस्त्यतिकरं परम् ॥ १ ॥ त्रिशूलकाभाः सरलाश्च तिस्रः [illegible] परिकल्पनीयाः ॥ रेखाद्वयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च [illegible] [illegible] ॥ २ ॥ त्रिशूलकोणान्तरगान्यरेखा तत्पयोः शृङ्खलना [illegible] ॥ [illegible] त्रिशूलस्य च दण्डमूलात्ताज्येन भान्यर्कभतोऽभिचिद ॥ ३ ॥ [illegible] यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि। [illegible]

वधश्च प्रतिबन्धनानि ॥ ४॥ शृङ्गद्वये रुक् च भवेद्धि भङ्गं शूलेषु मूलं परिकल्पनीयम् ॥ शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बुधामराणाम् ॥ ५ ॥ श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्वदे च वादे च रणे प्रयाणे ॥ प्रयत्नपूर्वं ननु चिन्तनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥ इति सूर्यकालानलचक्रम् ।

अथ चन्द्रकालानलचक्र ।
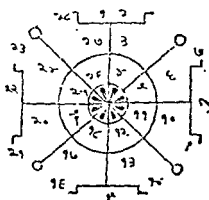
कर्काटकेच प्रविधाय वृत्तं तस्मिंश्च पूर्वापरयाम्यसौम्यैः ॥ वृत्ताद्बहिः संचलिते विधेये रेखात्रिशूलाश्च तदग्रकेषु ॥ १ ॥ कोणश्च रेखाद्वितियेन साध्या पूर्वत्रिशूले किल मध्यसंस्थम् ॥ चान्द्रं लिखेद्भं तदनुक्रमेण सव्येन धिष्ण्यानि बहिस्तन्दते ॥२॥ कालानलं चक्रमिदं हि चान्द्रं रणप्रयाणादिषु जन्मभं चेत् । त्रिशूलसंस्थं निधनाय नूनमंतर्बहिःस्थं त्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

श्रीरामचन्द्रस्य जन्मकुण्डली ।

दिमांशोर्भेऽङ्केऽब्जे सुरगुरुरिपौ राहुरखुजे-
ऽप्यविगो मन्दः पुण्ये शिखियुगुशनास्तेऽवनिसुतः ॥
रवौ स्वस्थे सौम्ये शिवभवनगे माघि मधुके
सिते मध्याह्नेऽभूद्रघुवरजनिर्निश्चगुरुदा ॥१ ॥

श्रीकृष्णचन्द्रस्य जन्मकुण्डली ।

भाद्रे मासि सितेतरे वसुतिथौ ब्राह्मे वृषेऽब्धौ विधौ
लग्नस्थे सशनौ गुरौ सहजगेऽम्बुस्थे रवौ सेन्दुजे ॥
राहौ पंचमगे भृगौ रिपुगते भौमे नृपस्थे ध्वजे
लाभे रात्रिदले बभूव कमलाधीशावतारो बुधे ॥ २ ॥

उभयोर्जन्मलग्ने ।
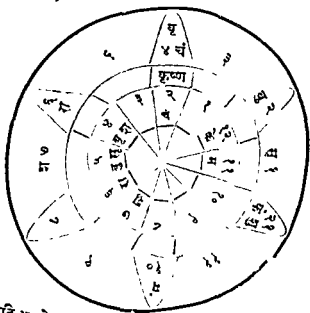
इति भाषोदाहरणसहितं केजरीजातकं समाप्तम् ।